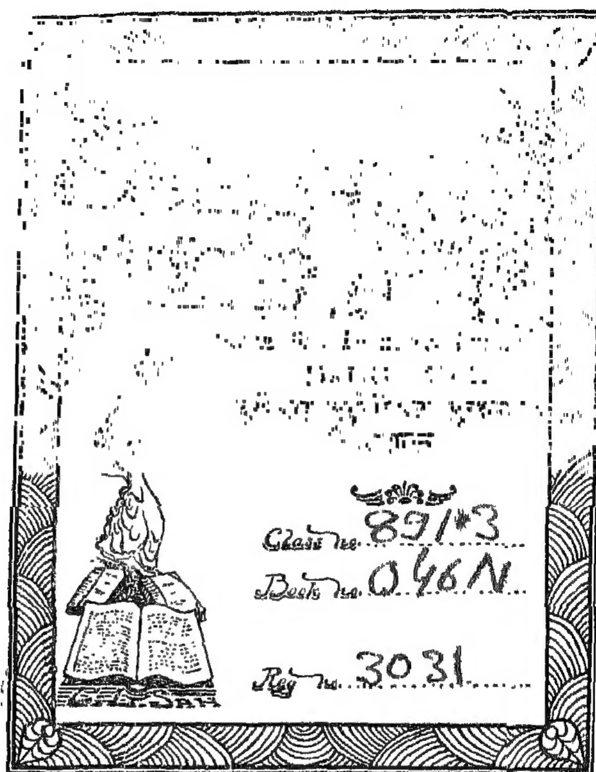

Class No. 891.3
Book No. O46N
Reg No. 3031

नया वसंत—परिचय

सोवियत अबखाज़ियन रिपब्लिक की ऊँची पहाड़ियों में साकेन नाम का गांव चील के घोंसले के समान बसा है। साकेन का इतना एकान्त में बसा रहना अविश्वसनीय है। इस पिछड़े हुए अधिकांशित पहाड़ के निवासी अब अपने भविष्य का निर्माण स्वयं कर रहे हैं। सोवियत ढंग का जीवन समस्त सोवियत राष्ट्र के साथ आगे बढ़ रहा है। वे सभ्यता और ज्ञान का उपार्जन कर रहे हैं। उनके जीवन का प्रत्येक दिन जीवन को अधिकाधिक धनी और पूर्ण बनाता जाता है।

सुविख्यात और योग्य अबखाज़ियन लेखक ज्यार्जी गुलिया की लेखन शैली बड़ी सुन्दर और आकर्षक है। उन्होंने काव्यपूर्ण, आकर्षक ढंग से अबखाज़िया के पुरातन जीवन और सोवियत जीवन में हुए परिवर्तन का अत्यन्त सुन्दर चित्र खींचा है।

ज्यार्जी गुलिया का जन्म सुखूमी में १९१३ में हुआ था। उसने इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त की थी पर जन्म से ही वह कलाकार था। वह अबखाज़िया के विख्यात जन कवि दिमित्री गुलिया का बेटा है। अपने कलापूर्ण कार्यों के कारण उसे १९४३ में अबखाज़ियन रिपब्लिक की ओर से 'आनरेरी आर्ट वर्कर' की उपाधि मिली थी। ज्यार्जी गुलिया की पहली कहानी १९३० में प्रकाशित हुई थी। उसके बाद से उन्होंने कई छोटे छोटे उपन्यास लिखे हैं। इनके लिखे हुए कई कहानी संग्रह भी प्रकाशित हो चुके हैं।

'नया वसंत' नामक इस उपन्यास को १९४८ में स्तालिन पुरस्कार दिया गया था।

नया वसन्त

ज्यार्जी गूलिया के *Springtime in Saken* का हिन्दी अनुवाद



अनुवादक

ओंकार शरद

प्रकाशक

मनोरम प्रकाशन संस्थान

इलाहाबाद–१

मूल्य २)

प्रकाशक—मनोरम प्रकाशन संस्थान, इलाहाबाद–१
मुद्रक—दि इलाहाबाद ब्लाक वर्क्स लि०, इलाहाबाद–३

श्री रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल को

—शरद

नया

वसन्त

(१)

साकेन में.........। लेकिन पहिले साकेन का परिचय दे दिया जाय तो अच्छा होगा। नकशे में ढूँढ़ने की आवश्यकता नहीं है। नकशे का मापदंड इस स्थान का परिचय देने के लिए बहुत छोटा साबित होगा। पर इससे साकेन-निवासियों को कोई परेशानी नहीं होती। हाँ, यदि आप को अबरबाजिया का मानचित्र मिल जाय तो आप साकेन को अवश्य ढूँढ़ निकालेंगे।

प्रकृति ने स्वयं ही इस सुन्दर और रम्य स्थान को दुनिया से छिपा रक्खा है। अन्त में काकेशियन पर्वतमाला है, पूरब में गौगो की ऊँची चोटियाँ हैं, पश्चिम में क्लीच की हिम-किरीटनी शृंखला है। साकेन इनके भीतर बन्द है। पर दक्षिण में......? दक्षिण से साकेन तक पहुँचने के लिये नौ दुर्गम दर्रों से होकर जाना पड़ता है और हरहराती हुई आठ पहाड़ी नदियां पार करनी पड़ती हैं। पिछले से अगला प्रवेशद्वार अधिक दुर्गम होता जाता

है। बाहर वालों के लिये तो साकेन परियों की कहानियों का गाँव बन गया है। लेकिन साकेन का गाँव फिर भी जीवित है, वास्तविक है और फूलता फलता है।

जिन्होंने काकेशस के पहाड़ों की सैर की है, वे क्लूखोर दर्रे के नाम से भी परिचित हैं। वे उस सड़क से भी परिचित हैं जो समुद्र तक जाती है। यह सड़क गौंद्रा और कोदर नदियों के किनारे जाती है। ये दोनों नदियां बड़ी भयानक हैं। गौंद्रा और कोदर के संगम पर आने वाली ठंढी पहाड़ी वायु की महक से भी ये परिचित होंगे। ये ठंढी हवायें साकेन से ही आती हैं।

साकेन का गाँव बहुत पुराना है। कहते हैं, लाखों वर्ष पहिले जब भूमंडल पर समुद्र तल ऊँचा होकर स्थल बनना शुरू हुआ था, तभी से साकेन आबाद हो चला था। किसी को यह ज्ञात नहीं है कि आदमी सब से पहिले साकेन में कब आये और कैसे आये? केवल यही निश्चित है कि साकेन की बस्ती बहुत पुरानी है।

लगभग चालीस वर्ष पहिले सुखूमी नगर-पालिका का एक सदस्य, जो तपेदिक का रोगी था, साकेन में शुद्ध वायु और बकरी का दूध सेवन करने के लिये आया था। इसे दोनों ही वस्तुयें बिना दाम और बहुतायत से मिल गईं। गाँवों का अपना तरीका होता है। गाँव वाले अतिथि-सत्कार का विशेष ध्यान रखते हैं। यह व्यक्ति कभी-कभी बहुत उदास और चिन्तित रहता था। ऐसे वक्त पर वह बातें बहुत कम किया करता था। कभी कभी वह रात भर न सो कर बैठा-बैठा लिखता रहता था। गाँव वालों से बातचीत के दौरान में वह जार और दूसरे राजकुमारों की बुराइयाँ करता था। उसकी इन बातों को सुनते-सुनते गाँव वालों के कान

पक गये थे। वह बड़ा रोबीला और अहङ्कारी व्यक्ति था और कदाचित् इसी का मूल्य भी चुका रहा था। गाँव में वह धीरे-धीरे प्रिय हो गया और गांव वाले उसके लिये भर सक सब-कुछ करने लगे। एक दिन यह व्यक्ति घूमते-घूमते किसी प्राचीन कब्रिस्तान तक पहुँच गया। अपनी इस खोज से वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि आदि-पुरुषों के यहाँ पर बसने का कोई विशेष कारण अवश्य रहा होगा। उसने अपने मेजबानों से इसका जिक्र किया। कानों कान, यह बात गाँव भर में फैल गई। साकेन के भोले-भाले ग्रामीण यह सुन कर और भी प्रसन्न हो गये कि उनकी लाल-मिट्टी में युगों से लोग बसते आये हैं।

किन्हीं कारणों से उस व्यक्ति की दिलचस्पी गाँव के पास की भूरी मिट्टी में बढ़ गई। उसने गाँव वालों से कहा कि इस भूरी मिट्टी को ले जाकर वे अपने खेतों में डालें। किसी ने भी उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। जब वह मर गया तो उसकी चीजों में एक पाण्डुलिपि मिली जिसका शीर्षक था—'साकेन में प्राकृतिक फासफोराइट।' यह पाण्डुलिपि गाँव के करीब-करीब हर व्यक्ति के हाथों में होकर अन्त में सिगरेट बनाने के काम में आई। केवल पहला पृष्ठ किसी ने अपनी झोपड़ी में दीवार पर चिपका दिया था, क्योंकि उसे उसकी लिखावट बड़ी सुन्दर लगी थी। उस झोपड़ी के एक छोटे लड़के ने उसमें जो कुछ लिखा था बार बार पढ़ कर कंठस्थ कर डाला था। उस बुड्ढे रोगी का आविष्कार अब उस लड़के के दिमाग में घर कर गया।

साकेन का इतिहास वहाँ का सबसे बुड्ढा व्यक्ति शांगेरी काबा था। उसकी आयु नब्बे वर्ष की थी। अपने इतने बड़े जीवन में उसने साकेन से बाहर केवल दो बार यात्रा की थी। एक बार

वह अपने घोड़े को खोजते हुए गया था और दूसरी बार अपने वंशजों में से एक का ब्याह तय करने। पहली यात्रा में वह अपना हाथ तोड़ कर लौटा, क्योंकि वह एक खड्ड में गिर पड़ा था और दूसरी बार एक चट्टान के गिर जाने से उसका घोड़ा दब गया था। तब से शांगेरी ने अपने कान पकड़ लिये थे कि अब वह साकेन के बाहर कदम नहीं रक्खेगा। उसके बाद शायद ही कोई साकेन-निवासी गाँव के बाहर गया हो और बाहर से आने वालों की संख्या तो और भी कम थी।

गाँवों की सरकारी फेहरिस्त में उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक साकेन का नाम अवश्य था, क्योंकि १८६० में लेफ्टीनेन्ट स्टूकोब को यहाँ का व्यवस्थापक बना कर भेजा गया था। उस व्यक्ति को जब यहाँ की हालत मालूम हुई और जब उसने महसूल के कर्मचारियों को भी नौ दर्रे और आठ नदियां पार कर टैक्स वसूलने के लिए उत्सुक नहीं देखा, तो उसने गाँवों की फेहरिस्त से साकेन का नाम-निशान मिटा देने का निश्चय कर डाला। फिर भी साकेन जीवित रहा, फूलता-फलता रहा। हाँ, सैलानियों के लिए साकेन पहुँचना और भी कठिन हो गया। थोड़े में साकेन का यही इतिहास है। आज भी यह मानना पड़ेगा कि साकेन को लेकर कोई लम्बी चौड़ी डींग नहीं मार सकता है।

हाँ, यदि आप मेरे गाँव में आयें तो आँखों को संतोष होगा। हर तरफ खुशहाली नजर आयेगी। बैलों से जुतने वाले हलों की संख्या कम होगी और आधुनिक ट्रैक्टरों की कहीं ज्यादा। सड़कों पर ट्रक दौड़ती हुई दिखाई देंगी। अधिकांश सामूहिक खेतों के पास अपनी ट्रक हैं। यह जिला धनी और सुखी है। पर इसी जिले में साकेन भी है। जिला कमेटी के कितने ही मंत्रियों

ने साकेन की समस्या सुलझाने का प्रयत्न किया है, लेकिन कभी कुछ कर नहीं पाये।

तब आप कहेंगे कि साकेन में क्या रक्खा है ? हमें किन्हीं दूसरे गाँवों की बातें करनी चाहिए। साकेन तो बहुत पिछड़ा हुआ और पहुँच के बाहर है, यह कहना तो आसान है। पर यदि साकेन मेरा अपना ही गाँव हो, तो ? दूसरे गाँवों के बारे में तो और लोग भी लिख सकते हैं, और फिर बिना किसी के लिखे हुए भी इन्हें सब जानते हैं। पर साकेन के बारे में यदि मैं न लिखूँगा तो उसकी महिमा का और कौन बखान करेगा ?

साकेन के रीति-रिवाज के अनुसार मुझे पहिले अपना परिचय देना चाहिए। मेरा जन्म..............। इसे याद करते ही शर्म से मेरा मुँह लाल हो जाता है। आदमी का जीवन उसके जन्म से ही आरम्भ होता है। लेकिन मैं कब पैदा हुआ था, यह मैं आज तक पता नहीं लगा सका हूँ। साकेन के बड़े-बूढ़ों की याददाश्त के अनुसार साकेन में रूस-जापान युद्ध की खबर पहुँचने के छः महीने बाद मेरा जन्म हुआ था। युद्ध के शुरू होने और खतम होने के समय का पता लगाना मुश्किल नहीं है, परन्तु साकेन में युद्ध शुरू होने की खबर कब पहुँची, यह कहना कठिन है। इस महत्वपूर्ण दिन का पता लगाने के लिए एक और तथ्य है। कहा जाता है कि मेरे जन्म के चार साल बाद एक बार बहुत ज्यादा बर्फ गिरी थी। यह १६११ के जाड़े में हुआ था। अब पता लग सकता है कि युद्ध शुरू होने की खबर साकेन में युद्ध शुरू होने के तीन वर्ष बाद पहुँची थी।

अन्य ग्रामीण बालकों की भाँति मेरा जीवन भी ढोर चराने से शुरू हुआ। प्रकृति से ही मैंने सब कुछ सीखा। सोवियत युग

आने के पहले मैंने सचमुच पुस्तकें देखी भी नहीं थीं। पहली बार मैंने जब पुस्तक देखी थी, मेरे चेहरे पर रेख आ गई थीं।

१६३३ में मैं एक बार साकेन आया। तब तक मैं चित्रकार बन चुका था। मेरे चित्रकार बनने की बात सुनकर सब लोग हँसी उड़ाते थे, पर जब मैंने बहुत से ग्रामीणों के चित्र बनाकर दिखलाये तो उनकी हँसी बन्द हो गई, वे आश्चर्य-चकित हो गये। यह प्रमाणित हो गया कि एक साकेन-निवासी किसी भी फोटोग्राफर का मुकाबला कर सकता है। उनके लिए यह एक जबरदस्त अन्वेषण था। मैंने १६४७ का जाड़ा और बसन्त साकेन में ही बिताया। तभी साकेन-निवासियों को मेरे दूसरे काम-धन्धों का पता लगा।

हाँ, यह कहानी मेरे अपने बारे में नहीं है, यह बसन्त के;—साकेन के बसन्त के बारे में है।

(२)

जिस दिन यह कहानी शुरू होती है, साकेन में मौसम बड़ा अच्छा था। मार्च का महीना खत्म हो रहा था और हवा दुंदुभी बजा कर कह रही थी कि बसन्त आने वाला है। जमीन से भाप निकल रही थी। झरनों और पोखरों पर हल्का-सा कुहरा भी दिखाई देता था।

पहाड़ी से बिल्कुल सटा हुआ एक छोटा-सा बंगला बना था। इस पर उसका नाम 'सिलवर-मीडो' लिखा था। ठीक इस बंगले के ऊपर काले बादल का एक टुकड़ा फैला था और निकलने के लिए रास्ता नहीं पा रहा था। ऊपर उठ कर यह टुकड़े-टुकड़े हो गया, पर थोड़ी ही देर में सब मिल कर फिर एक हो गए। हवा के साथ साथ बादल भी पूरब की ओर उड़े और साकेन नदी की घाटी में होकर चले। तभी नीला आसमान खुल गया और सूरज की किरणें पृथ्वी को गरम करने लगीं।

पर नदी की घाटी के छोर पर 'नटगली' बंगले के बीच के ऊपर तो बसन्त पूर्ण यौवन पर था। दोनों बंगलों के बीच केवल कुछ किलोमीटर का ही फासला था पर दोनों में कितना अंतर था! यहाँ पहुँचते ही लोगों का ध्यान झरनों और घनी झाड़ियों पर केन्द्रित हो जाता था। पृथ्वी की ओर अब लोग व्यवसायी की दृष्टि से देखने लगे थे और अंदाज लगाते थे कि जुताई शुरू करने का समय आ गया है या नहीं। कुत्ते बरामदों में पड़े पड़े ऊँघा करते और धूप लेते थे। जमीन घास उग आने से हरी भरी हो गई थी। जाड़ों में चिड़ियां गायब हो गई थीं पर अब इनका चह-चहाना फिर शुरू हो गया था। पेड़ों में कलियां प्रस्फुटित हो रही थीं। बसन्त की हलकी गर्मी पड़ने लग गई थी।

सूरज चाहे जितना भी चमके पर अप्रैल के महीने में किसी पहाड़ी झरने के किनारे बैठना बिलकुल सुखदायी नहीं है। जाड़े की चिलचिलाहट खत्म नहीं होती उल्टे गर्मी की भाँति सारे शरीर पर व्याप्त हो जाती है। जमीन पूरी तौर से गर्म नहीं हो पाती केवल धरातल पर कुछ सूख जाती है पर एक इंच भी खोदने से फरवरी की ही शीत आ जाती है।

झरने के किनारे, जिसका उपयोग दोनों ही बंगले वाले करते थे, केसो मीरबा बैठा हुआ था। वह लगभग तीस वर्ष का जवान था। वहाँ पर बैठा वह केवल समय काट रहा था। चरवाहों की बड़े किनारों वाली हैट उसके बगल में पड़ी थी। पास में ही एक मोटी लाठी भी रक्खी थी। उसके चुटीले पैरों को इससे बड़ी मदद मिलती थी। केसो एक खाकी पैंट पहिने था और उसे फौजियों की पेटी से कसे था। इसके रूखे फौजी जूतों को बकरे की चर्बी से मुलायम किया गया था।

झरने के चारों ओर पहाड़ियाँ घोड़े की नाल के रूप में बिखरी थीं। झरना इतना ही स्वच्छ था जितनी कि पहाड़ी हवा। झरना बहते हुये शीशे जैसा चमक रहा था। तेजी से धार के गिरने के कारण जगह जगह भंवरें बन जाती थीं। भंवरें बन बन कर धार के संग बहने भी लगती थीं। वह युवक भी उन्हीं को घूर रहा था।

इसी झरने के पास थोड़ी ही देर में दो व्यक्ति मिलने वाले थे। दोनों ही एक दूसरे से मिलने के लिये विशेष आतुर नहीं थे। वे एक दूसरे के शत्रु तो नहीं थे पर उन्हें मित्र भी नहीं कहा जा सकता था। वे एक दूसरे को थोड़ी घृणा करते थे और इसका कारण थी एक लड़की। वह भी झरने तक आने वाली थी। परेशानी यह थी कि निकोला उस लड़की के प्रति मोहित था और यह समझता था कि केसो मीरबा भी उस पर डोरे डाल रहा है। निकोला का ख्याल था कि अब उसकी उम्र इतनी हो गई है जब उसके घर में एक सुन्दर पत्नी अवश्य ही होनी चाहिये। जब उसकी आशा करीब करीब पूरी होने को आई तभी केसो 'दाल-भात में मूसरचन्द' बन कर कूद पड़ा। उसकी सारी योजनायें, अभिलापायें ताक पर धरी रह गईं। केसो के आने के पहिले उन दोनों में जितनी दोस्ती थी वह अभी खत्म नहीं हुई थी। दोनों एक दूसरे से छिप कर ईर्ष्या करते थे। पर एक कारण और भी था। निकोला यह भी समझता था कि केसो चेयरमैन के पद का भी अभिलापी था। यह चतुर युवक अन्त में गाँव की सोवियत का प्रधान हो जायगा। गाँव वालों की दृष्टि में निकोला की मर्यादा कम हो जायेगी। यह भविष्य उसे सुखद नहीं प्रतीत हो रहा था। केसो गाँव की सोवियत के कामों की टीका-टिप्पणी

किया करता था, और अपनी इन आलोचनाओं को छिपाने का भी प्रयत्न नहीं करता था।

जब दबे पाँव निकोला झाड़ियों को चीरता हुआ झरने के किनारे पहुँचा तो वह चाहता था कि केसो को चौंका दे, पर केसो उसे पहिले ही देख चुका था। अब आगे बढ़ कर उसे अभिवादन करने के अलावा और कोई चारा ही नहीं रह गया था। केसो ने भी अभिवादन का उत्तर देते हुये विशेष आनन्द का अनुभव नहीं किया।

निकोला कुछ भर्राती हुई आवाज में बोला, 'आज गर्मी कुछ अधिक है।'

वह अपने जीवन के तीसरे पन के शुरू में था। बदन से वह मोटा था। चेहरे पर चर्बी जमा होने लगी थी। दो बेचैन आँखें बाहर निकली पड़ती थीं। मुस्कराते समय श्वेत दांतों की दो पंक्तियाँ दिखाई देने लगती थीं और मुँह पर भोलापन छा जाता था।

एक बड़े रूमाल को पानी में भिगो कर निकोला ने गर्दन और मुँह पोंछ डाला।

उसने केसो को घूरते हुये प्रश्न किया, "यहाँ क्या कर रहे हो।' फिर झरने की ओर दृष्टि फेर कर, गर्दन झुका कर बोला, "मेरा ख्याल है ....।"

निकोला स्वयं जोरों से हँस पड़ा और फिर रूमाल को भिगो कर पोंछने लगा।, "यों ही, कुछ तो करना ही चाहिये था।"

केसो ने उत्तर दिया, "कुछ नहीं, वक्त काट रहा हूँ।" निकोला मुस्कराते हुये बोला, "क्या तुम समझते हो मैं यह देख नहीं रहा हूँ।"

केसो ने उसे पानी से खेलते हुये देखा। यह व्यक्ति, जो सदैव प्रसन्नचित्त और बेफिक्र रहता था, हमेशा दूसरों के लिये परेशानी का कारण ही बना रहता था।"वह निकोला के स्वस्थ, फूले गालों और उसके गठे हुये शरीर को देख कर चिढ़ा-चिढ़ा सा रहता था। केसो की राय में वह निकम्मा और काहिल था। निकोला के गालों की लाली, जब वह गांव के सोवियत के अध्यक्ष की तरह बैठता था, तो काफूर हो जाती थी। दफ्तर पहुँचते ही वह गम्भीर हो जाता था और उसका स्वाभिमान भी जाग उठता था। फिर भी वह थोड़ा परेशान ही दिखाई देता था। कदाचित् वह यह समझता था कि एक शिकारी के लिये दफ्तर की मेज उपयुक्त नहीं है। निकोला वास्तव में बहुत बढ़िया शिकारी था। जहाँ तक सरकारी काम का प्रश्न था, उसकी यही इच्छा रहती थी कि उसे अधिक परेशान न किया जाय और सारा काम अपने ढर्रे पर चलता रहे। जब गाँव वाले उससे गाँव के सम्बन्ध में प्रश्न करने आते तो वह एक ही उत्तर देता, 'शान्ति और व्यवस्था।' कदाचित् वह काहिल था, शायद वह अपने को उस पद के लिये अनुपयुक्त समझता था। कभी कभी ऐसा भी हो जाता है। हर एक व्यक्ति चेयरमैन के पद के लिये उपयुक्त ही तो नहीं होता।

कभी कभी वह अपने ही से प्रश्न करता था, "साकेन क्या है?" और स्वयं ही उत्तर भी देता था, "पहाड़ों में लाल मिट्टी का एक छोटा टुकड़ा '' ''''। भालू की मांद से ज्यादा अच्छा भी नहीं ''''''''।" शायद यही कारण उसके निराशावादी होने का भी था। बाहर से आने वाले यात्री तो गाँव की सोवियत के दफ्तर में पहुँचते ही यह ताड़ लेते थे। चेयरमैन का गम्भीर चेहरा, टूटी हुई खिड़कियाँ, टूटे-फूटे दरवाजे ''''''''''''।

निकोला बहुधा यह भी कहता था कि उसने अपने समय में बारूद का भी प्रयोग किया किया है। दो वर्ष तक वह मोर्चे पर था। बन्दूक हमेशा उसके कन्धों पर रहती थी। जब युद्ध समाप्त हुआ तो निकोला गाँव वापस आया और शीघ्र ही गाँव की सोवियत का अध्यक्ष चुन लिया गया। वह साफ साफ कहता था कि मेरे बिल्लों और बैजों से गाँव वाले अत्यन्त प्रभावित हो गये थे। दरअसल बात यह थी कि उसे जंगल और जंगल में रहने वाले ही बहुत अच्छे लगते थे—वह जन्म से ही शिकारी था। गाँव की सोवियत का चेयरमैन वह अब तक बना हुआ था, गाँव वालों ने उसके विरुद्ध कोई कठोर कार्यवाही नहीं की थी, इसका कारण केवल इतना था कि उसके सहयोगी बहुत जम कर काम करने वाले थे। वास्तव में वही सब काम करते थे और चेयरमैन को भी अपने साथ घसीटते चलते थे।

निकोला की लापरवाही से सभी परेशान रहते थे, विशेषकर केसो। पर जब उससे सवाल-जवाब किया जाता था, वह किसी न किसी प्रकार सफ़ाई दे देता था।

बातचीत करने के लिए कोई अन्य विषय न मिलने पर केसो ने शिकार की ही बात छेड़ दी। उसने कहा, "किसी अच्छे शिकार के लिये चलना चाहिये।"

निकोला ने कहा, "अच्छे शिकार के लिये? देख नहीं रहे हो कि चीलें उड़ रही हैं। नहीं, अभी यहाँ जंगल में कुछ भी नहीं किया जा सकता है।"

निकोला हाथों पर सिर टेक कर बैठ गया। बात बढ़ नहीं पाई। केसो ने अपने हाथ में बंधी घड़ी देखी। यह उसके पास मोर्चे पर जाने की बची हुई स्मृति थी।

निकोला ने प्रश्न किया, "जल्दी में हो, या किसी की प्रतीक्षा कर रहे हो।"

केसो ने प्रश्न किया, "तुमने यह कैसे समझा ?"

निकोला ने फिर पूछा, "क्या मैं ठीक था ?"

इस सवाल जवाब से केसो रुष्ट हो गया। उसने एकाएक उठ कर अपनी पेटी ढीली की।

निकोला ने कहा, "सुनो, यदि तुम किसी लड़की की प्रतीक्षा कर रहे हो तो मैं चला जाता हूँ।"

केसो झेंप गया। यह इशारा ठीक निशाने पर बैठा था। वह खीज उठा। उसने अपनी मुद्रा गम्भीर कर ली।

निकोला ने हँस कर कहा, "अच्छा मैं केवल मज़ाक कर रहा था।" उसने रूमाल निकाल कर मुंह पोंछा और बोला, "केसो, परेशान मत हो, हम सब मनुष्य ही तो हैं।"

पर वह केसो की ओर उतनी तेज़ दृष्टि से क्यों घूर रहा था, वह चला ही क्यों नहीं गया ?

सवेरे से केसो प्रसन्न था पर अब उसकी मुद्रा ऐसी हो गई जैसे आकाश में काले-बादल छा गये हों। उसके चेहरे से और दिल की तेज़ धड़कन से उसकी परेशानी साफ़ जाहिर होने लग गई।

केसो बोला, "यहाँ कोई भी आ सकता है। तुम यहाँ किसी को पानी लेने के लिये आने से रोक तो लगा नहीं सकते हो।"

निकोला हँस पड़ा और बोला, "तुम रोक नहीं लगा सकते ! तुम रोक नहीं लगा सकते ! ह ! ह ! ह !" फिर रूमाल से मुंह पोंछते हुये कहा, "अच्छा भाई, मैं जा रहा हूँ।"

इसी समय झाड़ियां हिलीं, किसी के पदचाप सुनाई दिये और एक लड़की झरने की ओर आती हुई दिखाई पड़ी।

कामा (यही इस लड़की का नाम था) भौंचक्की हो कर रुक गई। एक की जगह दो आदमियों को खड़ा देख कर वह घबरा गई। दुनिया के दूसरे हिस्सों की ही तरह साकेन में भी लड़कियों में चतुराई पर्याप्त मात्रा में मिलती थी।

अपने ऊपर पड़ती हुई दोनों की दृष्टियों को पूर्णतया अनुभव करती हुई कामा धीरे धीरे झरने तक आई। लापरवाही के साथ उसने सिर पर बँधा कपड़ा खिसका कर मिट्टी के घड़े को पहिले से अधिक सुविधा से पकड़ लिया। उसकी आँखें झुकी हुई और पलकें गिरी हुई थीं।

आन्तरिक प्रेरणा कामा से कह रही थी, "रुक जाओ। आगे खतरा है।" यह उसी की चेतावनी थी। खतरा सामने लटक रहा था। बसन्त के दिनों में यह स्थान प्रेमियों का क्रीड़ास्थल हो जाता था। इसी स्थान पर प्रेमी अपनी प्रेयसी से मिलते थे और बहुधा यह जगह प्रतिद्वन्द्वियों के झगड़े का भी स्थान बन जाती थी (कारण यह कि साकेन में ईर्ष्यालु व्यक्तियों की कोई कमी तो थी नहीं)।

केसो उठ खड़ा हुआ। निकोला की मुद्रा भी शान्त न थी। इसी से कामा ने सोचा कि दोनों आदमी झगड़ रहे थे।

निकोला चिल्लाया, "तुम्हें इसके बारे में क्या कहना है ? जैसे योजना पहिले ही से बनी रही हो।"

कामा ने शैतानी-भरे स्वर में कहा, "तो क्या हुआ ?"

केसो खामोश रहा।

वह बोला, "निकोला का ख्याल है कि हम लोगों ने मिलने की योजना बना रक्खी थी।"

कामा फिर बोली, "तो क्या हुआ, यदि हमने योजना बना भी रक्खी थी। मुझसे मिलने में किसी को शर्म तो नहीं होनी चाहिये।"

निकोला ने कहा, "शायद केसो ऐसा ही सोचता है।"

केसो ने कहा, "मैं! कैसे?"

निकोला ने उत्तर दिया, "मैं क्या जानूं।" फिर अपनी रूमाल पैंट की जेब में रखते हुये कहा, "आह, जवानी! मैं देख रहा हूँ कि तुम दोनों क्या चाहते हो। अच्छा केसो, मजाक खत्म हुआ। पर काम तो काम ही है। कल सोवियत में मिलना, कुछ आवश्यक बातें करनी हैं। बसन्त ऋतु आ गई है। समझे ·····।"

पहाड़ी पर चढ़ते हुये उसने मुड़ कर कहा, "समझ गये न? बसन्त ········ ···।"

इतना कह कर वह झाड़ियों में ऐसे घुसा जैसे तैराक नदी में कूदता हो।

(३)

अब तो ऐसा लगता था मानों केसो और कामा एक कमरे में अकेले हों और दरवाजा अन्दर से बन्द हो। वे फौरन बात नहीं शुरू कर सके। ऐसे मौकों पर ऐसा ही होता है।

कामा ने घड़ा जमीन पर रख दिया और बालू से मांजने लगी।

केसो छड़ी की मदद से बालू में तस्वीरें बनाने लगा।

कामा ने उसकी तरफ देखे बगैर कहा, "तब तुम कितने परेशान दिख रहे थे।"

केसो ने पूछा, "मैं?"

कामा, "हाँ, तुम।"

केसो, "मैं परेशान क्यों होने लगा।"

कामा, "मुझे क्या मालूम। शायद मेरे कारण तुम शर्माते हो।"

केसो, "कामा !" वह उसकी ओर आगे बढ़ा ।

कामा बोली, "नज़दीक मत आओ । कहीं वह झांक न रहा हो ?"

केसो गम्भीर हो गया । कामा का मन भी भर गया । वह उसके पास बैठ गई और उसके हाथ अपने हाथों में ले लिये ।

कामा ने प्रश्न किया, "क्या सोंच रहे हो ?"

उसने उसका हाथ हिलाया और आंखों में आंखें डाल कर देखने लगी । वह उसकी चुलबुलाहट भरी आँखें देख रहा था पर कोई उत्तर नहीं देते बन रहा था ।

वह बोला, "शायद वह तुमको प्यार करता है ।"

कामा ने अपनी बाहें उसके गले में डाल दी और उसके कानों के पास मुंह ले जा कर बोली, "पर मैं तो तुमसे प्रेम करती हूँ ।"

केसो ने कहा, "यह साफ है, वह तुमको प्यार करता है ।"

कामा बोली, "प्यार करने का हक है तो हर एक को है ।"

केसो ने कहा, "शायद उसे आशा के लिये कारण प्राप्त हैं ।"

कामा बोली, "बुद्धू लड़के ! उसे भूल जाओ । ओफ ! वह शैतान जैसा ईर्ष्यालु है ।"

वह 'शैतान' भी थोड़ी दूर पर बैठा सिर ठोंक रहा था । पर वह इस अवस्था में निकले तो कैसे ?

एक समय वह भी था जब साकेन में रहने वाले, स्त्रियों को लेकर एक दूसरे से ईर्ष्या करने के लिये मशहूर थे । लेकिन वह समय बीत चुका था । अब तो साकेन में एक स्कूल था, एक अध्यापक था और एक डाक्टर और एक जानवरों का अस्पताल था । कभी कभी अखबार भी आ जाते थे । यही कारण था कि

साकेन में रहने वाले भी अपने को बदल रहे थे। साकेन-निवासियों ने देखा कि पुरुष अपनी प्रेयसियों को प्रसन्न रखने का प्रयत्न करते थे। औरतें भी पहिले से अधिक चतुर हो गई थीं और विवाह के सम्बन्ध में अपना अलग दृष्टि कोण बनाने लगी थीं। साकेन के पुरुष न चाहते हुये भी अब अपने प्रतिद्वन्दियों को नजरन्दाज करते थे। जो बड़े थे, अपने को असली साकेनियन समझते थे, जो ओक के वृक्ष के समान साकेन की मिट्टी में जमे हुये थे, नये नये दृष्टिकोण और तौर-तरीके 'देख कर दांतों तले अंगुली दबाते थे कभी-कभी कोई अपने को परम्पराओं का ठेकेदार घोषित कर पुराने रीति-रिवाजों को कायम रखने का प्रयत्न भी करता था। पर उसे अन्त में दुखी होकर चुप ही रह जाना पड़ता था। वह बुद्धू बन कर रह जाता था और गाँव का जीवन कदम-कदम आगे बढ़ता जाता था। बहुत से साकेनियन इस परिवर्तन को बड़ी मुश्किलों अपना पाते थे। दूर जाने की आवश्यकता नहीं। केसो स्वयं ऐसा ही था। वह जानता था कि वह ठीक राह पर नहीं है पर वह मानता कभी नहीं था। अतः केसो ने बहाना कर दिया कि उसका पैर दर्द कर रहा है।

कामा ने प्रश्न किया, "क्या नई चोट लग गई है?"

केसो ने उत्तर दिया, "नहीं, पुरानी ही में दर्द होता है।"

कामा ने घड़ा उठा कर फिर साफ करना शुरू कर दिया पर केसो से बराबर बातें करती रही।

वह बोली, "चाहे चोट लगे, चाहे दर्द करे, एक ही बात है। पैरों की दवा-दारू होनी चाहिये। इसके कारण तुम्हें जाड़े भर घर बैठना पड़ा और आगे भी ऐसे ही दुखता रहेगा।"

केसो बोला, "मैं तुम्हारे उस डाक्टर के पास तो कभी नहीं

जाऊँगा। वह कुछ नहीं समझता। केवल शराब पीना जानता है। फौज में हमारा डाक्टर कितना अच्छा था। केवल डाक्टर ही नहीं था, प्रोफेसर था। यह सच है कि वह भी शराब पीना पसन्द करता था, पर उसका मस्तिष्क कितना तेज था। कितना चतुर था वह ?"

कामा ने पूछा, "वह चतुर डाक्टर अब कहाँ है ? हमेशा का शराबी !"

केसो ने उत्तर दिया, 'लवोव के समीप एक नदी में डूब गया......।"

दोनों चुप हो गये।

कामा ने कहा, "अपने पैरों की फिक्र करो नहीं लगड़े हो जाओगे।"

केसो ने प्रश्न किया, "तो प्यार करना छोड़ दोगी ?"

घड़े को पानी में डुबाते हुये बोली, "मैं व्यर्थ की बकवास नहीं करती। अपने पैर की फिक्र करो। चेयरमैन की बात भूल गये क्या ? बसन्त ऋतु दरवाजे पर खड़ी है।"

केसो ने खुश हो कर पैर फैला लिये।

वह बोला, "बसन्त का आगमन पहिले मुझे ही मालूम हुआ था, तुम्हारे चेयरमैन को नहीं। बसन्त में मेरे पास एक ऐसी चीज है जिसे पाकर तुम खुश हो उठोगी।"

कामा का जी धुक धुक करने लगा। उसका इशारा किस तरफ था ?

उसने कहा, "मालूम हो गया। तुम बारूद तैय्यार करने की सोंच रहे हो।"

केसो बोला, "बारूद की क्या जरूरत, जब हमारे पास उससे भी तेज विस्फोटक पदार्थ है। मेरा तो सब कुछ मिट्टी है।"

कामा ने एक मुट्ठी मिट्टी उसके पैरों के पास फेंकते हुये पूछा, "तुम्हारा मतलब इससे है।"

केसो ने प्रश्न किया, "क्या यह मिट्टी तुम्हें प्यारी नहीं है ?"

एक गीत की दो-एक लड़ियाँ गुनगुना कर उसने कामा से प्रश्न किया, "तुम जादू देखना चाहोगी ?"

उसने केसो से कहा, "तुम्हीं ने तो एक बार बताया था कि जादू वादू कुछ नहीं होता। स्कूल में भी यही कहते हैं।"

केसो ने असन्तोष प्रकट किया और कहा, "मेरे प्रश्न का उत्तर दो।"

कामा ने फिर प्रश्न किया, "तुम क्या करने वाले हो ?"

केसो ने कहा, मैं ! अच्छा सुनो। चेयरमैन को तो बसन्त के बारे में कहना है, पर मेरे पास भी कहने के लिये बहुत कुछ है। यदि मैं एक हेक्टर जमीन में ५०० पौंड मक्का पैदा करवा दूँ तो बताओ क्या पुरस्कार दोगी ?"

कामा ने कुछ हतोत्साह होते हुये कहा, "अच्छा, यह बात है ? पर ५०० पौंड की बात करने से क्या लाभ जब हम सौ पौंड भी एक हेक्टर में नहीं उगा सकते ?"

केसो बोला, "यही तो जादू होगा।"

कामा, "मैं तुम्हारे.साथ जादू जैसी व्यर्थ की चीज के बारे में बातें कर, समय नहीं बरबाद कर सकती।"

केसो, "क्या तुमको याद है......। नहीं, कैसे याद रह सकता है। तुम बहुत छोटी थीं......। लोगों का कहना है कि कुछ दिन

पहिले यहाँ एक बुड्ढा रोगी रहता था। वह मर गया। मुझे याद है कि वह कागज के एक टुकड़े पर क्या लिख कर छोड़ गया था। वह कागज मेरे बिस्तर के पास दीवार पर चिपका हुआ था। उसने उस पहाड़ी (हाथ से इशारा करते हुये) के बारे में लिखा था। 'मर्सो क्लिफ' को तो तुम जानती हो, न? हमारे घर के पिछवाड़े ही तो है। मेरे लड़ाई पर जाने से पहिले लोग इसके बारे में बातें किया करते थे। अच्छा रुको और देखो......।"

कामा ने घड़ा उठा लिये। उसे वह भारी लग रहा था। केसो ने यह देखकर मदद करने के लिये हाथ आगे बढ़ाया।

कामा बोली, "मैं स्वयं ही ले जाऊँगी। मेरे साथ साथ मत आओ। कोई देख लेगा।"

केसो झरने के समीप वापस चला गया। उसे कामा के पद-चाप सुनाई दे रहे थे। उसने कामा की रूमाल हवा में फरफराते देखा। केसो फिर अकेला हो गया। विचार मग्न हो कर वह पानी को देखने लगा। पानी में उसकी आकृति साफ दिख रही थी। उसका चिन्तित चेहरा, तनी हुई भौंहें और दबे हुये ओंठ...। मानों वह किसी प्रश्न का उत्तर ढूंढ़ रहा हो।

(४)

उसी दिन गाँव को आने वाली सड़क पर एक आदमी आता हुआ दिखाई पड़ा। वह ऐसा दिखाई पड़ रहा था कि उसकी ओर आकर्षित हुये बिना कोई रह नहीं सकता था। वह फौजी पैजामा और रूई का वास्कट पहिने था। अपने फौजी कोट को सिर पर इस प्रकार रक्खे था जिससे वह काकेशियन हैट मालूम पड़ रहा था। पैरों में भारी बूट पहिने था, जो उसकी नाप से बड़ा अवश्य रहा होगा। उसके पाजामे मिट्टी में सने हुये थे और जूता भींगा हुआ था। हर कदम पर फच-फच की आवाज होती थी और वह व्यक्ति खीझ उठता था।

सड़क के दाहिने और बायें ओर चहारदीवारी थी जो समय और मौसम के प्रभाव से लगभग ढह चुकी थी। सड़क के किनारे पर ही एक छोटा बँगला दृष्टिगोचर हुआ। उसी की ओर यात्री के कदम उठ गये।

उस मकान के नजदीक पहुँच कर (वह गाँव की सहकारी दूकान थी) उस अजनबी ने दरवाजा खटखटा कर, गाते हुये पूछा, "यह कौन सड़क है ? यह किसका मकान है ?"

वह काफी जोर से बोला था कि दूकान में आवाज पहुँच गई। साकेन के लिये यह साधारण बात नहीं थी और उसकी ओर लोगों का ध्यान तुरंत ही आकर्षित हुआ। बहुत से आदमी बाहर निकल कर देखने लगे।

एक ने पूछा, "उसके सिर पर यह साफा कैसा है ?"

दूसरे ने उत्तर दिया, "जैसे अभी अभी आसमान से गिरा हो ?"

अहामुर दूकान का मैनेजर था। वह स्वयं भी हकबका गया था पर उसने किसी के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया था। उसका आश्चर्य उसकी लम्बी साँसों में परिणत हो गया और वह करीब-करीब हाँफने लगा। उसकी भौंहें तन कर, उसके गंजे सिर तक पहुँच रही थीं और उसकी बड़ी मूछों ने उसकी आकृति को और भी भयानक बना दिया। आगन्तुक बिना किसी परेशानी और दुविधा के गाते हुये आगे बढ़ता गया।

अहामुर बोला, "मैदान से पहिला आदमी आया है।"

दूसरे ने कहा, "मालूम देता है सड़क खुल गई है।"

तीसरे ने कहा, "अभी पता लग जायेगा।"

यात्री सीधे दूकान में आया। उसने अभिवादन किया, "साकेनियन जिन्दाबाद!"

साकेनियन परेशान हो गये।

यात्री ने अपना बोलना जारी रक्खा, "आराम से पूरी बातें करेंगे।" अपने सिर को एक झटका देकर, उसने कोट को नीचे

गिरा दिया। दूसरे ही क्षण अडामुर की तोंद में हल्का धक्का लगा। इस प्रकार से अभिवादन करने से यह पता लग गया कि वह व्यक्ति कहां से आया था। यह राशित डोआ था, जिसके बारे में यह आम धारणा हो चली थी कि वह युद्ध में मारा गया था।

सब एक स्वर में चिल्ला उठे, 'राशित'। पुराने मित्रों ने राशित को लिपटा लिया। फिर लोगों ने उसे हर तरफ से देखा, उसकी परीक्षा-सी कर डाली और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि वह वास्तव में राशित ही है।

६ साल की अनुपस्थिति में राशित में बहुत थोड़ा परिवर्तन हुआ था। उसका चेहरा थोड़ा काला और दुबला हो गया था जिसके फलस्वरूप उसकी नाक आकार से कुछ बड़ी दिखाई देने लगी थी। उसके माथे पर लम्बा-सा दाग था—किसी बड़े घाव का रहा होगा।

पहिले तो राशित को पुराने मित्रों के बीच धक्के खाने पड़े पर बाद में वह कमरे में लकड़ी के बक्स के सहारे बैठ गया। बाकी लोग भी उसे घेर कर बैठ गये।

राशित ने प्रश्न किया, "गाँव में सब लोग तो अच्छे हैं, न? साकेन तो पहिले ही जैसा है न?"

उनमें से एक बोला, "क्या तुम विश्वास करोगे, वह एक इंच भी नहीं बदला है?"

राशित, "बहुत ठीक। और फौजी टुकड़ी का क्या हाल है?"

उनमें से एक, "मिट्टी खोद रही है।"

इतनी इत्तिला काफ़ी थी। उसने और प्रश्न नहीं किये। मौका देखकर अडामुर ने एक गिलास लाल शराब उसे पीने के लिये दिया।

उसने भाषण देने की मुद्रा में कहा, "ऐन्टन, मेहमानों की खातिर पियो।" हर एक ने करीब करीब तीन-तीन गिलास पिया।

सबों ने पूछा, "राशित, तुम इतने दिन कहाँ रहे, क्या करते रहे?"

राशित ने धीरे धीरे अपने ६ वर्षों का हाल सविस्तार कह सुनाया।

राशित ने बताया, "उस झगड़े के बाद मैं शहर चला गया। वहाँ एक जगह नौकरी कर ली और जूते बनाना सीखा। तभी लड़ाई छिड़ गई, फौज में चला गया......। मोर्चे पर भेद दिया गया......। पहिले कारपेथियनों से मिला...... पर हर जगह बारूद ही का साथ रहा।"

अडामुर ने गिलास फिर भरते हुये कहा, "खुदा का शुक्र है कि तुम लौट तो आये। हम सबको तुम्हारा वियोग अखर रहा था। हम लोग तो समझने लगे थे कि तुम हमेशा के लिये चले गये। लड़कियों को तो सब से ज्यादा अखरा था। वे बहुत प्रसन्न होंगी क्योंकि तुम वापस आ गये हो।"

ऐन्टन ने दो तीन अस्फुट शब्द कहे और गिलास खाली कर दिया।

राशित ने पूछा, "मेरे सभी मित्र जीवित हैं और अच्छे हैं?"

अडामुर ने बीच में टोक कर पूछा, "किसके बारे में जानना चाहते हो।"

राशित, "निकोला कैसा है?"

अडामुर, "जीवित है। पर शकार छूट गया है। गाँव की सोवियत का प्रधान है।"

राशित, "और शागेरी?"

अडामुर, "उसके मरने की खबर अभी दस बरस और नहीं सुनोगे।"

राशित, "क्या इतना समय ज्यादा नहीं होता ?"

अडामुर, "वह तो यही समझता है।"

राशित, "और मीरा ?"

अडामुर, "यहीं है।"

राशित, "उसकी लड़की ?"

अडामुर, "पहिले ही जैसी खुशदिल।"

राशित, "केसो ?"

अडामुर, "वापस आ गया है। जाड़े भर पड़ा रहा। पैरों में कोई खराबी आ गई है। दिमाग भी कुछ खराब हो गया है।"

शराब का एक दौर और चला।

राशित ने प्रश्न किया, "दिमाग खराब हो गया है या बोदा हो गया है ?"

अडामुर, "हाँ पर कैसे ? हर चीज की टीका-टिप्पणी करता है......। अपने को मालूम नहीं क्या समझता है। हमारी जमीन पसन्द नहीं है......। वह कहता है कि पैदावार बहुत कम है......। अपने को बहुत होशियार बनता है।"

राशित, "ठीक है। स्कूल के अध्यापक कैसे हैं ?"

अडामुर, "अब ज्यादा हो गये हैं।"

राशित, "और डाक्टर ?"

अडामुर, "एक नया आया है। हर एक के लिये सब कुछ करने को तैय्यार रहता है ?"

राशित, "बहुत बढ़िया। और तराश, ठीक तो है, न ?"

अडामुर बोला, "यह मैं नहीं जानता।" एक केला तोड़ कर

उसने मुँह में डाल लिया। उसको खा कर फिर बोला, "मुझे ठीक नहीं मालूम, पिछले कुछ साल वह सामूहिक-खेतों का चेयरमैन था। काम तो अच्छा ही किया था। फिर बीमार पड़ गया। तपेदिक हो गया था। पिछली गर्मियों में लोगों ने उसे भेज दिया......।'

राशित, "किसने भेज दिया ?"

अडामुर, "क्यों ? सामूहिक खेत वालों ने। हाँ, उस जगह का नाम देखो, भूल रहा हूँ। हाँ याद आ गया। उसे गुलरिप्श भेजा गया है।"

राशित, "किसके खर्च पर ? क्या सामूहिक खेत खर्च बरदाश्त करेगा ?"

अडामुर, "उनका कहना है कि तराश भला आदमी है और भले आदमियों के लिये धन की कभी कमी नहीं रही है। अब यही कायदा है, मेरे भाई तुम्हें याद नहीं कि लड़ाई के पहिले उन्होंने कितने ही व्यक्तियों को स्वास्थ्यलाभ, शिक्षा आदि प्राप्त करने के लिये भेजा था। अब उनका कहना है कि पहले जैसे ही हम फिर सब पुनर्गठित कर लेंगे, हम उन्हें पहले की ही तरह भेजने लगेंगे।"

राशित, "तो क्या आज कल कोई भी अध्यक्ष नहीं है ? उसकी जगह पर कौन बैठता है ?"

ऐन्टन बोला. "कान्सटेन्टिन स्थानापन्न अध्यक्ष है।"

राशित ने याद करने की कोशिश की, "कान्सटेन्टिन, कौन ?"

ऐन्टन, "अरे, वही, तीसरी टीम का मुखिया। सामूहिक-कृषि बोर्ड का सदस्य ''' '''''' पार्टी का मंत्री।"

राशित ने कहा, "याद आ गया।" पर वह प्रसन्न नहीं था।

उसके उपयुक्त स्थान पर दूसरे लोग बैठे थे। पर अपने भावों को छिपाते हुये वह बोला, "और सालूमन लुहार के क्या हाल हैं?"

अडामुर ने अपना हाथ कम्बल में पोंछा। ऐन्टन ने मुँह चलाना बन्द कर दिया। सब तरफ सन्नाटा छा गया।

अडामुर ने कहा, "मारा गया ...... रोस्टोव के नजदीक।"

राशित, "बड़ा दुख हुआ यह सुन कर। बड़ा भला आदमी था वह। ईश्वर उसकी आत्मा को शान्ति दे।"

सबों ने चुपचाप शराब पी।

राशित ने दुखी स्वर में पूछा, "और कौन नहीं वापस आया?"

अडामुर ने उत्तर दिया, "दोनों भाई, हाशिम और सईद..... आध्यापक डेविड एलेन ...... मिखाइल राम्बा और उसका भाई गाश............।"

राशित अपना गिलास आगे बढ़ाते हुये बीच ही में बोला, "हाँ, भाई, साकेनियनों को भी बहुत नुकसान उठाना पड़ा है। उनकी लाशें दफ़नाई कहाँ गई हैं! हम युद्ध की लपटों में झुलसने से नहीं बच सके हैं। हमें भी युद्ध में आहुति देनी पड़ी है। पर वहाँ का भी तो कुछ हाल सुनों। वहाँ तो गाँव के गाँव मिट गये हैं, पृथ्वी पर अब उनका नाम-निशान भी नहीं रहा। कितने ही आदमी बे घरबार के हो गये हैं।"

कमरे में फिर सन्नाटा छा गया। सभी लोग विचार-मग्न हो गये।

ऐन्टन ने गिलास जमीन में रख कर, बोतल, दूर खिसका दिया और जँभाई ली। सबों की गरदनें झुकी हुई थीं और राशित उन्हें घूर घूर कर देख रहा था। एडामुर ने उन्हें हँसाना

और प्रसन्नचित्त रखना अपना कर्त्तव्य समझ कर कहा, "मुँह क्यों लटकाये हो? हमारे बीच में एक और लड़का बहुत अच्छा है। उसकी जल्दी ही शादी होगी।"

राशित परेशान हो गया। सब उसको घूरने लगे। उसने कहा, 'नहीं, अभी बहुत जल्दी है। पहले मैं कोई काम करूँगा .... तब फिर ....।"

अडामुर ने उसे बात खत्म करने का मौका न देकर कहा, "राशित मुख्य बात तो यही है कि तुम जीवित हो और हमारे बीच में आ गये हो। इससे ज्यादा आदमी और क्या चाहता है? तुम्हारे न रहने से गाँव में मुर्दनी छायी रहती थी।"

राशित प्रसन्न हो कर उछल पड़ा। वह कहने लगा, 'घबराओ नहीं, अडामुर ..... अब सब ठीक हो जायेगा। अब तो मैं आ गया हूँ। (अपनी मुट्ठियां बांधते हुये) इस तरह अब ठीक होगा। हम सब पहाड़ी हैं। इसका मतलब है कि हमारा रक्त शुद्ध है, शराब के समान लाल है। हमारे अपने कानून हैं, अपने रीति-रिवाज हैं, अपनी परम्परायें हैं। अपने दादा की कसम, अब सब कुछ ठीक कर दूंगा। किसी को कोई एतराज नहीं होगा। सब सहमत होंगे।"

उसने शराब करीब करीब खत्म कर दी।

(५)

सुबह बड़ी सुहावनी थी। आकाश भी साफ था। बादल नहीं छाये थे। ऐसा लगता था जैसे कोई शीशे की गुम्बद साफ कर के बना दी गई हो। आसमान सभी जगह नीला था। कहीं कहीं पर हलके गुलाबी रंग का भी हो गया था। घास पर ओस मोती जैसी बिखरी हुई थी। धुँआ सीधी लकीरों में ऊपर उठ रहा था। सभी अच्छे दिनों की आशा दिला रहे थे।

केसो आंगन के बीच चुपचाप खड़ा हुआ था जैसे कुछ भी न सुन रहा हो। गायें पागुर कर रही थीं, कुत्ते भूंक रहे थे और आकाश में एक चील उड़ रही थी, शायद अपने शिकार के लिये जा रही थी।

केसो का बाप येकप भुनभुनाता हुआ सीढ़ियों से उतरा। वह दुबला पतला आदमी था। कद में लड़के से भी छोटा। कमर झुकी हुई। पहाड़ी के भोली आकृति वाले चेहरे में

उसकी दो नीली आँखें चमक रही थीं। उसकी दाढ़ी छोटी छोटी थीं और मूछें लटकी हुई थीं। युवावस्था में येकप ने बहुत सुख नहीं लूटा था। वास्तव में वह समय से पहिले ही बुड्ढा हो गया था और यही कारण था कि उसका स्वभाव भी शुष्क हो गया था। बहुधा वह बीमार रहता था, पर काम के मामले में बड़ा मेहनती था। अब उसकी शक्ति जवाब दे रही थी, यद्यपि उसकी आयु केवल पचास वर्ष की ही थी।

पचास वर्ष पहिले मरिबा परिवार में स्त्री-पुरुष दोनों की ही काफी संख्या थी। इनकी इज्जत होती थी। लोग डरते भी थे। येकप का भाई करामन मरिबा अपने शौर्य के लिये विख्यात था। वह काकेशस को पार कर जाता था और ढोर हांक ले आता था। न तो वह उन्हें खरीदता था और न उपहार ही में पाता था।

येकप के चचा भी कर्मठ और दृढ़ पुरुष थे। पर साकेन के शासक प्रिन्स मार्शेन हमेशा इस ताक में रहते थे कि मरिबा भाइयों को आपस में लड़ाते रहें, ताकि उनका प्रभाव बना रहे और इन भाइयों के एक हो जाने से उनके शासन में विघ्न न पड़ने पाये। एक पुरानी कहावत वहां प्रचलित थी कि "तरकीब से एक बुद्धू भी सांप को पकड़ सकता है।"

आपसी कलह में मर मिटने से येकप भाग्यवश ही बच गया था। उसकी नानी उसे अपने साथ ले आई थी और वहीं वह बड़ा हुआ था। जब साकेन में कुछ शान्ति हो गई तब वह पिता के घर लौट गया। उसके पिता का घर अब अवशेष मात्र था और उसे नये सिरे से जीवन आरम्भ करना पड़ा था। किसान परिवार के हर दुख और परेशानी उसे उठानी पड़ी थी। मक्का केवल अप्रेल तक ही चल पाता था और उसके बाद लोगों का

कहना है, वह खुदा का भरोसा कर किसी न किसी प्रकार आत्मा को शरीर में जीवित रखता था। इसकी अनुपस्थिति में इसके बाप की जमीन के एक बड़े हिस्से पर दूसरे लोग काबिज हो गये थे। उसका दूर का रिश्तेदार और पड़ोसी अडासुर बहुत हड़प बैठा था। फिर जमीन की उत्पादन-शक्ति इतनी कम थी कि व्यवस्थित जीवन की कोई आशा ही नहीं की जा सकती थी।

परन्तु येकप को सारा जीवन दुख और अभाव में ही नहीं बिताना पड़ा। एक दिन वह भी आया जब उसके राम सीधे हुये और उसका भाग्य मुस्कराया। माँ ने मरते समय उसे आशीर्वाद दिया था। उसे एक बड़ा सा खेत मिला और बताया गया कि सफल क्रान्ति ने उसे दिया है। वह पूछ बैठा, "यह क्रान्ति क्या है?" लोगों ने उत्तर दिया, 'यह तो यहाँ आ गई है।" अन्य पहाड़ियों की भाँति येकप भी प्रसन्नता से झूम उठा।

लगभग दस वर्ष पहले जब साकेनियनों ने कहा कि सामूहिक कृषि लाभदायक रहेगी, येकप की समझ में बात आ गई। दूसरे किसानों की भाँति उसने भी कहा, "मैं भी एक सामूहिक खेतिहर बनूँगा।" उसने पड़ोसियों से कहा, "तुम सब यह जानते हो कि मेरे पिछले जीवन में काले बादल छाये रहते थे और अब मेरे जीवन पर साफ स्वच्छ नीला आकाश है। आज मेरा जीवन खुशहाली का है।" वह यह बात बार बार समय-असमय दुहराया करता था।

अपनी छड़ी को टेकता हुआ येकप आँगन में आ गया था। उसके कंधों पर उसका सरकैशियन कोट ऐसी लापरवाही से रक्खा हुआ था जैसे वह उसका अपना न हो। केसो खड़ा खड़ा पिता

को घूरने लगा। उसे पिता के कठोर जीवन की एक एक बात याद आने लगी। उसे युद्ध के दिनों में किसानों का कठोर जीवन भी याद हो आया। जब केसो मोर्चे पर चला गया था तो येकप घर में अकेला था। केसो ने सोचा, "अब काम करने की उसकी अवस्था नहीं रही। उसका काम करना उसके लिए शर्म की बात है।' अपने लड़के की ओर देख कर येकप ने संतोष की साँस ली।

उसने केसो से पीछे आने के लिये आदेश देते हुये कहा, "आज सब तय कर डालो। यह मुडेर गिरी जा रही है। उस गड्ढे तक के खम्भे टूट के गिर चुके हैं। लेकिन उनसे कुछ दिन और भी काम चल सकता है। हमें कम से कम पांच गाड़ी 'फैगट' की आवश्यकता होगी। बिना चहारदीवारी का मैदान सूना-सूना दिखता है।"

केसो पिता के पीछे धीरे-धीरे चलने लगा। हर चीज को एक अच्छे किसान की दृष्टि से देखता जाता था। लड़ाई से वापस लौटने के बाद एक जाड़ा समाप्त हो चुका था। बसन्त के आने से नये प्रश्न उठ खड़े हुये थे। बर्फ गल कर बह गई थी और सभी चीजें दृष्टिगोचर होने लगी थीं। अभी बहुत काम करना बाकी था। अतः देखकर कोई विशेष प्रसन्नता नहीं होती थी।

येकप कह रहा था, "फाटक—यदि उसे फाटक कहा जाय—को एक बार खोल कर बन्द करना आसान काम नहीं है। पानी के गड्ढे पर का छोटा-सा वृक्ष तो माशा-अल्ला है। यदि घोड़े का कदम तनिक ठीक न पड़े तो उसमें गिर जाना तो पूर्णतया निश्चित है। पर यदि तुम बैलों का उपयोग करो — —! केसो, हिम्मत न हारो। देखो और क्या क्या ठीक करता है ?"

मैदान का चक्कर लगाकर बाप-बेटे घर गये। बुड्ढे ने हर कमी की ओर केसो का ध्यान दिलाया था और हर खोज के बाद वह प्रसन्न हो जाता था। छड़ी टेकता टेकता वह अन्दर आया। पर केसो का ध्यान उन कमियों की जड़ को ढूँढ़ रहा था। उसकी समझ में मुख्य कमज़ोरी मुंडेरों का टूटना नहीं था, बल्कि मिट्टी थी—मिट्टी की उत्पादन-शक्ति का कम होना था।

येकप ने कहा, "घर की हालत भी अच्छी नहीं है। सीढ़ियाँ कमज़ोर हैं और दीवारें तो किसी दिन भी जवाब दे सकती हैं। धन्नियों को भी बदलने की आवश्यकता है, नहीं तो ये किसी दिन सिर फोड़ेंगी। हमें नई छत बनवानी है पर लकड़ियाँ इकट्ठा कर लेना कोई आसान काम नहीं है। करीब करीब सौ तख्तों और एक गाड़ी 'शिंगल' की जरूरत पड़ेगी।........"

येकप सीढ़ियों पर बैठ गया और सिगार जला कर पीने लगा। उसने अपनी बात जारी रक्खी, "गौशाला भी चरमरा रही है। एक अच्छा किसान वहाँ कुत्ते भी नहीं बांधेगा, गाय की बात तो दूर है। यह सब देखकर सभी रो पड़ेंगे।"

केसो बोला, "अब, अब पिता........।"

येकप कहता गया, "क्या सोचते हो। यह हँसने की बात नहीं है। तुम्हारी बहन भी अब बच्ची नहीं रही, उसके बारे में भी सोचना है। हमारे ठीक-ठाक करने से पहले ही वह शादी कर लेगी। हमारे हाथ किसी तरह भी खाली नहीं हैं।"

केसो ने प्रश्न किया, "क्या उसकी किसी लड़के से दोस्ती है?"

येकप बोला, "मारो गोली दोस्तों को। लोग ऐसे ही घूमा करते हैं। हमारी सम्पत्ति पर आँख लगाये हैं। तुमको आये अभी

कितने दिन हुआ है। तुम्हें क्या मालूम। पर तुम्हारा कोई दोष नहीं है। तुम्हारे पैर अब कुछ ठीक हो चले हैं। कुछ दिन रुको और सब अपने आप पता लग जायेगा। बसन्त आ गया है। उन्होंने पता नहीं क्यों सबसे रद्दी खेत हमें दिये हैं। इस पर तो घास भी नहीं उगने की, मक्का की कौन कहे? मैंने तमाम अधिकारियों से साफ साफ कह दिया था। मैं बताये देता हूँ, उस खेत में कोई हाथ भी नहीं लगाएगा। मैं टीम के मुखिया की हैसियत से कह रहा हूँ।"

येकप उत्तेजित हो गया था। उसने कमीज की कालर ढीली की जैसे गला फँस रहा हो।

केसो ने अपने हाथ उसके कंधे पर रख कर उसे शान्त करने का प्रयत्न किया।

येकप ने अपने पाइप में तम्बाकू भर कर उसे सुलगाया और एक लम्बी कश खींची। उसने कहा, "केसो तुम क्या सोच रहे हो मैं नहीं जानता। युद्ध की बातें बड़ी आसान है। पर अभी हम भले आदमियों जैसे रह भी नहीं रहे हैं। तुम गाँव की सोवियत से सहायता करने के लिये क्यों नहीं कहते? क्या तुम्हारे युद्ध में जाकर लड़ने और इतने मेडल प्राप्त करने का यही इनाम है? उनसे कहो कि हमारे मकान की मरम्मत करा दें, अच्छा सा खेत दें।"

केसो ने खेत पर से चील उड़ाने के लिये आवाज दी। पिता के पास बैठा हुआ वह बोला, "मैं अपंगु नहीं हूँ। मैं कुछ नहीं मागूँगा।"

येकप बोला, "तुम्हारा घमंड तुम्हारी चोट से अधिक हानिकर है।"

केसो ने कहा, "ईश्वर की कृपा है कि मेरे हाथ पैर सही सलामत हैं। मुंडेर, घर, गौशाला सब ठीक हो जायेंगे, कहीं भाग नहीं जायेंगे। मुख्य प्रश्न तो जमीन और उसकी उपज का है। हमें उसी पर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिये।"

येकप, "और तब तक हम लोग आसमान के नीचे रहेंगे ?"

केसो ने शांत, सयंत स्वर में शब्दों को चुन-चुन कर कहा, "सुनो, पिता—जुताई पहिले होनी है। ......?"

येकप, "पर तुम क्या जोतोगे, अपना सिर ?"

केसो, "जुताई पहिले करनी है। साकेन के चारों तरफ की जमीन किसी लायक नहीं है। पीली मिट्टी ...लाल मिट्टी...सब एक ही है। नदी के किनारे ही काम करने से अब आगे नहीं चल सकता। कुछ लोगों को पहाड़ियों पर भी खेती करनी चाहिए।"

येकप, "पर हमीं क्यों जायँ ?"

केसो, "तो दूसरे ही क्यों जायँ ?"

येकप, "तुम मोर्चे पर लड़ने गये थे और हम तुम्हारे परिवार के हैं।"

केसो की आँखों में असन्तोष की रेखा खिंच गई। वह बोला, "हम किसी के आगे हाथ नहीं फैलायेंगे। मैं घायल फौजी नहीं हूँ। मैं एक अच्छी टीम का मुखिया हूँ।"

उसी समय गिघंम फ्राक पहले हुये एक लड़की रसोई घर में आई। वह सुन्दर तो नहीं थी पर उसमें आकर्षण बहुत था। कुछ लोगों का कहना था कि उसके हावभाव सुन्दर थे और कुछ कहते थे कि आँखें आकर्षण का केन्द्र थीं। उसकी आँखें पिता जैसी थीं। युवा छिप छिप कर अपनी आँखें सेंकते थे, पड़ोसी उसकी सराहना करते थे।

बुड्ढे ने कहा, "नीना, यहाँ आओ। देखो तुम्हारा भाई क्या कह रहा है। वह घर आदि को महत्व नहीं देता। उसे केवल मिट्टी और जुताई की चिन्ता है। ऐसी ही बातें तुम सोवियत के चेयरमैन से सुन सकती हो।"

केसो कमरे में टहलते-टहलते बोला, "क्या तुम धनी नहीं होना चाहते?"

बाप-बेटी आँखें फाड़-फाड़ कर उसे देखने लगे।

केसो ने कहा, "अचम्भा करने की कोई आवश्यकता नहीं है। हम अमीर हो सकते हैं। कैसे? बड़ी आसानी से। पिता, आप मर्सी क्लिफ को तो जानते हैं?"

बुड्ढे येकप ने आश्चर्यचकित होकर कहा, "जानता क्यों नहीं सामने ही तो दिखाई पड़ रही है, पर इससे क्या?"

केसो ने प्रश्न किया, "उसके बारे में कितना जानते हैं?"

बुड्ढा येकप चौंक गया। क्या उसका लड़का उसकी हँसी उड़ा रहा था!

वह बोला, "इस नाम की एक पहाड़ी है। यहाँ से नजदीक ही तो है। तुम और क्या जानना चाहते हो?"

केसो ने नीना को देखा और फिर धीरे-धीरे बोला, "हम 'मर्सी क्लिफ' को उपजाऊ पहाड़ी (फर्टिलिटी क्लिफ) बना देंगे। तुम सुन रहे हो न, पिता तुम्हें याद है, युद्ध के पहिले लोग इसके बारे में क्या कहते थे? वे उस पहाड़ी के बारे में बातें करते थे। मैं उन दिनों और मोर्चे पर भी उसी के बारे में सोच रहा था। मैंने पता भी लगा लिया था। युद्ध के कारण सारी योजना टल गई। इसमें मेरा कोई दोष नहीं है।............"

येकप ने प्रश्न किया, "युद्ध के कारण योजना कार्यान्वित नहीं

हो पाई ? क्या मतलब है, साफ साफ कहो। मैं जानता हूँ कि गाँववाले उस पहाड़ी को चाहते थे। एक बुड्ढा अधिकारी भी किसी समय वहाँ रहता था। उसके मस्तिष्क में भी नये नये विचार थे।"

केसो बोला, "ठीक है तुम देखते रहो। जरा बसन्त आने दो।"

सूर्य भी यह जान कर कि वास्तव में बसन्त के आगमन के लिये कौन आतुर है, निर्मेघ आकाश में चमकने लगा। गाँव वालों ने सन्तोष की सांस ली और कहा, "सूरज पहिले से अधिक गरम है। सचमुच में बसन्त का सूरज है।"

---

(६)

नाश्ता करते समय नीना अपनी टोली के काम के बारे में बात करती रही। वह तम्बाकू के पेड़ लगा रही थी। उसके कथनानुसार काम बहुत अच्छा हो रहा था। माथे पर से बाल को बार-बार हटाते हुये वह जल्दी जल्दी खा रही थी।

येकप शान्त था। बीच बीच में वह नीना से एकाध प्रश्न पूछ लेता था।

केसो कल्पना जगत में था। उसने नीना की बातें भी पूरी नहीं सुनीं। जब उसकी बहिन ने कहा कि फ़सल अति उत्तम होगी। तभी उसे बीच में रोक कर उसने पानी माँगा। अपने काम के बारे में अपने भाई की इतनी विरक्ति देखकर उसके दिल को चोट पहुँची। वह अपने भाई का बड़ा आदर करती थी, क्योंकि वह उसे गाँव के बुद्धिमान व्यक्तियों में समझती थी। पिता ने सहानुभूति दिखाते हुये मुस्करा दिया। वह अपनी लड़की

को उसके मधुर स्वभाव के कारण बहुत प्यार करता था। वह लड़की की बातें दिन भर सुनता रह सकता था।

खाना समाप्त कर नीना उठी। केसो भी उस पर एक अर्थ-विहीन दृष्टि फेंक कर उठ खड़ा हुआ। आज के दिन उसे आराम नहीं मिलने वाला था। उसे सामूहिक कृषि की टोलियों के मुखियों से मिलना था और पता लगाना था कि काम कैसा चल रहा है। उनको उत्साहित भी करना था। फिर सामूहिक कृषि-व्यवस्था के सम्बन्ध में अधिकारियों और गांव के सोवियत वालों से भी बातचीत करनी थी।

अपने सिर पर हैट रखते हुये केसो बोला, "अब मैं जा रहा हूँ।"

सब से पहले वह मुखिया ऐन्टन राशवा से मिला। उससे हम लोग पहिले ही से परिचित हैं।

ऐन्टन लकड़ी काट रहा था। केसो को आता देख कर उसने अपनी कुल्हाड़ी जमीन पर रख दी पर इतनी लापरवाही से कि वह खुद गिरते गिरते बचा। केसो ने उसे आवाज दी और उसने कहा, "चले आओ।"

केसो ने कहा, "धन्यवाद, मैं जल्दी में हूँ। मालूम होता है, लकड़ी काटना अब तुमने अपना पेशा बना लिया है।"

ऐन्टन को खांसी आ गई और वह खांसते-खांसते मुंडेर तक आया।

खांसते हुये उसने कहा, "मैं खुद ही यह सोच रहा था कि इतने सबेरे सबेरे हमारी टोलियों के नेता किधर जा रहे हैं? अब तक अपने शान्त जीवन से ऊबे नहीं क्या?"

केसो ने उत्तर दिया, "ऊब क्यों जाऊँ? हमने लड़ाइयों में भाग लिया है, अपना कर्त्तव्य पूरा किया है।"

आंखें मलते हुये ऐन्टन बोला, "ठीक है, ठीक है। आओ, अन्दर आओ, एक गिलास मदिरा तो पीते जाओ।" उसकी आंखें लाल हो गई थीं।

केसो ने सधन्यवाद अस्वीकृत कर दिया।

केसो ने प्रश्न किया, "कैसा काम चल रहा है?"

ऐन्टन ने पूंछा, "कौन काम?"

केसो, "खेती और क्या।"

ऐन्टन, "ओ ......हो........सब ठीक ही चल रहा है।"

केसो, "क्या जुताई करने की नहीं सोंच रहे हो।"

ऐन्टन, "ऐसी जल्दी भी क्या है? पुराने जमाने में तुम जानते हो .. ..।"

ऐन्टन की बात सुनी-अनसुनी कर केसो ने ऐसी मुद्रा बना ली जिससे साफ मालूम होता था कि अगले दिन ही सारी टोली को काम पर लग जाना है। ऐन्टन ने विरोध प्रकट करने का प्रयत्न किया कि अभी बहुत ही जल्दी है, अभी तो बरफ भी ठीक से नहीं गली है, लेकिन केसो ने ध्यान नहीं दिया। उसने कहा, "कल ठीक सात बजे, खेत में ....।"

ऐन्टन ने उत्तर दिया, "मैं नहीं आ सकूंगा। मेरे पैरों में दर्द है। क्या तुम्हें विश्वास नहीं है? मैं सच कहता हूँ, एकाएक मेरा अंगूठा दर्द देने लगता है और फिर तमाम उंगलियों में और जोड़ों में फैल जाता है। दर्द बहुत जल्दी सारे बदन में फैल जाता है। आप समझे?"

"नहीं", कह कर केसो आगे बढ़ गया। ऐन्टन को, जब तक वह चाहे, बड़बड़ाने के लिये उसने अकेला छोड़ दिया।

केसो खुद बड़बड़ाने लगा, "ऐसे निकम्मों से कुछ नहीं हो

सकता। आदमी सभी तरह के होते हैं, अच्छे भी, बुरे भी। निभाना सभी के साथ पड़ता है। यह मुश्किल जरूर है पर दूसरा रास्ता ही कौन है? क्या किया जाय? घिसटने वाले को घसीटते चलो।"

गुस्से में केसो की मुट्ठियां बंध गईं और वह किसी पर भी बरस पड़ता जो बसन्त का मजाक बनाने की हिम्मत करता। उसने मन ही मन कहा, "इन सबों को ठीक करना होगा।" ऐन्टन को गालियां देते हुये उसने सोचा कि उसका दिमाग तो पहिले दुरुस्त करना चाहिये। दूसरी टोलियों के मुखियों से बातें करने पर उसका पारा कुछ नीचे आ गया। इसका कारण यह भी था कि मौसम बड़ा सुहावना और आशाप्रद हो गया था। साकेन में सुहावने दिनों में प्रसन्नचित्त आदमी बहुत थोड़े मिल पाते हैं। छोटे-मोटे झगड़े तो रोज होते रहते हैं पर बड़े झगड़े भी कम नहीं होते। केसो रास्ते भर मिलने वालों से हँसी मजाक और अभिवादन करता हुआ जा रहा था। स्त्रियों के आगे वह झुक कर अभिवादन करता था और सभ्यता और शिष्टतापूर्ण व्यवहार करता था। उससे बातें करने में लड़कियों के गाल शर्म से लाल हो जाते थे।

केसो सीटी बजाता हुआ बढ़ा चला जा रहा था। गड्ढों को घूम कर जाने की जगह वह उन्हें फाँद कर जाता था और हर बार फाँदते समय उसके मुंह से चीख निकल जाती थी

सड़क पर बर्फ गलने के कारण धूल कीचड़ में बदल चुकी थी। यहाँ के गड्ढे सूरज की किरणों के पड़ने से सुन्दर दिखाई देने लगे थे। केसो एक के बाद दूसरी छलांग मारता हुआ चला जा रहा था। उसे रह रह कर पोलैंड और यूक्रेन का ध्यान आ रहा था। वहाँ तो मोटरें तक फँस जाती थीं। उसके कानों में अपने साथ के यारोस्लेवियन सिपाही के शब्दों की भनक पड़ रही

थी--"साथियों, जूते निकाल लो, पानी बहुत गहरा है।" उस बात को याद कर उसने अपनी चाल कुछ धीमी कर दी। वह साथी पोलैन्ड में मारा गया था और वहीं दफना भी दिया गया था। केसो उसकी कब्र पर कितनी ही बार रोया भी था। यह तीन वर्ष पहिले की बात है। वह कब्र अब भी मौजूद है या नहीं, केसो के हृदय में तो उसकी याद थी ही और काकेशस के पहाड़ों में भी उसकी स्मृति उसकी बातों को दुहरा देती थी।

---

(७)

गाँव के सोवियत तक का रास्ता उसे बड़ा लम्बा प्रतीत होने लगा। तीसरा पहर आ गया था और निश्चित समय से कहीं ज्यादा देर हो चुकी थी। चौराहे पर पहुँचते ही केसो हिचकिचाया। उसे क्या करना चाहिये ? सीधे सोवियत के दफ्तर जाय, या तीसरी टोली के मुखिया गूद्ल के घर जाय ?

इसी समय पीछे की सड़क पर एक गाड़ी आती हुई दिखाई पड़ी। बड़े कद के दो बैल उसमें जुते हुये थे। उन जानवरों का भारीपन सबों को मालूम था और प्रकृति ने शायद जानबूझ कर पहाड़ियों को परेशान करने के लिये इन्हें बनाया था।

गाड़ी अभी मुश्किल से उसके सामने आ पाई थी कि उसके कानों में बैलों को दी जाने वाली गालियों की भनक मिली। गाड़ीवान ने चाबुक खींच कर बैलों को मारा। चाबुक मारते हुये वह बड़बड़ा रहा था "शैतान, बेइमान.........केवल भेड़ियों के खाने

लायक हो ।" अन्त में वह बिगड़ कर जमीन पर उतर पड़ा और बाह चढ़ाते हुये उन जानवरों के साथ भयंकर बर्ताव की धमकियाँ देने लगा ।

केसो ने पूछा—"क्या बात है गूदल ?"

केसो की ओर देख कर गूदल बोला—"तुम इधर कैसे आ निकले, कहाँ से आ रहे हो ?" उसका इरादा अपने बैलों की मरम्मत, बात खतम करते ही, करने का था । "आकाश से टपक पड़े क्या ?"

गूदल की अवस्था लगभग पचास वर्ष थी । चतुर बुद्धि वाला, होशियार, फुर्तीला और मेहनती था । कितने ही नवयुवक उसका मुकाबला नहीं कर सकते थे ।

अपने हाथ को पीछे पीठ पर रखे हुये केसो हँसने लगा ।

केसो ने कहा—"उन्हें मत मारो, तुम्हें दुख होगा ।"

बैलों पर नाराज होता हुआ वह बोला—"मुझे बड़ा दुख है । मेरे दोस्त अभी तुम मुझे पूरी तौर से नहीं जानते । मैं जो सोचता हूँ वही करता हूँ । लेकिन ये बेईमान मुझे पागल बना देंगे ।" बैल पास में लगी झरबेर के पेड़ के पास जा कर चरने लगे ।

गूदल उन्हें फिर चाबुक से मारने लगा । बड़ी मुश्किल से केसो ने उसे खींचकर जानवरों से अलग कर दिया और उसे पीने के लिए सिगरेट दिया । थोड़ी ही देर में दोनों घुल-मिल कर बातें करने लगे । गूदल का क्रोध सिगरेट के धुयें के साथ उड़ गया ।

गूदल ने कहा—"मैं एक चीज घर ले जा रहा हूँ । इसका नाम है ....देखो भूल रहा हूँ..........अच्छा जहाज में क्या होता है ?"

केसो—"जहाज में ?"

गद्दल—"हाँ, तुम जानते हो........।" उसने अपनी स्मरण शक्ति में ढूंढ़ने की कोशिश की।

केसो—"चिमनी?"

गूद्ल—"नहीं, चिमनी नहीं।"

केसो—"रस्सियां?"

गूद्ल—"नहीं भाई, यह भी नहीं।"

केसो—"झंडा?"

गूद्ल—"तुम भी निरे बुद्धू रहे। धिक्कार है। खुद ही देखो न कि क्या है? मेरा लड़का इसे पिछले साल गर्मियों में लाया था। और इतना ही नहीं...........। मैं लुहार के यहाँ से आ रहा हूँ।"

वे दोनों गाड़ी में चढ़ गये। किसी लोहे में तार लिपटा हुआ था। वह एक बकस में रक्खा था।

केसो ने कहा—"डाइनमो मालूम होता है।"

गूद्ल बोला—"नहीं, डाइनमो नहीं है। मेरे साथ आओ, लड़के से पूछ कर बताऊँगा। इसका दाम ५०० रूबल देना पड़ा था। लेकिन दाम का सवाल नहीं है। यह बहुत काम की चीज है। चट्टानों और ऊबड़ खाबड़ जमीन पर रख दो.. ....।"

केसो ने उसे फिर गौर से देखा और कहा—"यह डाइनमो ही मालूम होता है।"

गूद्ल खुशी से उछल पड़ा और पूछा, "क्या कहा?"

केसो ने उत्तर दिया, "डाइनेमो।"

गूद्ल बोला, "नहीं, यह डाइनेमो नहीं है। मेरा लड़का इसे डाइनेमो नहीं कहता है। मेरे साथ घर आओ। वहाँ तुम्हें ऐसी चीज दिखलायेंगे कि तुम्हारी आंखे चकाचौंध हो जायेंगी। हमने

मिल से यहां तक एक नहर काटी है, एक बांध बनाया है। एक आदमी की ऊँचाई तक पानी इकट्ठा कर लिया है। घर के पीछे एक बड़ा-सा टाल है। वहाँ एक तालाब-सा खोद लिया है। ऊपर से पानी गोली की तरह तेजी से गिरता है। जब यह मशीन चलने लग जायेगी तो शहरों की तरह हमारे यहाँ भी बिजली हो जायेगी।"

केसो, "यह तो बड़ा अच्छा है। तुम बिजलीघर बना रहे हो।"

गूद्ल, "तुमने क्या कहा ?" (याद करते हुए) "नहीं, यह नहीं।"

केसो के लिये यह आश्चर्यजनक बात थी, फिर भी उसने स्वीकृत दे दी। गूद्ल बिजलीघर बना रहा था। आश्चर्य, घोर आश्चर्य ! केसो उसे जाने नहीं देना चाहता था। उसे बड़ा अच्छा लग रहा था कि एक साकेनियन बिजली की रोशनी लाने के लिये प्रयत्नशील था।

उसने कहा, "मित्र गूद्ल, यदि युद्ध न छिड़ गया होता तो, हमारे यहाँ बिजली की रोशनी बहुत पहले ही आ गई होती। १६४१ में ही धन की व्यवस्था कर ली गई थी और योजना में हमारा गांव भी सम्मिलित कर लिया गया था। यहां एक हाइड्रो-एलेक्ट्रिक स्टेशन अब तक काम करने लगा होता।"

गूद्ल, "ठीक। उतना ही सच जितना दो और दो चार।"

केसो, "लेकिन अब १६४६ के पहले हमें बिजली की रोशनी की आशा नहीं करनी चाहिये।"

गूद्ल अपनी गाड़ी पर चढ़ गया।

केसो ने कहा, "अभी रुको। जुताई के बारे में क्या कहना है ?"

गूदल बोला, "जुताई, खेतों की ? यदि मौसम अच्छा है तो मैं हर वक्त तैयार हूँ। पूरी टोली को इत्तला कर दो। मेरा हल तो ठीक है पर बैल बेइमान हैं। ये नालायकी जरूर दिखायेंगे।"

केसो, "ठीक है, कल सात बजे।"

गूदल, "जरूरत हो तो ६ बजे ही।"

बैलों को जोर जोर गालियाँ देते हुये गूदल ने गाड़ी हांक दी। फिर वह बोला, "केसो, किसी वक्त आओ और बिजली घर देखो। उद्घाटन में तुमको विशेष निमन्त्रण भेजेंगे।"

गाड़ी बायें तरफ मुड़ गई। इसकी चरमराहट सारे गांव में सुनाई पड़ सकती थी।

केसो भी अपने रास्ते पर आगे बढ़ा। थोड़ी देर में ही उसने गूदल को गला फाड़-फाड़ कर चिल्लाते और गालियां देते हुये सुना। केसो रुक गया।

गूदल जो झाड़ियों में छिप-सा गया था चिल्लाया, "केसो, मेरी आवाज पहुँचती है ?"

केसो, "हां, सुनाई दे रही है।"

गूदल, "मुझे याद आ गया......इसे आरमेचर कहते हैं।"

केसो ने कदम बढ़ाते हुये कहा, "डाइनेमो आरमेचर।"

---

(८)

गांव के सोवियत की इमारत भी खसता हालत में थी। दरवाजे और खिड़कियों के शीशे टूटे हुये थे। इसके अलावा युद्ध के दौरान में उसमें कोई और परिवर्तन नहीं हुआ था। उसका आंगन पहिले ही जैसा साफ था। हाँ, १६४० में लगाये गये पौधे अब बढ़ कर बड़े हो गये थे।

बगल के छोटे कमरे में एक बीस वर्ष का युवक बैठा हुआ कुछ किसानों से बातें कर रहा था। यह गाँव के सोवियत का सेक्रेटरी था। केसो ने उन सबों को अभिवादन किया और सबों के स्वास्थ्य के बारे में पूछा।

इसमें ज्यादा समय नहीं लगा।

दूसरा दरवाजा चेयरमैन के कमरे का था। यह कमरा ज्यादा बड़ा था। दीवारों पर लाल कपड़े के झंडे लगे हुये थे। कमरे के बीच में टेबिल पर था और टेबिल ऐश ट्रे में जली हुई सिगरेटों के टुकड़े पड़े थे।

निकोला टेबिल के सामने बैठा हुआ था। उसकी मुद्रा से ऐसा मालूम हो रहा था जैसे वह रात भर सोया न हो और सोवियत के काम में उलझा रहा हो। वह अपने हाथों पर गाल टेके हुये था। चेहरा उसका भारी पड़ गया था। केसो के आगमन से उसकी भाव-भंगियों में थोड़ा परिवर्तन हुआ और उसने दूसरी तरफ का गाल हाथ पर टेक लिया।

खिड़की के पास एक टोली का मुखिया और पार्टी संगठन का सेक्रेटरी, कान्सटैन्टिन एलन, बैठा था। कान्सटैन्टिन धीरे बोलने वाला चुप्पा आदमी था, पर निकोला को अधिक बोलना ज्यादा पसन्द था। यही कारण था कि उनकी बातचीत का अपना ढंग होता था। निकोला लम्बे लम्बे वाक्य कहता था पर कान्सटैन्टिन एक या दो शब्दों में उत्तर दे देता था। पर वे एक दूसरे को खूब अच्छी तरह समझते थे।

चेयरमैन ने आगन्तुक व्यक्ति से कहा, "उस कुर्सी पर मत बैठो नहीं तो जिन्दा नहीं बचोगे।"

दूसरी कुर्सी पर बैठते हुये केसो बोला, "इतनी जल्दी ?"

कान्सटैन्टिन ने शिष्टतापूर्वक उससे पूछा कि उसके क्या हाल चाल हैं। शहरों के मुकाबले में उसे यहां ज्यादा शान्ति मिली थी। केसो ने ज्यादा शोर गुल वाले शहर देखे होंगे और कौन ठिकाना वह पांच मंजिल वाले मकानों में ठहरा भी हो। सच भी तो है कि केसो पांच मंजिल वाले मकान में ठहरा भी था, पर उसे साकेन ही अच्छा लगता था। निकोला ने सेक्रेटरी की तरफ दृष्टि फेंक कर उसे चुप रहने का इशारा किया।

फिर उसने केसो से पूछा, "तुम कितनी जगह घूम आये हो ?"

केसो ने उत्तर दिया, "मैं दोन से जर्मनी गया। लेकिन मेरे

दोस्तों, बाहर जाने से साकेन के लिये मेरा प्रेम बढ़ ही गया और मैं जल्दी से जल्दी लौटने की इच्छा करता था।"

कान्सटैन्टिन उठ खड़ा हुआ। घड़े में से पानी निकाला और गिलास भर पी गया।

कमरे में सन्नाटा छाया था। केसो ने सोंचा, उसकी बात प्रभावोत्पादक मालूम हुई है।

निकोला ने कहा, "अच्छा, अब काम की बातें हों। ठीक है, न ?"

उसने दराज से एक लिफाफा निकाला और बोला, "यह जिला अधिकारियों का पत्र है। जुताई, बुवाई आदि प्रश्नों से सम्बन्धित है। अचानक ही आ पहुँचा। जानते हो, कैसे आया ? क्या ख्याल है ?"

कान्सटैन्टिन ने पूछा, "साकेन के लिये ? तो क्या सड़क चालू हो गई ?"

निकोला, "यह मुझे नहीं मालूम......। इसे तो राशित लाया है।"

कान्सटैन्टिन, "कौन राशित ? राशित डोआ...?"

निकोला, "हां, वही।"

इस खबर पर काफी देर तक लम्बी बहस होती रही। निकोला ने बताया कि राशित चार साल तक मोर्चे पर रहा है और अब बहुत बदल गया है। केसो को घोर शंका थी कि राशित मोर्चे पर भी कुछ कर सका होगा। राशित के कुछ भेद खोलने का यह अच्छा मौका है। उसने स्वय इस भेद को अत्यन्त गुप्त रक्खा था और किसी भी मूल्य पर बताने को तैय्यार न होता। सच बात तो यह थी कि राशित ने बारूद कभी सूंघी भी नहीं थी। सारे समय

वह युद्ध क्षेत्र से दूर सप्लाई विभाग में काम करता रहा था और वहाँ भी भीगी बिल्ली बना रहता था। शहर में रहने वाले तो यह खूब जानते थे, पर साकेन तक खबर पहुँचने में बड़ा समय लगता था।

राशित के बारे में यह खबर थी कि वह पिछले दो दिनों से कहीं भटक रहा है और अभी तक घर नहीं पहुँच पाया है।

निकोला ने कहा, "सब बात देखते हुये वह भला आदमी है। कोई काम चाहता है।"

केसो ने कहा, "तो मैं एक और धूर्त की बढ़ती पर आप को बधाई देता हूँ।"

कान्सटैन्टिन ने धीरे से मुस्करा दिया।

उसने कहा, "ठीक है, पर भूलो नहीं कि पांच वर्ष का समय बीत गया है। लेकिन मैं इस सम्बन्ध में तो बातें करना नहीं चाहता था।......पत्र के बारे में क्या कहते हो, निकोला ?"

निकोल ने कहा, "पत्र तो ठीक ही है। मैं तो चाहूँगा कि वे (किसी कारणवश उसने कमरे में दाहिनी ओर इशारा किया) जिला के अधिकारी पहिले यहाँ आकर हालत देखें और तब पत्र लिखा करें। पढ़ो इसे।" पत्र निकाल कर निकोला ने उसे केसो के आगे रख दिया।

टाइप किये हुये गश्ती पत्र की यह बहुत धुँधली कारबन प्रतिलिपि थी। केसो को उसे पढ़ने में बड़ी असुविधा हुई। पत्र में लिखा था, "इस वर्ष किसान असाधारण पैदावार के लिये प्रयत्नशील हैं। वे चाहते हैं कि प्रति हेक्टर पांच सौ से एक हजार 'पूड' गल्ला पैदा करें। आज सारी दुनियां की आँखें हम पर लगी हैं। यह सोवियत जनता का कर्त्तव्य है कि गाँवों के प्रमुख व्यक्तियों द्वारा

बताये हुये रास्ते पर चलें। १९४७ को कृषि के विकास में एक महत्वपूर्ण वर्ष होना चाहिये, यद्यपि युद्ध के कारण प्रगति को बड़ी ठेस पहुँची है। .....'इसके बाद बहुत से व्यक्तियों और जगहों के नाम लिखे थे। ये सब से अच्छे सामूहिक-खेतों के नाम थे।

केसो ने कहा, "बहुत बढ़िया। इसी के लिये तो मैं भी आया था। आज ही तो तीर निशाने पर बैठा है। एक हजार पूड—आश्चर्य जनक ! क्या सोचते हो ?"

निकोला ने अपने बड़े रूमाल से नाक साफ करते हुये कहा, "हाँ, इसमें हमारा कोई जिक्र नहीं है।" मुद्रा तो उसने ऐसी बनाई थी जैसे कोई महान् वक्ता का भाषण देने जा रहा हो।

कान्सटैन्टिन, जिसने यह समझा था कि वह छींक रहा है, बोला, "तुम्हारा भला हो।"

रूमाल को जेब में रखते हुये निकोला जिला अधिकारियों की शिकायतें करने लगा। उसकी शिकायत थी कि 'जिला-अधिकारी हर गाँव की समस्या, उसकी ठोस परिस्थिति, को देख कर नहीं सुलझाते बल्कि कुछ आम धारणाओं पर नतीजे निकाल लेते हैं। भला वे साकेन के बारे में क्या जानें ? सिवा इसके कि यह बहुत दूर है और वहाँ पहुँचना कठिन है। पैदावार के बारे में भी यही हाल है। कहना आसान है कि ५०० पूड, एक हजार पूड पैदा करो। मैं इससे भी और जोरदार सरक्यूलर लिख सकता हूँ। मैं तो यह भी लिख दूँ कि समुद्रतट को बोकर एक हजार पूड तक पैदा करो, लेकिन इससे क्या होता है ! यहाँ की मिट्टी भी तो देखो। हम सब जानते हैं कि हमारे यहाँ की मिट्टी किसी लायक नहीं है।"

निकोला ने गुस्से में अपनी आस्त्राखान हैट उतार कर पहिन

लिया और कहा, "शिकार की ही समस्या लो। वह भी एक प्रश्न है। कितने बालों और परों का नुकसान हमें हो रहा है। इन्हें बेचने से कितना लाभ होता और हम अपने खेतों की हालत सुधार सकते थे। केवल बातें करने से क्या लाभ......।"

निकोला ने निराशा में अपना हाथ हिलाया और सेक्रेटरी को बुलाया। वह युवक चुपके से कमरे में आया। उसकी नाक बहुत लाल थी और वह तेज साँसें ले रहा था।

निकोला ने प्रश्न किया, "तुमको क्या हो गया है?"

सेक्रेटरी लड़खड़ी आवाज में बोला, "ओटा......कु...ड"

निकोला ने पूछा, "क्या?"

उत्तर देने के पहिले उसने छींका। अब साफ हो गया कि वह क्या कहना चाहता था।

कान्सटैन्टिन ने बताया, "उसे सर्दी हो गई है। शायद बहुत तेज जुकाम है। शक्ल से तो ऐसा ही लगता है।"

सेक्रेटरी बोला, "खिड़...की...ठंढ...क।"

निकोला घृणामिश्रित स्वर में बोला, "खिड़की, समझ में आ गया और ठंढक भी। पर क्या मैं किसी दूसरे हाड़ मांस का बना हुआ हूँ? मेरी तरफ देखो, मैं तो बिल्कुल ठीक हूं।' यह प्रमाणित करने के लिये उसने अपने फेफड़ों से सारी हवा एक ही बार में निकाल दी।

कान्सटैन्टिन काँप गया।

उसने कहा, "ठंढी हवा सचमुच में बड़ा अन्याय करती है।"

निकोला ने जैसे कुछ सुना ही न हो। अपनी उँगलियों से किसी अव्यक्त आदमी को धमकियाँ देते हुये उसने सेक्रेटरी को समझाया कि वह जिला अधिकारियों को क्या उत्तर दे। यहाँ साकेन

में पाँच सौ पूड नहीं पैदा हो सकता, यह उन्हें साफ समझ लेना चाहिये।

सेक्रेटरी को फिर छींक आ गई।

निकोला बिगड़ कर बोला, जाओ, "यहाँ से। इसे लिख डालो।"

सेक्रेटरी चला गया।

कमरे में फिर सन्नाटा छा गया। विषय समाप्त हो गया था और कोई कुछ कह नहीं पा रहा था। निकोला, चेयरमैन के उपयुक्त गम्भीर मुद्रा में बैठ कर दियासलाई की कांटी से दांत खोद रहा था। कान्सटैन्टिन टेबिल थपथपा रहा था।

केसो का पारा चढ़ने लगा था। वह बोला, "अजीब जानवर है। सब समझता है, सब देखता है फिर भी जबान पर ताला डाले रहता है। इस तरह से काम नहीं चलने का। यदि तुम कम्यूनिस्ट हो तो बैल के सींग पकड़ो, हालत को सुधारो। बेकार सोंचविचार मत करो।"

वह बहुत गरम हो गया। एकाएक उठा, रोयेंदार सदरी के बटन बन्द किए, टोपी लगाया और जूते के फीते बांधने लगा।

उसने प्रश्न किया, "तुम इतना ही कहना चाहते थे न, निकोला ?"

निकोला ने पूछा, "और क्या चाहते हो ? क्या इतना काफी नहीं है ?"

केसो ने अपने हाथ जेब में डाल लिये और शुष्क स्वर में बोला, "मेरा ख्याल था कि हम लोग वास्तव में काम की बातें करेंगे। पर मैंने गलत सोचा था।......"

निकोला ने प्रश्न किया, "तुम्हें क्या ठीक नहीं जंचा ?" बताओ तो केसो। (कान्सटैन्टिन की ओर मुड़कर) ठीक है, न ?"

कान्सटैन्टिन ने सोचा कि उसके हस्तक्षेप करने का समय भी आ गया है।

उसने कहा, "जरा रुको ! हर एक के अपने विचार हैं। मेरे भी अपने हैं। मेरी राय है.......कि पत्र देने में जल्दबाजी न दिखाओ। हम सब को मिल कर सोच समझ लेने दो।"

कान्सटैन्टिन धीरे-धीरे और शान्त हो कर बोल रहा था। भूमिका से केसो प्रसन्न हो गया और कुर्सी पर फिर बैठ गया। केसो उत्सुकता से सिर उठा कर देखने लगा।

कान्सटैन्टिन कह रहा था, "पहिले तो यही साफ है कि केसो कुछ कहना चाहता है।"

केसो बोल पड़ा, "अवश्य, मुझे बहुत कुछ कहना है और महत्वपूर्ण बातें कहनी हैं। मैं बताना चाहता हूँ कि मेरी टोली दिखला देगी कि पहाड़ों में भी कितनी अच्छी पैदावार हो सकती है। युद्ध से हमारी योजनाओं को जो नुकसान हुये हैं, उन्हें हमको पूरा करना है। मेरे पास एक योजना है मैं जिला अधिकारियों के पत्र का समर्थन करता हूँ।"

उसने टेबिल पर से पत्र को उठा लिया और झंडे की तरह पकड़ लिया।

निकोला ने कहा, "बोलते जाओ। पर सब से पहिले हमें अपनी योजना को बताओ। सम्भव है वह सबों को पसन्द आ जाय, सम्भव है न पसन्द आये।"

कान्सटैन्टिन ने कहा, "यही ठीक है। हमारे पास गुप्त योजनायें नहीं हो सकतीं। यदि तुम्हारे पास कोई प्रस्ताव है तो हमारे सामने रक्खो।"

केसो ने एक क्षण सोचा। फिर बोला, "नहीं, अभी नहीं।

पहिले मैं कान्सटैन्टिन, तुमसे बातें करूँगा। तुम्हीं तो सामूहिक कृषि के अध्यक्ष हो। (निकोला को छिपकर देखते हुये) क्या तुम कल हमारी टोली के काम करते समय आ सकते हो? समस्या बहुत गम्भीर है और मामला टेढ़ा है। मुझसे अकेले शायद न संभल सके।"

निकोला मेज खुरच रहा था, जैसे उसने कुछ सुना ही न हो!

कान्सटैन्टिन ने प्रश्न किया, "तुम कल जुताई शुरू कर रहे हो?"

केसो ने उत्तर दिया, "हाँ।"

कान्सटैन्टिन बोला, "अति उत्तम। हम औरों से भी कहेंगे।" मैं अवश्य आऊँगा।'

केसो अभिवादन कर के चला गया।

(६)

राशित का पीते-पिलाते घूमना दो दिन तक जारी रहा। उसके संगी साथी एक से एक बड़े पियक्कड़ थे। बोतलें खाली करते जाते थे और राशित से उसके युद्ध के अनुभव सुनते जाते थे। मदिरा की हर बोतल के साथ उसके युद्ध के अनुभवों और दिलचस्प कहानियों में वृद्धि हो जाती थी। इन कहानियों का नायक राशित स्वयं होता था। वह बताता था कैसे उसने शत्रु को झाड़ी में ले जाकर परास्त किया, कैसे साहसपूर्ण हमले किये और अन्त में नदी पार कर अपने को बचा लिया। मदिरा इतनी तेज थी और प्रभावित इतनी शीघ्र करती थी उसके तमाम साथियों को उसकी बातों की सच्चाई पर यकीन होता जाता था। केवल अजमुर कभी कभी अविश्वास की एक दृष्टि फेंक देता था, क्योंकि अपने लिये वह कहता था कि मैं खुर्राट चिड़िया हूँ, केवल दाना फेंकने से बश में नहीं आ सकती हूँ लेकिन चूँकि वह इतनी पुरानी चिड़िया थी कि वह दूसरों को परेशान या हतोत्साहित करना उचित नहीं समझता था।

आखिर एक दिन सुबह राशित घर के लिये चल दिया। वह खेतों के पीछे से प्रसन्न चित्त आया। जेबों में हाथ डाले हुये और सीटी बजाता हुआ वह धीरे धीरे चल रहा था।

राशित को घर आने का कोई विशेष कारण नहीं था, सिवा इसके कि घर आने के लिये एक स्वाभाविक चाह थी। घर की चाह, राशित की कोई बड़ी कमजोरी नहीं थी। जैसे ही वह तैयार खेतों के नजदीक आया, उसे स्त्रियों की हंसी सुनाई दी और वह रास्ता छोड़ कर खेत-खेत चलने लगा।

लड़कियाँ खेतों में काम कर रही थीं। कई युवक मिट्टी में खाद मिला रहे थे। नजदीक ही, खेत में खाद बनाई जा रही थी और भाप उड़ रही थी।

कामा खेतों को बराबर कर रही थी। उसके हाथ बांह तक कीचड़ में सने हुये थे। नीना उसके बगल में बैठी हुई लकड़ी से सतह बराबर कर रही थी। दोनों लड़कियों ने एक दूसरे पर प्रश्न-सूचक दृष्टि फेंकी, जब उन्होंने फौजी लिबास में एक युवक को अपनी ओर आते हुए देखा। कामा ने अपने सिर में बंधा रूमाल ठीक किया और नीना ने अपना आसन बदल दिया। आगन्तुक को देखकर प्रत्येक व्यक्ति में कोई न कोई प्रतिक्रिया हुई। केवल डाब जो इस खेत का मैनेजर था विरक्ति का भाव बनाये हुये था। शायद वह उसे देख नहीं सका था। वह नीचे झुक झुक कर क्यारियाँ देख रहा था।

राशित ने जोर से कहा, "सब लोग अच्छे हो न ?"

लड़कियों ने एक दूसरे को शून्य दृष्टि से देखा, पर उनकी आँखों से घृणा या विरोध का भाव नहीं टपक रहा था।

कामा ने नीना के कानों में कहा, "यह राशित है।" दोनों उसे अभिवादन करने के लिये उठ खड़ी हुईं।

डाड ने देखने का प्रयत्न करते हुये कहा—"गुड मार्निङ्ग।" और नजदीक आकर उसने कहा, "अच्छा, यदि यह राशित न हो तब?"

राशित की दृष्टि लड़कियों की ओर घूम गई। उसकी नीना के प्रति मुस्कराहट से साफ पता लगता था कि वह उसे पहिचान गया है। उसकी आँखें जैसे बोल रही थीं। कामा के झुके हुये चेहरे को देख कर उसने दांत किटकिटाया और अपनी तीव्र दृष्टि उस पर स्थिर कर दी।

कामा को परेशानी में डाल देने वाली एक और दृष्टि फेंक कर राशित डाड से बातें करने लगा। उसने पूछा, "बुड्ढे बाबा जमीन ठीक कर रहे हो?"

डाड प्रसन्न होकर डींग मारने के ख्याल से उस नये लड़के से अपने साथियों की मेहनत और खेती के सब भेद बता देने को तैयार हो गया।

डाड अपने ओंठों को तर करते हुए बोला, "राशित सुनो, मैं तुम्हें सब भेद बतला दूंगा। लेकिन कुल बात हमारे बीच में ही रहेगी। क्या तुम देख नहीं रहे हो, कि और सालों के मुकाबले में इस साल हम पहिले बीज बो रहे हैं। तुम इसका मतलब जानते हो?"

बुड्ढा डाड अपने खेतों के बारे में विस्तारपूर्वक बताने लगा। पचास हजार पौधों की योजना थी, पर डाड का इरादा इसे भी दुगना कर देने का था। अच्छे पौधों का मतलब था अच्छी फसल। पर तब भी वह फसल मैदान की फसलों का मुकाबला नहीं कर सकती थी। पर उनकी कोशिश तो आगे बढ़ाने

की थी ही। इसका मतलब यह भी था कि सब लोग जम कर मेहनत करें।

राशित ने पूछा, "किसलिये? तुम इतना ज्यादा गल्ला क्या करोगे?"

डाड, "क्या करेंगे? ज्यादा तम्बाकू होगी। और तब हम बीज भी बेच सकेंगे।"

राशित ने मुंह का थूक निगल कर बुड्ढे डाड के हाथ को पकड़ते हुये कहा, "जो कुछ बचेगा उसे मैं ले जाऊँगा।"

बुड्ढे की बोलती बन्द हो गई।

उसने पूछा, "तुम?"

राशित ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं उन्हें काम में लाऊँगा। मैं उन्हें अपने कोट के जेबों में रख लूंगा।"

लड़कियाँ ठट्ठा मार कर हँस पड़ीं।

राशित फूल कर कुप्पा हो गया। लेकिन बुड्ढे को सामने देख कर झेंप गया।

राशित ने कहा, "मजाक की बात अलग रही। मैं आपकी मदद करना चाहूंगा।"

डाड अपने कन्धों को हिलाकर मुस्करा दिया और पीछे हट गया। राशित उन लड़कियों के पास बैठ गया और कहा, "कुछ काम मुझे भी करने दो।

नीना ने एक बाल्टी की ओर इशारा कर दिया।

वह बोली, "हम तुम्हारा स्वागत करते हैं। यहाँ पर कुछ खाद ले आओ!"

राशित मुस्कराते हुये बांह सकेल कर काम करने के लिये आगे बढ़ गया। एक क्षण में बाल्टी को मुंह तक भरकर वह जल्दी-जल्दी

खेत तक ले आया। लड़कियाँ उसके काम को देखकर हँसने लगीं।

नीना ने कामा के कान में कहा, 'कितना मजेदार आदमी है।'

मिट्टी के ढेलों को हाथ से फोड़ कर बराबर करते हुये वह बोला, "अच्छा लड़कियों, अब अपने बारे में बताओ। क्या हाल चाल है? प्रेम-व्यापार कैसा चल रहा है?"

नीना ने उत्तर दिया, "आप देख ही रहे हैं कि हम काम करते हैं। हमारा मुखिया (डाड की ओर इशारा करते हुये) बड़ा सख्त आदमी है। आज तो और दिनों से भी ज्यादा। उस बार तो उसने जाड़ा खत्म होने के पहिले ही से काम शुरू करवा दिया। उस समय तो बर्फ भी पूरी तरह नहीं पिघली थी। अब बुवाई शुरू होने वाली है।"

कामा की ओर हँसते हुये बोला, "तुम पर कुछ दया भी नहीं करता। कितने प्यारे प्यारे हाथ हैं!"

लड़की के गाल शर्म के कारण सेब-जैसे लाल हो गये और उसने काम में व्यस्त होने का बहाना किया, जैसे कुछ सुना ही न हो! राशित ने उसे बातों में लगाये रखने का प्रयत्न जारी रक्खा। लेकिन उसी समय डाड आ गया। यह उसे अच्छा नहीं लगा।

वह बोला, "इस खेत में तो अंकुर निकल आये हैं, और देखो एक में तो पत्तियाँ भी निकल रही हैं। ऐसा न हो कि रात का कोहरा इन नव विकसित पौधों को नष्ट कर दे!"

डाड ने लड़कियों को क्यारियों की तरफ भेज दिया और कहा, "देखो घास का एक टुकड़ा भी कहीं न रह जाय। हम लोग घास नहीं उगा रहे हैं, तम्बाकू उगा रहे हैं। कामा तुम मसाला तैयार करो और नये पौधों पर छिड़क दो।"

राशित ने कामा से पूछा, "यह कौन मसाला है?"

डाड चिल्लाया, "नौजवान लड़के, बातें बन्द करो। मैं तुम्हें अपनी लड़कियों को प्रेम के चक्कर में नहीं फांसने दूंगा। उन्हें काम से भटकाते हो।"

नीना कामा और राशित के बीच में आ कर खड़ी हो गई और कहा, "सुन रही हो, डाड विगड रहे हैं। मेरा भाई तो और ज्यादा नाराज होगा।" उसने राशित की ओर लजीली आँखों से देखा।"

राशित बोला, "कौन भाई ? मेरे बीच में जो आयेगा उसे मजा चखा दूंगा।" यह कहता हुआ वह तेजी से कुयें की ओर बढ़ गया।

कामा ने कहा, "नीना, वह कितका हंसमुख है !"

नीना ने उत्तर दिया, "वह तुम पर मोहित हो गया है।"

कामा, "झूठ. मैं तो ऐसा नहीं समझती।"

नीना, "वह तेरे ही कारण अब तक यहां रुका था।"

कामा हाथ मिलाती हुई खेतों में पानी डालने चली गई।

राशित चिल्लाता हुआ चला जा रहा था, "हम लोग डर कर मेहनत कर रहे हैं।"

डाड ने देखा कि राशित काम में एक नयी जान डाल गया है। उसने मन ही मन कहा, "अच्छा लड़का है।" लेकिन एक घंटे बाद ही वह राशित द्वारा खड़े किये गये बवाल से तंग आ गया। पर लड़कियां बड़ी प्रसन्न थीं। वे काम कर रही थीं और हंसती जाती थीं। राशित एक साथ चार-चार बाल्टियां लाता था। वह फौजी कमांड भी देता जाता था, "बन्दूक सीधी करो। आगे देखो..गोली चलाओ।"

(१०)

केसो ने सोते सोते सपना देखा कि वह ढालू पहाड़ पर चढ़ रहा है। वह बड़ी जल्दी में था और उसकी सांस फूल रही थी। पर आंखें खोलने पर उसने अपने को खिड़की के सामने बिस्तर पर पाया। वह उठ खड़ा हुआ। उसने अपना लैम्प जला कर रोशनी की और देखा पांच बज चुके हैं।

जल्दी जल्दी कपड़े पहिन कर वह रसोंई घर में गया। उसका बाप रात को जलाई हुई आग के करीब लेटा हुआ बदन गरमा रहा था। इतनी सुबह होने पर भी वह जाग रहा था और मुंह में अपना पाइप रक्खे था।

उसने लड़के से पूछा, "आज इतने सबेरे कैसे उठ गये?"

केसो ने उत्तर दिया, "काम पर जाने का समय हो गया है, पिता। सब से आखीर में पहुँचना अच्छा नहीं लगेगा।"

उसके पिता ने भी भुनभुनाते हुये कपड़ा बदला और कहा, "अपनी बहिन से मेरे जूते लाने के लिये कह दो।"

नीना बगल वाले कमरे में सो रही थी। सोते में उसके होंठ हिल रहे थे और केसो को ऐसा लगा जैसे वह कुछ बड़बड़ा रही हो। पर वह गम्भीर निद्रा में मग्न थी और केसो को उसे जगाना ज्यादा अच्छा नहीं लगा।

केसो ने उसका हाथ पकड़ कर झकझोरते हुये सोचा, पर किया ही क्या जा सकता है ?

लड़की ने करवट बदली, एक क्षण के लिये तकिये में सिर गड़ा लिया, फिर आंखें खोल दीं।

केसो बोला, "काहिल दिन बीत गये। उठो, काम पर जाने का समय हो गया है। अब बसन्त आ गया है।"

आकाश निर्मेघ था। सूरज निकलने में अभी आध घन्टे और थे। तब सब से पहिले क्लिच की चोटियां सोना-जैसी चमकने लगतीं, पर माउन्ट गौगा पहिले ही जैसा उठते हुये सूर्य की किरणें पड़ने पर भी अपना मुर्दनी-भरा सिर लिये खड़ा रहता।

केसो को साकेन का प्रभात बहुत पसन्द था। नये दिन के प्रातःकाल की मधुर, मोहक वायु का आनन्द यहीं लिया जा सकता था। नव प्रभात न केवल नया मादक दिन ले आता था, बल्कि नये-नये विचार, नई नई भावनायें और इच्छायें भी ले आता था।

सब से पहिले केसो और येकप ने हल की देख-भाल किया। हर चीज सुचारु रूप से रक्खी हुई थी। बुड्ढे येकप ने हल को देखा और संतोष की सांस ली। लेकिन बैलों को देख कर उसे उतना संतोष नहीं हुआ।

वह बोला, "जाड़े में ये दुबले हो गये हैं। उनके लिये खाना जुटाना आसान काम नहीं था।"

केसो सहमत नहीं था। उसने पिता की ओर दृष्टि फेंके बगैर कहा, "हम लोग अजीब आदमी हैं। प्रकृति ने हमें बरबाद कर दिया है......। हम चाहते हैं कि मेहनत न करना पड़े, सब चीजें अपने आप मिल जायँ। दिन भर भिखारी जैसी बातें करते हैं। जानवरों के घास-भूसे जैसा व्यवहार करते हैं। उन्हें जाड़ों में चरने के लिये छोड़ दिया करो।......यहां कितनी बढ़िया घास उगती है .....सुखा कर भी रखने लायक होती है।"

येकप बोला, "ठीक ही तो कहते हो। पर पहिले भी कभी किसी ने जानवरों के लिये नाश्ता और भोजन तैयार कर रक्खा है?"

केसो ने उत्तर दिया, "यही तो दिक्कत है कि यहां कोई कुछ जानता ही नहीं। (बैलों को हल में जोत कर) अच्छा चलो चलें।"

खड़खड़ करता हुआ हल लेकर वे चल दिये।

अभी तक खेत में कोई नहीं आया था। प्रातः काल की प्रथम किरणें गिर रही थीं और रात का कुहरा गायब हो रहा था।

केसो ने बैल खोल दिये। बुड्ढा येकप बैठ गया और पाइप में तम्बाकू भरने लगा। उसका लड़का आगे बढ़ कर औरों का इन्तज़ार करने लगा।

थोड़ी देर में पूरी टोली आ गई। गूदल अपनी गाड़ी पर एक हल और ले आया था। हल का फाल शीशे जैसा चमक रहा था।

गूदल ने गर्व से कहा, "असली फाल है।"

एन्टन सुबह की शीत में कांप रहा था। उसने सिगरेट बना कर पीना शुरू कर दिया। बुड्ढे मोरवा को घेर कर दूसरे किसान (जो औरों से उम्र में बड़े थे) उसे छेड़ने लगे।

खेत के दूसरी ओर एक और आदमी की आकृति दिखाई पड़ी। अपने पैरों से खेत की मिट्टी की जांच करता हुआ वह इस टोली की तरफ बढ़ता चला आ रहा था। नज़दीक आते ही वह बोला, "ज़मीन बहुत बढ़िया है, साथियों।"

केसो ने कहा, "गुड मार्निंग, कान्सटैन्टिन।"

कान्सटैन्टिन ने पूछा, "कैसे हो?"

कान्सटैन्टिन ने केसो को अलग ले जाकर कहा, "तुम्हारी टोली सब से पहिले आ गई है। मैं गांव में सब तरफ घूम कर देख आया हूं।"

केसो का सिर गर्व से ऊँचा हो गया।

केसो ने कहा, "उन सब से भी कुछ कहो। उनका उत्साह बढ़ेगा।"

कान्सटैन्टिन ने विरोधभाव प्रकट किया।

"मुझे बख्शो, तुम्हीं जाकर क्यों नहीं कह देते?" उसने कहा।

केसो चाहता था कि कुछ ऐसी बात कही जाय जिससे उनका उत्साह भी बढ़े और रंग भी जम जाय बिल्कुल उस तरह जैसे मोर्चे पर हमला करते समय कमांडर कहता है। कुछ उत्तेजित होकर जो उन परिस्थितियों में स्वाभाविक था, वह कान्सटैन्टिन ने धीरे धीरे कहा, "फसल.......अच्छी होगी। सबसे पहिले तुम्हीं प्रण करो।"

केसो ने समर्थन में सिर हिला दिया और आवाज दी, "साथियों।"

वह इतनी जोर से चिल्लाया था मानो उसके आगे बीस हजार की भीड़ खड़ी हो। सब किसान अपनी टोली के मुखिया की अस्वाभाविक तेज आवाज सुनकर चौंक गये।

केसो बोला, "साथियों, हम खेत में काम शुरू करने जा रहे हैं। यह बड़े महत्व का दिन है। क्यों? क्या आज के पहिले लोगों ने नहीं जोता-बोया था? हाँ, पहिले भी यह सब हुआ था। लेकिन इस बार हम पैदावार को सबसे ऊँचे स्तर पर ले जाना चाहते हैं।.... सौ पूड नहीं.....पांच सौ पूड.....। लड़ाई में हमने एक भयंकर शत्रु को परास्त किया है। हमने संसार को चकित कर दिया। क्या आप समझते हैं कि हम अपनी जमीन को, साकेन की जमीन को, ठीक नहीं कर सकेंगे, हमारा तो नारा है—"सैकड़ों पूड, हजारों पूड.....तनिक भी कम नहीं।"

किसानों ने एक दूसरे पर दृष्टि फेंकी। उनकी समझ में टोली का मुखिया वास्तविकता से दूर चला जा रहा था।

एन्टन ने व्यंग कसा, "हम आपको धन्यवाद देते हैं।"

वे उठ खड़े हुये और हँसने लगे।

केसो उत्तेजित होकर बोलता रहा, "मैं यकीन दिलाता हूँ, ऐन्टन पांच सौ पूड ही नहीं बल्कि और भी ज्यादा....। हम खेतों में ठीक से काम करेंगे—मुख्य वस्तु खाद है।"

किसी ने प्रश्न किया, "खाद कहाँ से लाओगे?"

केसो ने अपना भाषण जारी रक्खा, "हमें खाद की आवश्यकता पड़ेगी। हम गाँव की सड़कों और घास के मैदानों से लाकर बनाएँगे। लेकिन इतने से ही पूरा नहीं पड़ेगा। हमें सस्ती खाद की बड़ी मात्रा में आवश्यकता है! ठीक है, न?"

गुद्दल बोला, "ठीक है, ठीक है। हम सब यही सोचते हैं।"

पर यह साफ था कि केसो का मतलब सब नहीं समझ पाये थे। अच्छी फसल बड़ी अच्छी बात थी। कोई इन्कार थोड़े ही कर सकता था। लेकिन पांच सौ पूड का यकीन दिलाना तो छोटे

मुंह बड़ी बात थी। येकप ने सोचा कि अब उसके लड़के के पैर दलदल में फँस गये हैं।

एक क्षण में अवसर देख कर वह बोला, "खाद हमारी पहिली आवश्यकता है। यह कौन नहीं जानता। लेकिन हम लायेंगे कहाँ से? यही तो समस्या है।"

केसो बिना रुके बोलता रहा, "मैं जानता हूँ, खाद कहाँ से लाई जाय। हमारे पास एक पहाड़ी है, आश्चर्यजनक पहाड़ी है।" वह मर्सी क्लिफ की बड़ाई करने लगा। लेकिन जितनी अधिक वह बड़ाई करता था उसके दूसरे साथी उतना ही अधिक शंकित दृष्टि से देखने लगते थे। यदि उसकी तमाम बातें केवल कोरी डींग हों तो? मान लो कि पहाड़ी पर फासफोराइट हो। लेकिन उसमें क्या था कौन जानता है? केसो ने अनुभव किया कि उसकी बातों में वे विश्वास नहीं कर रहे हैं। एक क्षण के लिए उसका हृदय भी शंकित हो गया।

मान लो यदि उस पहाड़ी से कोई मदद न मिली, तब क्या होगा?

समय ज्यादा लेने के ख्याल से उसने लोगों से बैठ जाने के लिए कहा। पर वहाँ पर बैठने के लिए कुछ था ही नहीं।

उसी समय कान्सटैन्टिन उसके पास आया और उसके कानों में कहा, "कुछ जोतने-बोने के बारे में भी तो कहो। खेत ठीक करने, समय पर बोने के बारे में भी तो कहो। क्या ये सब चीजें मददगार नहीं साबित होंगी?"

केसो ने कान्सटैन्टिन की ओर कृतज्ञतापूर्वक देखा। थोड़ा उत्साहित होकर वह बोला, "मेरे प्यारे साथियों, यदि हमें खाद न भी मिले तब भी.....खेती के नियम ऐसे हैं.....यदि हम गहरी जुताई

करें.....बीस-पच्चीस सेन्टीमीटर तक; दो बार जोतें, ठीक से निराई करें, घास-फूस को जड़ से निकाल दें.....सबसे अच्छे सामूहिक खेतों का अनुभव है कि हमको सीधी लकीर में बोना चाहिये, और लकीरें भी बराबर दूरी पर होनी चाहिये। मैं जानता हूँ कि आप में से बहुतों को ये बातें अजीब लग रही हैं। लेकिन यदि आप नीचे मैदानों में जायँ तो आप अपने दिल पर हाथ रखकर ठंढी आहें भरते हुये कहेंगे कि वे हमसे अच्छा काम करते हैं।"

सभी किसान दत्तचित्त होकर सुनने लगे।

केसो ने अपना भाषण जारी रक्खा, "आप स्वयं देखिये कि हम ठीक से काम नहीं करते। हम जमीन को ठीक करना बेकार समझते हैं। हम समझते हैं कि यदि हमारे दादा-परदादा कुछ नहीं कर सके तो हम भी ठीक नहीं कर सकेंगे। पर यदि हम योजना बनाकर मेहनत से काम करें, सब मिल कर काम करें—तो मैं यकीन दिलाता हूँ—३०, पूड प्रति हेक्टर से कम नहीं पैदा होगा। सारा देश आगे बढ़ा चला जा रहा है और यह हमारे लिए शर्म की बात है कि हम साकेनियन पिछड़े हुए हैं।"

कान्सटैन्टिन ने उसका समर्थन किया। उसने कहा "केसो ठीक कह रहा है।"

ऐन्टन आगे आया खांस कर गला साफ करते हुये वह बोला—"यदि हम जमकर मेहनत कर डालें तो बहुत सम्भव है कि हमारी फसल बहुत अच्छी हो।" फिर वह भीड़ में जाकर मिल गया

सब लोग हँस पड़े।

ऐन्टन के जाने के बाद केसो ने चिल्ला कर कहा, "मुझे तुमसे बाद में कुछ बातें करनी हैं।"

कान्सटैन्टिन ने हाथ पकड़ कर उसे जमीन पर उतार दिया।

केसो ने हैट उतारते हुए कहा, "हाँ, अब हमको काम शुरू कर देना चाहिये।"

येकप बेटे पर नाराज था। उसने सोचा, "कहीं यह पागल तो नहीं हो गया है। क्यों इतना बढ़-बढ़कर बोल रहा है? पर वह टोली के मुखिया को इतने लोगों के सामने नहीं फटकारना चाहता था। उसने सोचा कि घर जाकर इसका दिमाग दुरुस्त करूँगा।"

केसो ने टोली को आदेश दिया, 'खेत में से बड़े-छोटे सब कंकड़ निकाल बाहर करते हैं। तमाम पत्थरों और कूड़ा-करकट को उस खड्ड में फेंक कर आग लगा दो। यह पहिला काम है।"

कान्सटैन्टिन बोला, "खेत के किसान साथियों, वसन्त में फसल को बोने के लिए तुम सबों से पहिले आये हो। कल तुम्हारा उदाहरण देखकर सब लोग काम करने निकलेंगे। अब तो देखना है कि आप लोग किसी काम में भी नहीं पिछड़ेंगे।"

टोली के सभी सदस्यों ने चिल्ला कर समर्थन किया। कोई गाना गाने लगा और सब उसके सुर में सुर मिलाकर गाते हुये काम पर चले गये।

केसो ने सोचा यह पहला कदम है। साकेन में इतनी जल्दी जुताई, पहिले कभी नहीं शुरू हुई थी। और यह कोई साधारण बात नहीं थी।

(११)

केसो और कान्सटैन्टिन एक छोटे टीले पर चढ़ कर देखने लगे—जैसे फौजी कमांडर सेना को आगे बढ़ते हुये देख रहे हों। गूदल और उसके साथी जंगल के करीब खेत के एक हिस्से को साफ कर रहे थे। ऐन्टन को खेत के दूसरे किनारे पर काम दिया गया था, ताकि उस पर नजर रक्खी जा सके। हर आदमी अपने अपने हिस्से के काम में लग गया था।

कान्सटैन्टिन ने हाथ के कागज को पढ़ते हुये कहा, "अभी तक तो सब ठीक है। कल तक और लोग भी मैदान में आ उतरेंगे।"

केसो ने कहा, "यह बहुत जरूरी है कान्सटैन्टिन, कि कल तक सब लोग काम पर आ जायं।"

कान्सटैन्टिन, "यह तो तय कर लेंगे। पर मैं सोच रहा था कि...वास्तव में काम चल निकलेगा या नहीं। तुम खाली हवाई बातें तो नहीं कर रहे थे?"

केसो ने बिना कुछ कहे हुये कान्सटैन्टिन का हाथ पकड़ कर एक तरफ ले गया। उसने कहा, "यहां आओ, तुमसे कुछ बातें करनी हैं।"

केसो पगडंडी पर चलने लगा जो ढालू जमीन की तरफ ले जाती थी। पगडंडी एक बड़े सांप के समाने आगे जाकर झाड़ियों में लुप्त हो गई थी।

केसो कुछ उत्तेजित होकर बोला, "क्या तुम देख रहे हो? उस पहाड़ी का ध्यान मुझे हर समय रहता। बिना उसके मुझे शान्ति नहीं है।......मैंने वापस आते समय जिला अधिकारियों से बातें की थीं। हर तरफ तुम्हें अच्छी फसल, ज्यादा पैदावार की ही बातें सुनाई देतीं थीं। मैंने सोचा कि हम साकेनियन ही क्यों पिछड़े रहें? हम हाथ बांधे कब तक बैठे रह सकते हैं? यदि मेरे पैर न खराब रहे होते तो मैंने पिछले बसन्त में ही यह प्रयत्न किया होता।"

जहां वे खड़े थे वहां से पहाड़ी तक जाने का केवल पाँच मिनट का रास्ता था। यह पहाड़ी केसो के मस्तिष्क में बहुत दिनों से घूम रही थी। लड़ाई शुरू होने के पहिले ही उसने इसकी असलियत का पता लगाने की योजना बना ली थी। उस बुढ्ढे बीमार अफसर का लिखा हुआ कागज़ का टुकड़ा हर समय उसके दिमाग में चक्कर काटा करता था। लड़ाई के पहिले उस पहाड़ी के बारे में गांव में बहुधा बातें हुआ करती थीं। जिले के अखबार में भी किसी ने इसके बारे में लिखा था और सामूहिक खेत के लुहार को एक मशीन देने का भी वादा हुआ था। परन्तु उन्हीं दिनों युद्ध छिड़ गया। केसो बाहर चला गया। लुहार मारा गया। साकेनियन भी उन बातों को भूल-से गये थे। और जब वह घर

वापस लौट रहा था, देश की पश्चिमी सीमा पर उसे इस पहाड़ी का ख़याल आया। वह रेलगाड़ी के ऊपरी बर्थ में लेटा हुआ अंधेरे ही में ट्रेन की छत की कड़ियां गिन रहा था। नीचे कुछ वीर सिपाही गप्पें लड़ा रहे थे। वे भी पिछली बातें नहीं कर रहे थे बल्कि भविष्य के बारे में सोच रहे थे। केसो के मस्तिष्क में भी भविष्य ही चक्कर काट रहा था। वह अपने को घर में देख रहा था। काकेशस पहाड़ के नीचे से वह उस पहाड़ी को देख रहा था।...'

केसो और कान्सटैन्टिन कदम से कदम मिला कर तेजी से आगे बढ़े जा रहे थे। दोनों ने साथ ही साथ एक नाला पार किया। कूद कर वे साथ साथ एक मैदान में आ गये और सामने उनके वह पहाड़ी थी। उसके किनारे-किनारे हरे हरे पेड़ उगे हुये थे। चोटी पर एक वक्राकार पेड़ था, जैसे प्रश्न वाचक चिन्ह हो!

केसो ने लम्बी सांस ली। उसने टोपी उतार कर सिर से बाल पीछे हटाये।

उसने चारों ओर दृष्टि दौड़ा कर कहा, "सुनो, हमारे खेतों की मिट्टी कमजोर है। समुद्र-तट की मिट्टी की तरह कम उपजाऊ है। हमारे दादा-परदादा ने इससे फ़सलें पैदा कर कर इसकी उत्पादन-शक्ति नष्ट कर दी है। यदि हम आराम से रहना चाहते हैं तो इसमें खाद दे देकर इसे फिर से उर्बरा बनाना होगा। लेकिन हम खाद कहां से पायें? यही समस्या विकट है। यहां न कोई सड़क है, न पुल हैं। केवल हवाई जहाज आ-जा सकता है। कोई तो कारण होगा जो हमारे पूर्वजों द्वारा इसका नाम मर्सी क्लिफ रक्खा। यदि हम यहां की मिट्टी अपने खेतों पर डालें तो...।"

क़ान्सटैन्टिन ने प्रश्न किया, "क्या, ये चट्टानें?"

केसो, "चट्टानें क्यों ? हम उन्हें पीस कर...मेरा ख्याल है उन्हें हथौड़े से कूटना पड़ेगा। एक बार तो प्रयोग करना ही चाहिये।"

कान्सटैन्टिन ने चट्टान के दो टुकड़े उठा लिये और दोनों को एक दूसरे से टकराया। चट्टानों को तोड़ कर हथौड़े की मदद से चूरा बना देना आसान काम नहीं था. कान्सटैन्टिन उन पत्थरों को लेकर खेलने लगा, एक दो कंकड़ उसने आकाश में फेंके और यह देखने की भी कोशिश नहीं की कि वे कहां गिरते हैं।

अपने हांथ झाड़ कर उसने केसो के कन्धे पर रक्खा और कहा. "केसो, तुम पागल हो।"

केसो ने कहा, "यह कुछ नहीं। एक चीज़ होती है जिसे सुपर-फासफेट कहते हैं। वह कारखानों में बनती है। पर प्रकृति ने तो हमारे पास बनी बनाई ही भेज दी है। इसे प्राकृतिक फास-फोराइट कहते हैं।"

कान्सटैन्टिन ने कहा "पहिले कभी नहीं सुना था।"

केसो बोला, "तुम हमारे सेक्रेटरी हो और समूहिक कृषि के स्थानापन्न अध्यक्ष हो। बहुत कुछ तुम पर निर्भर है। निकोला, वह तो निकम्मा, काहिल है...कुछ नहीं करने का। मेरा प्रस्ताव है कि हम इस काम को संगठित रूप से करें। सब आदमियों को इसके बारे में बतायें, और गाड़ियों और आदमियों को काम में जुटा दें। सामूहिक कृषि के सभी लोगों की मदद से यह काम आसानी से हो जायेगा।" केसो की आवाज में विश्वास लहरा रहा था।

कान्सटैन्टिन काफी देर तक उसकी बातें चुपचाप सुनता रहा फिर रोक कर बोला, "मेरे दोस्त, ख्याल तो बहुत ऊंचा है। लेकिन यह आसान काम नहीं है। इस पर गम्भीरता से सोचना चाहिये।"

केसो ने कहा, "लेकिन बसन्त...बसन्त रुका थोड़े ही नहीं रहेगा।"

कान्सटैन्टिन ने शान्त स्वर में कहा, "यदि यह बसन्त बीत जायेगा तो और बसन्त तो आयेंगे। मेरी राय तो यह है कि पूरी योजना पर गम्भीरता से विचार होना चाहिये। पहिले इसका प्रयोग केवल उदाहरण के लिए किया जाय। जिला-अधिकारियों और कृषि-विशेषज्ञों से भी बातें करने की आवश्यकता है। तुमने जमीन को ठीक तरह जोतने-बोने आदि के बारे में भी तो बड़ी उपयोगी बातें बताई थीं। यही ठीक भी था। सामूहिक कृषि को विकसित करने का तरीका भी यही है।" थोड़ा रुक कर उसने प्रश्न किया, "क्या तुमको इस पहाड़ी पर पूरा विश्वास है? तुम इसका क्या नाम बताते हो—फासफोराइट?"

केसो को इस प्रश्न से बड़ा धक्का लगा। उसी आँखों में पानी आ गया और बिना एक शब्द बोले हुये वह चला गया। लौटती वक्त कान्सटैन्टिन उसे सांत्वना दे रहा था। केसो गुस्से से भरा होने के कारण उसकी एक बात भी नहीं सुन पाया। यही एक व्यक्ति था जिसके आगे उसने अपना दिल खोल कर रख दिया था और अब वही उसमें अविश्वास पैदा कर रहा था। यह मुँह में थप्पड़ मारने के समान था। इससे शारीरिक मार से ज्यादा चोट पहुँची थी। लोग उसका विश्वास नहीं करते थे......।

वे फिर खेत में वापस आ गये थे। कुहरा मिट गया था और सूर्य की प्रथम रश्मियाँ पृथ्वी पर पड़ रही थीं। आकाश में चिड़ियाँ चहचहा रही थीं। दिन काफी गर्म मालूम होता था।

कान्सटैन्टिन ने मुस्कराते हुये कहा, "केसो, काम शुरू करने के पहिले ठीक से सोच लो। पहाड़ी कहीं भाग नहीं जायेगी। मुख्य

चीज है मिट्टी को ठीक रखना, हर काम समय पर होना और लगन के साथ होना। तुमने खुद कहा था कि पहाड़ी हो या न हो फसल बढ़िया होगी। ऐसी फसल, जैसी पहाड़ियों में कभी हुई ही नहीं।"

केसो ने उसकी ओर दृष्टि फेंकी पर उसमें पहिले जैसा उल्लास नहीं था। वह भुनभुनाता हुआ बोला, "आप की राय के लिये बहुत बहुत धन्यवाद। कामरेड सेक्रेटरी......मेरा ख्याल है, मैं उसके बगैर भी काम चला लूँगा।"

(१२)

कामा कुछ ऐसी मुद्रा में बैठी थी कि आप कह नहीं सकते थे कि वह इतनी प्रसन्न क्यों थी। इसके बारे कोई भेद नहीं था। कोई विशेष कारण भी नहीं था, पर थी वह प्रसन्न। सम्भव है कि खुशी का कारण ठंढी चाँदनी रात रही हो! कदाचित् है इसका कारण उसके साथ साथ केसो मीरबा का चलना भी हो सकता था, या यह भी कि जीवन के इक्कीसवें बसन्त में ऐसी मधुरता अपने आप आ जाती है!

कारण कुछ भी रहा हो, केसो ने देख लिया था कि उसकी प्रेयसी आज अन्य दिनों से अधिक प्रसन्न थी। प्रेयसी से बातें करते समय भी उसके दिमाग से सुबह वाली बातें भूली नहीं थीं। स्वयं अपने दिमाग में उठने वाले अविश्वास के कारण वह निकोला और कान्सटैन्टिन से बहुत गरम गरम बातें कर चुका था। उसकी योजना के प्रति जो तनिक भी अविश्वास दिखलाता था उससे वह भड़क उठता था। उसके दिमाग में यह साफ नहीं

था कि जब जिला अधिकारी उससे ठोस सुझाव मांगेंगे तो वह क्या उत्तर देगा ? केसो यह अच्छी तरह जानता था कि यदि मर्सी क्लिफ की मिट्टी बिना किसी लाभदायक प्राकृतिक तत्व के रही तो खाद डालकर अधिक मक्का पैदा करने की उसकी योजना पड़ी रह जायेगी। फिर भी वे केवल अपने हाथों पर भरोसा रख कर यदि लगन से काम करें तो भी काफ़ी पैदा कर लेंगे। उस पहाड़ी और खाद की मदद के बगैर भी बहुत कुछ किया जा सकता था। चाहे जो कुछ भी हो, यह निश्चित था कि पहाड़ी की मिट्टी के तत्वों के बारे में उसे भी अभी पूर्ण ज्ञान नहीं था और उसे मालूम करने के पर्याप्त साधन भी साकेन में मौजूद नहीं थे। इसके लिये विशेषज्ञों की, प्रयोगशाला की और विश्लेषण की आवश्यकता होगी......।

कामा जोरों से हँसने लगी, जब उसने यह बताया कि कैसे राशित चार चार बाल्टी खाद एक साथ ले आता था। जब केसो के कानों में यह भनक पड़ी तो उसने पूछा, "राशित वहाँ क्या कर रहा था ?"

कामा ने प्रश्न किया, "क्या पूछते हो ? क्या तुम सुन नहीं रहे थे ? मैं एक घंटे से तुम्हें बता क्या रही हूँ ! उसने हमारी मदद की थी। राशित बड़ा हँसमुख युवक है। नीना और हम बड़ी देर तक हँसते रहे।"

केसो,—"मेरा ख्याल है कि तुम लोग उससे दोस्ती कर रही थी।"

कामा नाक सिकोड़ कर बोली, "शायद...पर थोड़ा थोड़ा।"

वे कुछ देर तक चुपचाप चलते रहे।

केसो ने फिर प्रश्न किया, "वह टर्की मुर्गा निकोला क्या कर रहा था ?"

कामा ने बताया कि वह उसके घर आया था और काम-काज के बारे में पूछताछ कर रहा था। उसने बताया कि वह काम से जा रहा था और रास्ते में घर पड़ने के कारण रुक गया था।

केसो ने कहा, "वह झूठ बोलता था। झूठा है वह !"

कामा, "उसने बताया कि हम पर लगने वाला टैक्स माफ हो जायेगा। बुड्ढों पर टैक्स कम लगाने का कोई नियम है ?"

केसो, "और तुम्हारे घर में इतना बुड्ढा कौन है ?"

कामा, "माँ और बाप।"

केसो, "क्या तुम नहीं समझ पा रही हो कि वह तुम्हारा प्यार पाने के लिये तुम पर इतनी दया दिखला रहा है ? उसे टैक्स कम करने का कोई अधिकार भी तो नहीं है। इसके अतिरिक्त तुम्हारे माँ बाप इतने बुड्ढे भी तो नहीं हैं !"

कामा, "पर मान लो यदि ऐसा कानून हो तब ?"

केसो के कान उसकी ओर नहीं थे। वह ऐसी लड़की पर मन ही मन नाराज हो रहा था, जो तमाम लोगों को अपने प्रति प्रेम-व्यवहार प्रकट करने का मौका देती थी। उसके तानों का कोई अन्त नहीं था। कामा ने विरोध प्रकट करने का प्रयत्न किया। हर प्रकार की बात से असफल होकर वह रोने भी लगी। दुख के उन क्षणों में केसो ने उसे खींच कर अपने से चिपका लिया। उसने भी विरोध नहीं किया।

उसने कामा के ठंढे गालों पर अपने गाल रख कर उसके कानों में कुछ अस्पष्ट शब्द कहे। कामा उनका मतलब तो न

समझ सकी पर संतुष्ट जरूर हो गई। एक दूसरे से समझौता कर वे आगे बढ़े। चाँदनी रात का आनन्द लूटते हुए वे युगल प्रेमी बातें करते हुए घूमने लगे। दुनिया की सब बातें वे भूल गये थे। केसो प्रसन्न था कि कामा इतनी सीधी साधी, प्रसन्न चित्त और देर तक न रूठने वाली लड़की थी।

कामा ने पहिले चुप्पी तोड़ी।

उसने पूछा, "तुम अपने बारे में कुछ भी क्यों नहीं बताते ?"

केसो ने स्वाभाविक ढंग से साधारण-सा उत्तर दिया, "बताने को है ही क्या ? रोज का काम। तुम्हें मालूम है कि हम लोगों ने जुताई आरम्भ कर दी है। लोगों का कहना है अभी कुछ जल्दी है....। वास्तव में सारा साकेन आश्चर्य चकित हो गया है, लेकिन हमको इसकी परवाह नहीं है। हम नियमानुसार काम कर रहे हैं, मैंने कान्सटैन्टिन से भी बातें की थीं।"

कामा ने आलिंगन से मुक्त होने का प्रयत्न करते हुये कहा, "तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिये था। वह भला आदमी है। यदि तुम उसके साथ न चल सके तो अपने को ही दोष दोगे।"

केसो बोला, "ऐसा नहीं है, कामा। वह मुझ पर विश्वास नहीं करता। हमको बैल की सींगें पकड़ा कर काम लेता है, पर वह ....?"

केसो ने अपनी समस्त योजनायें उसके सामने रख दीं। उस पहाड़ी में कुछ था, यह तो वास्तविकता थी। प्राकृतिक फासफोराइट उनकी पहुँच के अन्दर था। सामूहिक कृषि के लिये तो वह अपरिचित खजाना था। लेकिन फिर भी कान्सटैन्टिन उसका पूर्ण समर्थन नहीं कर रहा था।

कामा बोली, "फिर भी तुमको उससे झगड़ना नहीं चाहिये। वह भला आदमी है।"

वे लोग एक ऐसे स्थान पर टहलते टहलते पहुँच गये थे, जहाँ वह साधारणतया उसका हाथ छोड़ देती थी, अपने बाल रूमाल से बांध देती थी, और चौकन्नी-सी हो जाती थी। लेकिन आज केसो को जल्दी नहीं थी। वह कामा को एक बड़े पेड़ के नीचे खींच ले गया और उसके तने का सहारा ले कर वे आराम से बैठ गये।

हवा बहुत निर्मल और स्वच्छ थी। साकेन नदी की घाटी से पानी बहने की आवाज छन छन कर आ रही थी। साकेन के टेढ़े-मेंढ़े रास्ते पर चांद की रुपहली ज्योति फैली हुई थी।

इस मनमोहक दृश्य को, दोनों प्रेमी बैठे बैठे जाने कब तक देखते रहे। कामा उस नीरवता को भंग करने वाली प्रत्येक आवाज को ध्यान से सुनती थी।

उसने केसो से पूछा, "तुम ख्याति प्राप्त करने के चक्कर में तो नहीं हो?"

केसो उस समय कल्पना जगत में काफी ऊँचाई पर उड़ रहा था। शायद माउंट गौगा के ऊपर उड़ने वाले बादल उसके मस्तिष्क में मंडरा रहे थे। कामा के प्रश्न को वह ठीक तरह सुन नहीं पाया।

उसने प्रश्न किया, "तुमने क्या पूछा, कामा? .... ख्याति? मैं......मैं तो नहीं जानता। तुमने कैसे समझा?"

कामा ने उत्तर दिया, "यों ही।"

उसके बार बार पूछने पर कामा ने अपना दिल खोल कर रख दिया। वह बोली, "निकोला ने मेरे घर वालों से कहा है कि तुम लम्बी-चौड़ी डींग मारा करते हो।"

केसो, "उसने और जोरदार शब्दों में कहा होगा ?"

कामा, "सम्भव है।"

केसो हंसा, "ख्याति ! .... शब्द तो काफी महत्त्व का है।" मैं क्या कह सकता हूँ ! .... मैं तो मोर्चे पर था। मैं तुम्हारी और साकेन की बहुत याद किया करता था। ख्याति का विचार तो कभी मस्तिष्क को छू भी नहीं सका था।"

कामा, "तुम अपने मेडल क्यों नहीं लगाते हो ?"

केसो ने उसके गालों पर प्रेमपूर्ण थपकियां दीं और बोला, "यदि तुम्हारी इच्छा है, तो मैं पहिना करूँगा। विशेष तौर से छुट्टियों के दिनों में ....।"

कामा, "नहीं ! तुम कोरी डींग मारने वाले आदमी नहीं हो।"

केसो ने कामा को अपने और नजदीक खींच लिया। उसने भी अपना सिर उसके वक्ष स्थल पर रख दिया। वे रात्रि के समान ही चुपचाप बैठे रहे।

(१३)

सभी टोलियां पूरी ताकत से काम कर रही थीं। केन्नो को बेकार वक्त गंवाना नागवार मालूम देता था। काम में थोड़ी भी ढिलाई आने पर वह बरस पड़ता था। ऐन्टन बहुधा उसकी डांट का शिकार होता था। सचमुच पूरी टोली में ऐन्टन ही से काम लेना सब से मुश्किल था।

सुबह भी वह खेत पर देर में आता था, कभी वह बीमार रहता था, या कभी उसके बच्चों को खांसी आया करती थी।

एक दिन जब गुद्ल ऐन्टन को शिक्षा दे रहा था, तो उसने कहा, "मैं जैसा हूँ वैसा ही अच्छा हूँ। तुम मुझे अकेला छोड़ दो ....मैं किसी न किसी प्रकार अपना काम चला लूंगा ...... मैं किसी न किसी प्रकार जीवन यापन करता जा रहा हूँ और आगे भी किसी न किसी तरह गाड़ी खींच ही ले जाऊँगा। मेरे ऊपर हर समय बिगड़ते रहने से क्या लाभ? मेरे भाई! मुझे अपनी स्वतन्त्रता भली है ...... भली है।"

केसो आकर उनके पास बैठ गया।

उसने कहा, "मेरे दोस्त जरा अपनी स्वतन्त्रता का मतलब तो समझाओ।"

ऐन्टन चीख पड़ा, "क्या मतलब है ? देखो, मैं बताता हूँ। मैं अपनी बुद्धि से काम करना चाहता हूँ, न कि दूसरों की मदद से। मुझे ऐसे सिखाते हो जैसे मैंने कभी मक्का बोया ही न हो ! मेरे भाई, मैं अपनी अक्ल से ही सब काम करूँगा।"

केसो, "और यदि मान लो कि वह बहुत कम है ?"

ऐन्टन, "क्या कहा ?" उसका मुँह गुस्से से लाल हो गया और वह उछल पड़ा।

केसो ने सभी किसानों की ओर देख कर कहा—"सुनो, हमारे दोस्त ऐन्टन का कहना है कि वह केवल अपनी समझ पर भरोसा रखता है। और मैं कहता हूं कि वह अवारा है, निकम्मा है। कई साल पहिले जब उसे केवल अपनी अक्ल का सहारा था, तब रहने के लिये घर की जगह उसके पास झोंपड़ी थी। जब वह सामूहिक कृषि में सम्मिलित हुआ, हम सब ने उसकी सहायता की तब उसका घर बना। हमने ऐन्टन को पैर जमाने में मदद दी और अब वह हम पर गरम हो रहा है।"

ऐन्टन ने कहा, "ऐसा कुछ नहीं है।"

केसो ने बोलना जारी रक्खा, "साथियों, मैं पूछता हूं, क्या यही कृतज्ञता है ?"

गूदल ने समर्थन किया, "ठीक कहते हो, बिल्कुल ठीक......।"

कोई और बोला, "दिमाग दुरुस्त करने की आवश्यकता है।"

ऐन्टन मुँह में पाइप रक्खे, टुकुर-टुकुर निहारता रहा। केसो ने यह देखकर, कि सभी किसान उसके साथ हैं, और जोर से

बोला, "ऐन्टन देखो, यदि तुम मेरी टोली में नहीं रहना चाहते तो कोई जोर जबर्दस्ती थोड़े ही है। पर हाँ, बाद में अफसोस मत करना, और हाँ, यदि तुम हमारे साथ काम करना चाहते हो तो, हमें बेवकूफ बनाना छोड़ दो और काम में लग जाओ, समझे. . .।"

सभी किसान अपनी अपनी जगह पर चले गये। ऐन्टन भी सिर पर टोपी रख कर उन्हीं के पीछे पीछे चल दिया।

दोपहर में निकोला आया। उसने खेत पर नजर दौड़ाई और मिट्टी के एक लोंदे को पैरों से फोड़ते हुये प्रश्न किया, "काम हो रहा है?"

केसो ने उसके पास जाकर अभिवादन किया।

निकोला यों ही इधर उधर देखता रहा और फिर पूछा, "कितना?"

केसो, "तुम्हारा मतलब गहराई से है? करीब बीस-पचीस सेन्टीमीटर।"

निकोला, "खाद का प्रयोग करने वाले हो?"

केसो (कुछ ऊबते हुए), "कोई एतराज है?"

निकोला, "मुझे! मुझसे क्या मतलब। मुझसे तो तुमने इजाजत भी नहीं ली।...यदि काम अच्छा हो जाय तो ठीक है..हम सब तुमको धन्यवाद देंगे। यदि नहीं तो फिर समझ लेंगे।"

केसो ने निकोला के हाथ में हाथ डालते हुये कहा, "अच्छा, तो फिर क्या हो? तुम परेशान मत हो। मैं सब कागज़ पर लिख कर तुमको दे दूंगा।"

निकोला, "कागज पर? . (उसे कागजों से बड़ा डर लगता था)।"

केसो, "हाँ, हाँ। एक पूरी रिपोर्ट......।"

इस टोली के काम से निकोला संतुष्ट था।

निकोला ने कहा, "देखता हूँ, ऐन्टन बड़ी लगन के साथ काम कर रहा है।"

केसो बोला, "अभी उससे थोड़ी बातें हो गई थीं।"

निकोला ने उससे जाने की इजाजत ली क्योंकि उसे और टोलियों के कामों का भी निरीक्षण करना था। और जगह इतना अच्छा काम नहीं हो रहा था।

केसो ने कहा, "काम सुचारु ढंग से हो रहा है। नियंत्रण भी ठीक है। अच्छा अब चलो एक गाना गायें।"

साकेनियन इस काम से पीछे कभी नहीं हटते। वे अच्छे गवैये होते हैं। सब किसान इकट्ठा हो गये और शुरू में बेसुरा पर बाद में सुर में सुर मिला कर गाने लगे। गीत से उनका उत्साह और बढ़ गया। नीचे रहने वालों ने एक दूसरे से पूछा, "यह गाना कहाँ गाया जा रहा है?" पर वे किसान बे फिक्र होकर गाने में मस्त थे।

पहाड़ी के नीचे,
घासों पर,
था एक हिरन।
छोटा,
बहुत छोटा ……
देखा है, तुमने
हिरन,
कभी पहाड़ी के नीचे ?
प्रतीक्षा करता है,
वह
प्रेयसी के लिये,

सारे दिन..........
देखा है तुमने,
वह हिरन ?
सुन्दर धूप में,
करते हुये प्रतीक्षा।

(१४)

राशित का ऐसे समय में साकेन वापस आ जाना, जब कि सड़क को चलने के लिये अनुपयुक्त समझा जाय, घर घर में चर्चा का विषय बन गया था। उसने कैसे यात्रा की, रास्ते की दिक्कतें कैसे दूर कीं ? वह अकेले आया या अनुभवी शिकारियों ने उसकी सहायता की ? राशित हर प्रश्न का उत्तर हँस कर दे देता था। हर काम में वह जिला-अधिकारियों से मदद पाने का जिक्र कर देता था। ऐसे आदमी, जो राशित को पहिले से नहीं जानते थे, उसकी बातों से प्रभावित हो जाते थे कि वह अवश्य बहुत बड़ा आदमी होगा। राशित के इस इरादे से, कि वह सामूहिक कृषि संघ में एक जूते की दूकान खोलेगा, लोग आश्चर्य-चकित हो गये।

उसने गर्व से एलान किया, "मैं ऊँचे दर्जे का जूता बनाने वाला हूँ।"

इस तरह की बातें साकेन में कभी सुनने को भी नहीं मिली

साकेन में......बढ़िया जूतों की दूकान......अनहोनी बात थी। पहिले तो किसी ने विश्वास भी नहीं किया। लोगों ने गाँव की सोवियत के सेक्रेटरी से पूछताछ की। उसने बताया कि राशित जूतों की दूकान खोलने जा रहा है। यह सचमुच अचम्भे में डाल देने वाली खबर थी।

उसके बाद ही केसो मीरबा के नये काम की खबर मिली। लोगों ने उसकी तम्बाकू और मक्के की फसल का अन्दाज सुन कर दांतों तले अंगुली दबा लिया। राशित की बात पीछे पड़ गई। लोग केसो मीरबा की बातों की चर्चा अधिक करने लगे।

इस बात में लोग ज्यादा दिलचस्पी लेने लगे। यह भी सम्भव था कि लोग उसकी बात में विश्वास न करें, उससे असहमत रहें, पर इतनी अच्छी फसल का अन्दाज सुख-दायक था।

जब लोगों ने गाँव की सोवियत के अध्यक्ष से केसो मीरबा की आश्चर्यजनक योजना के बारे में प्रश्न किये तो उसने गोलमटोल जवाब दिये। खुले तौर पर वह उनका समर्थन करने के लिये तैयार नहीं था। पर वह उनको झूठ भी नहीं बताना चाहता था, मालूम नही सारी योजना कैसे कार्यान्वित हो ? साकेन की परिस्थितियां अजीब थीं। कोई हाथ पर हाथ धरे बैठा भी नहीं रह सकता था पर केसो की तरह कोई लम्बी उड़ानें भी नहीं भर सकता था।

अचरज की बात तो यह थी कि केसो की योजना में सबों से ज्यादा दिलचस्पी सहकारी दूकान के मैनेजर अहामुर को थी।

एक दिन विरक्ति पूर्ण भाव से उसने राशित से प्रश्न किया, "क्या वे सिलवर मीडो' में बारूद बनाने जा रहे हैं ?"

राशित ने कहा, "सम्भव है ।" ज्यादा शराब पी जाने के कारण राशित का दिमाग ठीक भी नहीं था।

अडामुर ने कुछ सोच कर कहा. "लोगों का कहना है कि वह पहाड़ी बड़ी अमूल्य है ......आश्चर्य होता है, भाई ।"

पर राशित इस समय इस दुनिया में था । वह हवा से बातें कर रहा था। अपने मित्र की बात पर ध्यान न देकर उसने मदिरा का प्याला हाथ में लेकर मित्र की स्वास्थ्य कामना की और कहा, "यह प्यार करने की वस्तु है ।"

अडामुर मुस्करा दिया।

राशित बहक रहा था, "तुम जानते हो वह जमीन मेरी है।... कम से कम पहिले तो थी ही।"

अडामुर ने अचरज भरे स्वर में पूछा, "कौन जमीन ?"

राशित ने उत्तर दिया, "वह सारी जमीन और पहाड़ी मेरी ही थी। और मेरे दोस्त, अब लोग उससे अपना भविष्य निर्माण करने जा रहे हैं।"

अडामुर, "क्या बकते हो ? केसो बुड्ढ़ा तो है नहीं, तुम्हारा दिमाग ठिकाने लगा देगा।"

राशित, "क्या तुम यही समझते हो । वह मेरा रिश्तेदार है।"

राशित ने अपना खाली गिलास अडामुर को दिखाया और उसने उसमें फिर शराब उडेल दिया।

राशित ने कहा, "अडामुर उसे मिलने की कोशिश करो, उसकी थोड़ी खुशामद करो। सम्भव है कुछ हिस्सा मिल जाय"""" कुछ लाभ हो जाय। साकेन तो भेड़िये की मांद है"""""याद रक्खो, यह साकेन है। यह अजीब है""""इसके बराबर कोई नहीं है।"

अडामुर ने उत्तर दिया, "कैसो चालाक आदमी है। लोग कहते हैं वह आधी दुनिया की सफर कर चुका है। देखो, क्या होता है?"

दोनों ने एक दूसरे के गिलास से गिलास मिला कर मदिरा पी।

राशित बड़बड़ाया, "इसमें देखो बढ़िया जूतों की दूकान की झलक। अपने प्यार का भविष्य। मैंने सुना है कि कामा पर तुम्हारा दबाव है। यदि है तो बहुत बुरा है।"

अडामुर भी बड़बड़ाने लगा, "एक कोट......एक घोड़ा...... विश्वास करने योग्य मित्र......और तुम्हारी पत्नी तुम्हारे जेब में।"

राशित आश्चर्य-चकित हो कर अडामुर की तरफ देखने लगा। उसने पूछा, "यदि मैं तुम्हारी मदद मांगू?"

अडामुर ने अपना हाथ बढ़ा दिया और कहा, "यह है।"

(१५)

जुताई खत्म होने पर आ गई थी। बस दो-चार खुले हुये दिनों की और जरूरत थी। लेकिन मौसम खराब होने जा रहा था। दक्षिण से बादल चढ़े चले आ रहे थे। साकेन के ऊपर से जाते हुये वे बूदां-बादी भी कर रहे थे।

केसो का कुल समय—प्रातःकाल से काफी देर तक रात में—खेत पर ही व्यतीत होता था। उसके हाथ भरे हुये थे। लोगों को उनके काम बताना, जुताई की गहराई को जांचना, दूसरे दिन के काम के लिये साधन जुटाना आदि, आदि। अपनी टोली के काम से केसो भी संतुष्ट था। जमीन कैसी भी रही हो पर ज्यादा दूर तक फैली नहीं थी। सभी व्यक्ति उसकी आवाज़ की पहुँच के अन्दर काम करते थे। जहां तक मिट्टी के लाल और रेतीली होने का प्रश्न था, वह साकेन का दुर्भाग्य था। पर यदि सब काम साकेन के भाग्य ही पर छोड़ दिया जाय तो लोगों को खाने भर

को भी कभी न मिलता। लेकिन मेहनत से कुछ भी किया जा सकता है। साकेन को भी बदला जा सकता था।

गूदल अपने बैलों को संभाल रहा था। उसकी तेज़ आवाज़ खेत के किसी किनारे से भी सुनी जा सकती थी। शाम होने पर केसो बहुधा गूदल की टोली के साथ उसके मुखिया से बातें करता हुआ घर लौटा करता।

जब केसो उसके समीप आया, गूदल ने जेब से एक पत्र निकाल कर केसो को दिया।

केसो ने पूंछा, "यह क्या है?"

यह कापी के पृष्ठ का एक चौथाई भाग था। चारों ओर लाइन खींच कर सजा दिया गया था। साफ साफ अक्षरों में उसमें यह लिखा था—

निमंत्रण :

आप से कल, रविवार को आने की प्रार्थना है। बिजली की रोशनी का उद्घाटन होगा।

भवदीय

गूदल

केसो ने कहा, "ओ हो! बिल्कुल शहरों जैसा निमंत्रण पत्र! बहुत बहुत धन्यवाद। सब ठीक हो गया है?"

गूदल ने उत्तर दिया, "यही मेरे बेटे की राय थी। उसके पास तार है। वह हर काम के लिये मुझ पर भरोसा करता है। आना अवश्य, बड़ा आनन्द रहेगा। मेरी अपनी शंकायें हैं। मुझे तो विश्वास नहीं होता कि मेरा बेटा रोशनी करने में सफल हो जायेगा।"

केसो ने कागज़ को मोड़ कर जेब में रखते हुये कहा, "धन्यवाद, एक बार और। अब हम अपना काम करेंगे।"

केसो ने हल से बनी लकीरों में अपनी छड़ी डाल दी। वह और गूदल दोनों ही जमीन पर उतर पड़े।

केसो ने कहा, "बीस सेन्टीमीटर से भी कम······मेरे भाई ठीक से काम नहीं हुआ है। इसको अभी और जुतवाओ। दूसरों के आगे मुझे शर्मिन्दा मत करो।"

गूदल बोला, "अरे गोली मारो। दो सेन्टीमीटर से क्या हो जायेगा। व्यर्थ परेशान होना है।"

गूदल के दुखी हृदय को देख कर वह शान्त स्वर में कहने लगा, "हां, याद रक्खो, दो सेन्टीमीटर और गहरा होने से बड़ा अच्छा रहेगा, न होने से घाटा रहेगा। तुम्हें बुरा लग रहा है। ······पर यदि हम अन्दाज़ के हिसाब से पैदा करने में असमर्थ रहे तो कितनी भद्दी बात होगी! हमको नियमों का पालन करना चाहिये। खाद के बारे में भूल जाओ। अभी यही समझो कि कोई पहाड़ी नहीं है।"

गूदल ने पूछा, "यह क्यों? ऐसा क्यों सोचूं कि पहाड़ी नहीं है?"

केसो उठ खड़ा हुआ और बोला, "कुछ भी सम्भव हो सकता है। मान लो पहाड़ी से कुछ भी न निकले। तो क्या सब खत्म हो जायेगा? हम उसके बगैर भी काम चला लेंगे (फिर कुछ सोच कर) सम्भव है कुछ कम पैदा हो, लेकिन फिर भी पहिले से तो अधिक ही होगा। मैं यकीन दिलाता हूँ कम से कम तीन सौ पूड।"

उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया। एक क्षण रुक कर गूदल ने अपने हाथ उसके हाथों पर रख दिये।

......शाम होते तक आकाश में कुछ अंधेरा छा गया। हवा भी चली। इसमें बसन्त की ठिठुरन थी। और फिर एकाएक जैसे सारे बादल साकेन पर ही आकर इकट्ठा हो गये हों! पानी बरसने लगा। मूसलाधार पानी नहीं.....सुइयां बरस रहीं थीं.....क्योंकि साकेन को वर्षा की जरूरत भी तो नहीं थी।

जब आकाश में काले बादल छाये हों, पानी बरस रहा हो, यदि किसान को कल की चिन्ता न हो, तो वह आलस्य में घर बैठा रहता है।

ऐसी सन्ध्या को, जब वह आग जला कर बैठा हो, उसकी बातें केवल अपने परिवार तक सीमित रहेंगी। ऐसी संध्या को सब चीजें अपने घर में ही होंगी और वहीं रात भी बीत जायेगी। पर अंतरात्मा के किसी कोने में कल का विचार अवश्य उठता रहेगा। पर कितना सुन्दर दिखता है—आग जलती हो, चिनगारियां उड़ती हों, लोग बैठे बातें करते हों, बाहर पानी बरसता हो! आसमान खुलने का इन्तज़ार भी हो।

साकेन के घरों की छतें उस दिन की वर्षा से भींग रही थीं। नाले बह कर झरनों का रूप ले रहे थे। सभी साकेनियन अपने घरों के दरवाजे पर खड़े चिन्तित दृष्टि से वर्षा को देख रहे थे। कितना पानी बरसेगा! यह प्रश्न हर एक की जबान पर था। घरों में जलती हुई आग की धुँधली रोशनी बाहर से दिखाई दे रही थी। साकेन नदी में बाढ़ आ गई थी। नदी के ऊपरी भाग से किसी भी समय एक धारा के अलग बह निकलने का खतरा था

और तब 'सिलवर मीडो' और नट गली' में रहने वाले केवल इशारों से ही बातें कर सकते थे।

केसो खिड़की के सामने बैठा हुआ शून्य दृष्टि से बाहर अन्धकार देख रहा था। तेल के चिराग की रोशनी खिड़की के शीशों पर पड़ रही थी और उस प्रकाश में वर्षा साफ दिखाई दे रही थी।

घर में सन्नाटा छाया था। उसके बाप और बहन भी सो गये थे। नीचे बरामदे में सोया हुआ कुत्ता रह रह भूंक उठता था।

टेबिल पर किताबें बिखरी थीं। केसो को नींद नहीं आ रही थी। वह रह रह कर किताबों के पन्ने उलटता था। उसमें थोड़ी पस्तहिम्मती आ गई थी। उसका मस्तिष्क उसे मोर्चे पर की एक ऐसी ही रात में खींच ले गया। वे हमला करने के लिये आवश्यक आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे थे। खांई में खड़े रहना मुश्किल हो रहा था। उसकी सन्दूक पर एक सफेद कागज रक्खा था। उस अंधेरे में भी, टिमटिमाती हुई रोशनी में वह बिल्कुल सफेद दिखाई दे रहा था। केसो घर को एक पत्र लिख रहा था। अपनी कल्पना में वह अपना परिवार, घर, मांउट गोंगा हिमाच्छादित चोटियां और हरहराती साकेन को देख रहा था। वे मोर्चे से भी हजारों मील दूर थे। जब इसने पत्र मोड कर लिफाफे में रक्खा तो उसे अपने घर की शान्त रात्रि की याद आ गई। वह अपने विचारों में ही खो गया। अब वह सचमुच में अपने घर में था। उसके पैत्रिक घर की छत उसके ऊपर थी लेकिन वह शान्त जीवन अब कहां था! दरअसल केसो का जीवन शान्त वातावरण के लिये बना ही नहीं था।

उसने एक कापी उठाई और बीच से दो पन्ने फाड़ लिये।

वह कमरे में उठ कर टहलने लगा। आधी को दो घंटे से ज्यादा हो गया था। साकेन में सब सो रहे थे। सर्वत्र सन्नाटा छाया हुआ था। शायद केसो ही अकेला व्यक्ति था जो जाग कर साकेन की रखवाली कर रहा था। वह सो नहीं सका था। उसके ऊपर भूत की स्मृतियों ने अपना असर जमा रक्खा था।

करीब तीन साल पहिले जिस गाड़ी में केसो यात्रा कर रहा था, मास्को के पास वह रुक गई थी। फौजी गर्मियों की चांदनी रात थी। किसी ने बताया कि क्रेमलिन देखा जा सकता था। केसो मोटर की छत पर चढ़ गया। वहां काफी भीड़ लगी हुई थी। हर एक व्यक्ति एक ही दिशा में—क्रेमलिन की ओर—देख रहा था। केसो बहुत प्रयत्न करने पर भी कुछ नहीं देख सका। यही हाल दूसरों का भी था लेकिन हर व्यक्ति क्रेमलिन की एक झलक पा जाने के लिये आतुर था।

किसी ने कहा, "थोडी ही देर में सुबह होगी ··········· कामरेड स्तालिन जाग उठे होंगे। एक बार उन्होंने पांच बजे सबेरे हमारे हेडक्वार्टर को टेलीफोन किया था।"

वह चुप हो गया और एक बार फिर सब लोग उसी दिशा में देखने लगे।

जब तक सब आदमी नहीं उतर गये, केसो छत पर ही खड़ा रहा। वह अकेला ही क्रेमलिन को देखने का प्रयत्न करता रहा।

वह टेबिल के सहारे बैठ गया, अपनी कलम स्याही में डुबो लिया और बड़े बड़े शब्दों में लिखा, 'साकेन गांव के पार्टी संगठन को, इस समय ··········।' एक मिनट सोचने के बाद लिखा हुआ हिस्सा काट कर, कागज मोड कर टेबिल के नीचे फेंक दिया।

केसो ने सोचा कि यदि जिला के समाचार पत्र को सहायता के लिये लिखा जाय तो अच्छा रहेगा।

मुख्य पृष्ठ पर चौड़े चौड़े हरफों में छपेगा, 'स्थानीय खाद का उपययोग'········'खाद का!' उसके सामने कान्सटैन्टिन की आकृति आ खड़ी हुई। वह पूछ रहा था, "तुम्हें उस पहाड़ी की बाबत पूर्ण विश्वास है?"

कान्सटैन्टिन के साथ बात करने के बाद वह समझ गया था कि बिना वैज्ञानिक विश्लेषण के अब काम आगे नहीं बढ़ सकता। यह किसी तरकारी की खेती का प्रश्न नहीं था जिसके लिये केवल एक छोटे से खेत की आवश्यकता पड़े। यह तो सामूहिक कृषि के सभी खेतों का सवाल था। उसे विशेषज्ञों की राय प्राप्त करना पड़ेगा।

'नहीं, बिना शहर की मदद के काम नहीं चल सकता', उसने सोचा।

केसो फिर कमरे में टहलने लगा। चिराग का गुल झाड़ दिया और फिर टेबिल पर बैठ कर घंटों सोचता रहा।

(१६)

केसो सुबह देर में सो कर उठा। रोज की तरह, उसे सामने लकड़ी की छत ही दिखाई पड़ी, परन्तु आज वह इसे अधिक दिलचस्पी से देखने लगा। दीवार पर हल्की हल्की रोशनी पड़ रही थी। ये सूर्य की प्रथम किरणें थीं।

आकाश साफ और निर्मेघ था। रात की वर्षा में भीगी हुई पृथ्वी सूख रही थी। सर्वत्र शान्ति छाई हुई थी। केवल साकेन की हरहराती हुई आवाज आ रही थी। साकेन बड़े वेग से किनारों को छोड़ कर बह रही थी। ऐसा लगता था जैसे उसकी विनाशकारी भूख कभी मिट न सकेगी।

उसने निश्चय कर लिया था कि वह शहर जायेगा। बसन्त की बाढ़ के बावजूद वह जायेगा। केसो ने अंगड़ाई ली। उसने मेज पर से कागज उठा लिया और पढ़ने लगा। पैदावार बढ़ाने के लिये उसमें बहुत से नये नये सुझाव लिखे हुये थे।

केसो ने कागज को मोड़ कर टेबिल के नीचे फेंक दिया। उसे अब उसकी कोई आवश्यकता नहीं थी। कान्सटैन्टिन के प्रति उठने वाली ईर्ष्या अब समाप्त सी हो रही थी। आखिर कान्सटैन्टिन ने कोई बुराई तो की नहीं थी। उसने अच्छी ही राय दी थी।...अब उसकी आँखों के सामने सूर्य की किरणें नाचने लग गई थीं। खिड़की के बाहर मौसम बहुत अच्छा था। केसो ने एक अंगड़ाई और ली। चारपाई चरमराने लगी।

नीना अन्दर आई। उसके हाथ में बकरी के दूध का एक प्याला था।

केसो ने कहा, "तुम मेरी आदतें बिगाड़ रही हो।"

नीना ने एक कुर्सी को उसकी चारपाई के निकट घसीट कर उस पर गर्म दूध का प्याला रख दिया।

उसने कहा, "इसे धीरे धीरे पीना। (टेबिल की तरफ देखते हुये) तुम लिख रहे थे क्या? किस चीज के बारे में लिख रहे थे।"

केसो ने कोई उत्तर नहीं दिया। नीना ने कागजों को एकत्र कर के रख दिया।

नीना बोली, "तुमने सिगरेटें बहुत पी हैं। कमरे में इतना धुंआ इकट्ठा हो गया है कि उसे चाकू से फाड़ा जा सकता है। अच्छा.....स्थानीय खादों का उपयोग। अब समझी...उस पहाड़ी के बारे में है शायद..... पिता का कहना है कि वह व्यर्थ की दौड़ धूप है। वह इसका मजाक उड़ाते हैं। लेकिन दूसरों के सामने वह तुम्हारा ही पक्ष लेते हैं।.....साकेन के पार्टी संगठन को.....कामा और मैं कल तुम्हारी ही बातें कर रही थी।"

केसो ने बाद की बातों में किसी प्रकार की दिलचस्पी न लेने का प्रदर्शन किया।

नीना बोली, "राशित दिन रात उसके पीछे पड़ा रहता है...।"

केसो का पारा चढ़ने लगा। गुस्से में दूध को जल्दी जल्दी पी कर वह बोला, "ओह, गला जल गया।"

नीना ने कहा, "इतनी जल्दी क्या पड़ी है। मुझे राशित तनिक भी पसन्द नहीं है।"

केसो, "फेंको इस दूध को। तुम्हें वह पसन्द क्यों नहीं है? ईर्ष्या होती है?"

नीना, "मुझे ईर्ष्या करने की क्या जरूरत? ईर्ष्या तो तुम्हें करनी चाहिये।"

केसो, "मुझसे भी कोई मतलब नहीं है।"

साकेन की यह बड़ी पुरानी परिपाटी थी कि पुरुष अपनी प्रेयसी के प्रीति को सबों के सामने व्यक्त न करे। कोई साकेनियन यह कभी मंजूर नहीं करता कि वह किसी लड़की से प्रेम कर रहा है। ऐसी बातों के उठने पर साधारणतया कोई भी साकेनियन विरक्ति और उदासीनता का ही भाव प्रकट करता था। पहाड़ियों की यह सर्वमान्य रीति है। पुरुषों के शौर्य की यह निशानी है। परन्तु इस प्रकार से प्रेम को गुप्त रखने से बहुधा धोखा भी हो जाता था, क्योंकि कभी कभी दूसरे नवयुवक बाजी मार ले जाया करते थे।

नीना ने कागजों को अलग रखते हुये कहा, "पिता तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। क्या तुम गूदल के यहाँ शाम को जाओगे?"

केसो को सायंकाल के निमंत्रण की बात याद हो आई।

उसने कहा, "हाँ, हम लोग जायेंगे।"

येकप सीढ़ियों पर बैठा अपने कमर की मालिश कर रहा था। उसके चेहरे पर प्रसन्नता की झलक थी। ऐसी झलक उसके चेहरे पर वर्षा के बाद आसमान खुल जाने पर बहुधा दिखलाई देती थी। केसो ने पिता के अपने शहर जाने के इरादे का जिक्र किया। जब उसके पिता ने कोई एतराज नहीं किया तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उल्टे, उसके पिता ने उसका समर्थन किया।

येकप ने कहा, "यही ठीक है। वहाँ जाकर उन लोगों से राय लो। यदि तुम्हारी जगह पर मैं होता तो उस पहाड़ी की थोड़ी-सी मिट्टी भी लेता जाता। विशेषज्ञ इसकी जांच करेंगे। कितने दुख की बात है कि हम इतनी पिछड़ी हुई जगह में पड़े हैं, नहीं तो यह समस्या कभी सुलझ गई होती।"

केसो ने कहा, "उन लोगों के पास हर प्रकार की खाद है। वह हजारों मील दूर से मंगाते हैं। साकेन में तो......"

बुड्ढे येकप ने कहा, "यह साकेन का दुर्भाग्य है। मालूम नहीं किस बेवकूफ के दिमाग में यह आया कि इतनी उपयोगी वस्तु को उस पहाड़ी पर रख दे।"

"जैसे ही जुताई खतम हो जायेगी, मैं शहर चला जाऊँगा।"

"यहाँ, हम तुम्हारे बगैर भी काम चला लेंगे। टोली में सब ठीक हो जायेगा। जैसे ही रास्ता खुल जाय, तुम चले जाओ।"

नीना ने रसोईघर से ही कहा, "सड़क खुल गई है। राशित भी तो आया है।"

येकप खांसते हुये बोला, "बदमाश......"

केसो ने कहा, "कोई फिक्र मत करो, डैडी। मैं वहाँ किसी न किसी प्रकार जा पहुँचूँगा।"

जब केसो और उसके पिता गूदल के घर के लिये रवाना हुये,

सूरज डूब रहा था। येकप अपना सब से बढ़िया कोट, कबरडानियन क़जोक और सिर पर हैट पहिने था। छड़ी को टेकता हुआ वह चला जा रहा था। उसके पैर में दर्द तो न था, पर उसकी आदत ही ऐसी पड़ गई थी।

ये लोग सबों से पहिले पहुँचे। गूदल के लड़के स्मेल ने फाटक पर ही उनका स्वागत किया। स्मेल ने शहर में रह कर वहीं खाते का हिसाब-किताब रखना सीखा था और लौटकर सामूहिक कृषि विभाग में नौकर हो गया था। अपने सीधे साधे स्वाभाव के कारण शहद की मक्खियों का हिसाब-किताब रखना (उसके जिम्मे यही काम था) मुश्किल हो जाता था।

मेहमानों को अन्दर ले जाकर उसने दरवाजा बन्द कर दिया। केसो ने देखा कि खेत के ऊपर तार दौड़ा रक्खे गये थे।

उसने प्रश्न किया, "तो तुम लोग अब तेल के चिराग से ऊब गये हो?"

स्मेल ने उत्तर दिया, "हाँ, यही समझना चाहिये। यदि यह प्रयोग सफल हो गया तो हम दूसरों के लिये भी यही प्रबन्ध कर देंगे। मैं इसके लिये पैसे नहीं मांगूगा। इन मशीनों का चलना शुरू हो जाय....."

केसो ने सिर हिला कर समर्थन करते हुये पूछा, "तुम्हारी क्या उम्र है? तेईस वर्ष...ज्यादा तो नहीं है। तुम्हारे पिता ने तुम्हारी सहायता किया था?"

स्मेल बोला, "देखिये, आप जानते हैं कि लोग बहुधा परिवर्तन को सहर्ष स्वीकार नहीं करते। मेरे पिता भी.....। परन्तु जब मेरा काम ठीक तरीके से चल निकला तो रोकने का कोई प्रश्न ही नहीं

उठता था। वे कर ही क्या सकते थे? वास्तव में उन्होंने मेरी बहुत मदद भी की है।"

येकप भी एक किनारे खड़ा हो गया और बोला, "मेरे बेटे पाप मत कमाओ। अपने पिता को मत परखो। घर में जो कुछ होता है वह पिता ही करता है। उसके बगैर कैसे हो सकता है? हर चीज के अपने अपने नियम होते हैं "

येकप ने अपनी छड़ी से स्मेल के पेट में गुदगुदा दिया। स्मेल जोरों से हँस पड़ा और फिर चल दिया। उसकी ओर देखकर केसो को भी हँसी आ गई। उन दोनों को देख कर बुड्ढा येकप स्वयं भी हँस पड़ा।

येकप ने गूदल से कहा, "हमारे लड़कों की उड़ान हमसे भी ऊँची हैं।"

कुछ औरतें रसोई से निकल आईं। उनमें से एक दुबली और लम्बी सफेद बालों वाली औरत मेहमानों के पास आई। यह गूदल की पत्नी थी।

येकप चिल्ला उठा, 'सुप्रभात! कमाशिश। आप पर तो बुढ़ापा अपना रंग जमा ही नहीं पाता।"

वह स्त्री बोली, "बेवकूफ...येकप चुप रहो। अभाग्यवश दर्पण जैसी चीजें दुनिया में मिलती हैं, ओफ!"

लेकिन येकप चुप रहने वाला जीव नहीं था। वह कमाशिश को विश्वास दिला रहा था कि उसकी आकृति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। वह युवती जैसी ही दिखाई दे रही थी। और गूदल बड़ा प्रसन्न हो रहा था।

केसो स्मेल से बिजली की मशीन और उसके काम करने के तरीके के बारे में बातचीत कर रहा था।

केसो ने प्रश्न किया, "तुमने मेहमानों को बुलाने के पहिले इसकी परीक्षा ले ली है ?"

रमेल ने विश्वास के साथ कहा, "यह काम करेगी। तुम देखते रहो।"

उसकी काली आंखें केसो को घूरने लगीं। केसो को ऐसा प्रतीत हुआ जैसे कोई बकरी उसे देख रही हो। उसकी आंखें बकरियों की आंखों जैसी थीं। केसो के सहारे खड़े होते हुये रमेल बोला, "हमारे यहां ऐसे ऐसे युवक हैं जिनकी सहायता से आश्चर्य-जनक काम किये जा सकते हैं। थोड़े ही दिनों में तुम देखोगे कि दूसरों के घरों में भी रोशनी हो जायेगी। तुम देखोगे कि हर एक अपने घरों में बिजली लगवा लेगा।"

केसो ने कहा, "तुम यह क्यों नहीं सोंचते कि सबों के लिये एक बड़ी-सी मशीन लगा दी जाय।"

रमेल उसका हाथ पकड़ते हुये बोला, "मेरे दोस्त, तुम्हीं ठीक कह रहे हो। एक बड़ी मशीन से काम चल जायेगा।"

केसो ने कहा, "इससे अच्छी तरह, रमेल.........। दूसरे साल तक हम इसे अवश्य ले आयेंगे। तुम प्रधान मशीन मैन होगे। तुम्हारी क्या राय है ?"

रमेल कुछ परेशान हो गया था। वह बोला, "मैं सहमत हूँ, पर अभी तो यही काम देगी। और वह केसो का हाथ पकड़ कर मशीन तक ले गया।"

सभी मेहमान धीरे धीरे इकट्ठा हो गये। निकोला सब से बाद में आया।

वह बोला, "क्षमा करना, देर हो गई है। आजकल बहुत

परेशान हूँ .... व्यस्त रहता हूँ। जुताई शुरू हो गई है, न !" उसने काम-काज का वातावरण बनाने का प्रत्यन्न किया।

साकेनियन डाक्टर भी निकोला के साथ आया था। जो लोग उसे जानते थे, समझ गये कि आज जल्दी में वह ज्यादा पी गया था। (उसका कहना था कि उसकी यह आदत यहीं पड़ी थी)।

येकप हंसी-मिश्रित स्वर में बोला, "डाक्टर, मेरी कमर तुम्हारी राह देख रही है।"

स्पीरिडन ने हृदय पर हाथ रख कर कहा, "मैं सेवा के लिये उपस्थित हूँ।"

कान्सटैन्टिन ने केसो के कान में कहा, "यदि हम कोई दूसरा डाक्टर ले आयें तो बुरा तो नहीं होगा। जब तुम जिला अधिकारियों से मिलो तो इस सम्बन्ध में बातें करना।"

केसो ने कहा, "ठीक है। मैं अवश्य बातें करूंगा।

अंधेरा हो रहा था और रोशनी जलाने की अवश्यकता हो गई थी। बहुत सी मोमबत्तियां लाई गई। बांध के पास कई आदमी मशालों की मदद से काम समाप्त करने के लिये प्रयत्नशील थे।

कमारिशा ने अपने भरसक मेहमानों का स्वागत करने का प्रयत्न किया। वह एक बल्ब की ओर इशारा करते हुये बोली, "मेरे बेटे का कहना है कि यहीं पर रोशनी जलेगी।"

केसो उसके समीप गया और उसके हाथ पकड़ लिये।

केसो ने प्रश्न किया, "तुम्हें विश्वास नहीं है ?"

उसने उत्तर दिया, "विश्वास करना बड़ा मुश्किल है।"

केसो ने कहा, "थोड़ी देर रुको और तुम स्वयं देख लो।"

सभी बूढ़े व्यक्ति एक तरफ़ बैठे थे। येकप भी उन्हीं में मिल

कर बैठ गया। जब कमाशिश बोली कि विश्वास करना कठिन है तो उन सब की नज़र उसी की ओर घूम गई।

एक बूढ़े व्यक्ति ने ताना कसा, "यह स्त्री कैसी है ? साकेन की बेइज्जती करवाना चाहती है। यदि बाहरी आदमी इसकी बातें सुन लें तो क्या कहेंगे ?"

कमाशिश ने अपने को उनके हमलों से बचाने का प्रयत्न किया पर इतने ही में येकप उनके बीच कूद पड़ा। वह कहने लगा, "छिः छिः कमाशिश। इतने आश्चर्य की कौन सी बात है ? क्या तुमने शहर में कभी बिजली की रोशनी की बात नहीं सुनी है ? यह चांद जैसी होती है। रोशनी तो देती है पर गरम नहीं करती है। दोस्तो मैंने कभी किसी से ईर्ष्या नहीं की है पर पिछले कुछ समय से नीचे के गांव वालों के प्रति ईर्ष्यालु हो गया हूँ। उनके पास बिजली की रोशनी है। वे बड़े भाग्यवान हैं। लड़ाई शुरू होने के पहिले ही उन्होंने बिजलीघर बना लिये थे। कुछ आदमियों का भाग्य प्रबल होता ही है......।"

कान्सटैन्टिन ने भी दखल देते हुये कहा, "लड़ाई लड़ाई ही है। (उसकी ओर सभी आकर्षित हो गये) यदि युद्ध न छिड़ गया होता तो हमको भी बिजली मिल गई होती। हमारे यहाँ की सड़कें तो कयामत हैं। यदि लड़ाई न शुरू हो गई होती तो अब तक हवाई जहाज का रास्ता अवश्य खुल गया होता। याद करो लड़ाई के पहिले किस प्रकार एक हवाई जहाज यहां आ उतरा था।"

येकप ने कहा, "लाई डव का बना था। है, न ?"

कान्सटैन्टिन ने गम्भीर हो कर कहा, 'हंसने की क्या बात है ? वह बड़ी मज़बूत कैनवेस का बना था। हम लोग भी एक

साल के अन्दर रोशनी की व्यवस्था कर लेंगे। हवाई जहाज भी यहाँ तक आने लग जायेंगे और तब हम सड़क भी पक्की करवा लेगें। हम कोलतार की सड़क बनायेंगे।"

"हां, यही सब से अच्छा होगा।" बुड्ढे आदमी खांसते हुये बोल पड़े। फिर कुछ क्षणों के लिये शान्ति छा गई।

धीरे धीरे खेत उत्सुक व्यक्तियों से भर गया। निकोला उत्तेजित हो गया। उसने एक छोटी-सी कान्फ्रेन्स कर डाली और यह निश्चय किया कि इस अवसर को सामाजिक उत्सव में परिणत कर दिया जाय। यह कान्सटैन्टिन के दिमाग की उपज थी। गूदल स्तब्ध हो गया। उसने कहा कि वह इतने बड़े उत्सव और दावत की योजना नहीं कर सकेगा। उपस्थित लोगों में से कुछ ने अपने आप कई गैलन शराब का इन्तजाम कर देने का वादा कर दिया। दूसरे व्यक्तियों ने भी उनको उदाहरण मान कर चीजें एकत्रित करने के लिये वादा किया।

उन्होंने ऐलान किया, "जब तक आप इन लोगों से बातें करेंगे हम सारा प्रबन्ध कर देंगे।"

स्कूल के हेडमास्टर मुशाग ने (वह बहुत अच्छे वक्ता थे) उस उत्सव के प्रधान होने का वादा कर दिया। वह आधुनिक फैशन का पैंट लापरवाही से पहिने हुये थे जिससे उनकी अपनी वेष-भूषा के प्रति विरक्ति का आभास हो रहा था। (इस भाव को साकेन की लड़कियां बहुत पसन्द करती थीं)

कान्सटैन्टिन के राय देने पर उन्होंने गूदल के घर इस उत्सव के अवसर पर एक भाषण दिया।

मुशाग ने इन शब्दों से अपना भाषण समाप्त किया—"साथियों, कितने वर्षों से लोग बिजली से लाभ उठा रहे हैं। ……में

चाहता हूँ कि आप लोग आज के उत्सव पर ध्यानपूर्वक सोचें। ......साकेन का एक युवक, जो हमारे आप के सामने ही बड़ा हुआ है केवल, अपनी मेहनत के बल पर ही एक बिजलीघर बना सकने में सफल हुआ है। यदि युद्ध न छिड़ गया होता तो हम लोग एक ज्यादा ताकतवर बिजलीघर बना सकने में सफल हुये होते। आज तो केवल गूदल और उसके पड़ोसियों का घर ही प्रकाशमय हो सकेगा। लेकिन साथियों, गांव की सोवियत की तरफ से मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि १६४८ में ....हमारा अपना ....सामूहिक कृषि संस्था का.........बिजलीघर बन जायेगा।"

अन्तिम शब्द तालियों की गड़गड़ाहट में खो गये थे। उत्सव सचमुच में बहुत ऊँचे पैमाने का हो रहा था। दूसरों ने भी जो भाषण दिये वे बहुत उत्साहवर्धक थे। एक आदमी चिल्ला उठा, "स्तालिन जिंदाबाद!" सभी उपस्थित व्यक्ति एक स्वर में बोल उठे, "स्तालिन जिंदाबाद।"

इतनी ही देर में एक वयोवृद्ध सज्जन बरामदे में आकर खड़े हो गये। अपना पहाड़ी हैट उतार कर, उसे हिलाते हुये उत्तेजित स्वर में बोले, "दोस्तों, शान्त रहिये। साथियों, मेरा एक प्रस्ताव है कि गांव के सब रहने वाले मिलकर अपनी मेहनत से ही एक बिजलीघर तैयार करें।"

मुशग बोल उठा, "बिजली घर......।"

वक्ता ने कहा, "हां, बिजलीघर......।"

सारी भीड़ चिल्ला उठी, "मंजूर है, मंजूर है।"

निकोला अवाक् रह गया, परन्तु कान्सटैन्टिन ने उसे शान्त कर दिया।

वह बोला, "यह बुद्धिमानी का फैसला है। यही फैसला सही है यही सभी व्यक्ति चाहते हैं।"

निकोला ने प्रश्न किया, "जिला अधिकारी क्या कहेंगे?"

कान्सटैन्टिन ने उत्तर दिया, "वे क्या कहेंगे! हम उन्हें अपने फैसले की इत्तिला कर देंगे और सारी बातें विधिवत् कर देंगे।"

स्मेल और उसके साथी बांध पर काम कर रहे थे। एक ढालू लकड़ी और चक्के में पट्टा बंधा हुआ था, और वहां से एक पट्टा मशीन तक बंधा हुआ था। उसके पीछे ही स्विचबोर्ड लगा था। वहीं पर मीटर भी लगा था।

वहां पर बैठे बेकार व्यक्तियों ने कहा, "अरे स्मेल, क्या हो रहा है?"

स्मेल हंसते हुये बोला, "जैसे घर में आग लगी हो।" वह खाई में घुसा था। उसने दीवारों पर से कीचड़ हटा दिया। पांच मिनट बाद वह निकल आया।

लड़कियां चिल्ला उठीं, "शैतान...!"

लेकिन बूढ़े आदमी स्मेल को देख कर ताज्जुब करने लगे। वह वास्तव में बुद्धिमान व्यक्ति था। इसके बारे में कोई शक नहीं था।

आखिरी क्षण समीप आ रहा था। दो मजबूत व्यक्तियों ने बांध खोल दिया और पानी हरहरा कर वेग से बहने लगा। मुशाक और स्मेल मशीन के पास गये।

केसो ने लेम्प की ओर इशारा करते हुए कहा, "उधर देखो।"

चक्का घूमने लगा, मशीन भी चलने लगी और लैम्प में प्रकाश की एक क्षीण आभा प्रज्वलित हो उठी।

मुशाक ने कहा, "पट्टा टूट गया है।"

अजमुर, जो निकोला के पीछे पीछे छाया की भांति घूम रहा था, घृणा-मिश्रित स्वर में धीरे से बोला, "दुख है...लड़कों ने बेकार जल्दबाजी की थी।"

रसोईं घर में औरतें आग की रोशनी में ही काम कर रही थीं, क्यों कि सारी बत्तियां बांध पर ले जाईं गईं थीं। वादा यह था कि उनके बदले में बिजली की बत्तियां दी जायेंगी। मगर अफसोस... सारी योजना बेकार हो गई।

करीब पन्द्रह मिनट में पट्टे की पूरी मरम्मत कर दी गई। मशीन फिर चलने लगी, और बत्तियां फिर जल उठीं, घर में, रसोईं में, रास्ते में, फाटक पर, गौशाला में, और कुयें के पास। रोशनी एक मिनट, दो मिनट, पांच मिनट, बराबर जलती रही।

लोग चिल्ला उठे, "स्मेल कहां हैं ? स्मेल जिंदाबाद, शाबाश।"

साकेनियनों को यह देख कर बड़ा हर्ष हुआ कि उनके बीच स्मेल जैसा बुद्धिमान व्यक्ति भी था।

इसी बीच में उपस्थित व्यक्तियों में शराब का दौर चल रहा था और लोग गोश्त खा रहे थे।

केसो ने कहा, "अब यह बराबर जलता रहेगा, जब तक साकेन नहीं सूखेगा।"

वास्तव में साकेन के लिये वह एक स्मरणीय रात्रि थी।

(१७)

बिजली के आविष्कार ने शायद दुनियां को उतना चकित नहीं किया था जितना साकेन निवासी स्वयं अपने बीच के एक लड़के द्वारा इस बिजलीघर के बनाए जाने से चकित हो गये थे। लोग इसलिये और भी खुश थे कि साकेन में बिजली आ गई थी। ऐसा मालूम होता था जैसे किसी ने सारे गांव को उठा कर नीचे के शहरों के बीच रख दिया हो!

लोगों ने रसेल को घेर लिया और इस प्रकार से घूर घूर कर देखने लगे जैसे उसे कभी देखा ही न हो। वे उससे पूछने लगे, "यदि वास्तव में यह सच है तो तुम अद्वितीय पुरुष हो।"

रसेल भी मुस्करा कर उत्तर देता था, "मैं क्या हूँ! मैं क्या कहूँ! यदि आप थोड़ी सहायता दें तो मैं आप लोगों के यहाँ भी ऐसी ही व्यवस्था कर दूं।" यह कह कर वह मशीन के इन्टर लाक्टर की ओर देखने लगता था।

उसकी ओर देख कर दूसरे व्यक्ति कहने लगते, "तुम्हारी शक्ल से ही पता लगता है कि तुम बहुत बड़े काम कर सकते हो।"

एक दिन बुड्ढा शांगेरी कान्वा भी शहर जैसी रोशनी को देखने आया। उसने दरवाजा बन्द कर देने और परदे गिरा देने के लिये कहा। उसने कहा, "अब मुझे बिजली का प्रकाश दिखलाओ।"

जब बल्बों में प्रकाश की क्षीण रेखा चमक उठी तो वह बिना कुछ बोले चाले मशीन के समीप गया। वहाँ, बड़ी देर तक खड़ा-खड़ा वह उसे घूरता रहा। अपने सरकारिशयन कोट को पहिने हुये जिसमें सलमा-सितारा से काम किया हुआ था, अपने मोटे डंडे को हाथ में लिये हुये, सफेद दाढ़ी वाला वह बुजुर्ग आदमी इस प्रकार से घूरता रहा जैसे वह प्रकृति के किसी अजीब करिश्में को समझने का प्रयत्न कर रहा हो! तब गूदल की ओर मुड़ कर वह बोला, "तुम वास्तव में महान पुरुष हो।"

वह लकड़ी के कुन्दे पर बैठ गया। अपना पाइप निकाल कर हाथ में ले लिया। इसके दस बरस के पोते ने तम्बाकू की डंठल से एक टुकड़ा तोड़ कर उसे दे दिया। वह धीरे धीरे पाइप में तम्बाकू भरने लगा। गूदल भी उसके बगल में चुपचाप बैठ गया।

उसने बांध की ओर देखते हुये गूदल से पूछा, "तुमने यह कहाँ सीखा?"

गूदल ने हाथ मलते हुये कहा, "मेरे लड़के ने।"

शांगेरी, "उसकी क्या उम्र है?"

शांगेरी, "अभी तक उसकी शादी नहीं किया?"

गूदल (सिर हिलाते हुये), "अभी नहीं। पर जल्दी ही क्या है?"

शांगेरी की चिलम से चिनगारियां निकलने लगीं। वह बड़ी

देर तक ऐसे ही करता रहा। फिर उसमें से धुंआ निकलने लगा। वह कुछ दुखी दिखाई पड़ने लग गया था।

अपने विचारों में ही मग्न होकर वह बोला, "तेरा बेटा ...... और उसको किसने सिखाया ?"

गूदल ने उत्तर दिया, "शांगेरी, मुझे क्या मालूम ? वह स्कूल जाता था.... .. बुद्धिमान लड़का है........ सभी आश्चर्य-जनक चीजें उसने देखा ... रुपये मंगवाये और मशीने खरीदीं। जब तक सब मशीनें नहीं खरीद ली, कई बार शहर गया और आया।"

बुड्ढे शांगेरी ने सोच कर उत्तर दिया, "अद्भुत करिश्मा है ! ईश्वर ही जानता है, अद्भुत काम है। दुनियां कितनी बदल गई है........।"

शांगेरी कुछ रुक कर पाइप को फूंकने लगा। उसकी आंखों के सामने धुयें के काले बादल-से उठने लगे। बुड्ढे को अपना लम्बा जीवन याद आने लगा। वे पांच भाई थे। पांचों बड़े बहादुर थे। सब से बड़ा भाई डाड, बड़ा बहादुर और कोमल-हृदय था। वह अपने खूनी दुश्मन प्रिंस मारशन के गुंडों के हाथों मारा गया था। उसके सिर में पीछे से गोली लगी थी। उसमें दस आदमियों के बराबर ताकत थी। उस पहाड़ पर उसके जैसा तो कोई कभी पैदा ही नहीं हुआ। दूसरा भाई भी बहुत सुन्दर था। किसी अमीर के घोड़े के साथ वह साइबेरिया भेजा गया था और वहां से लौटकर वापस नहीं आया। लोगों का कहना है कि वह निर्दोष था पर साइबेरिया में वह गल गया। दो और भाई भी बड़े बहादुर थे। पर उनको शराब पीने की आदत पड़ गई थी। वे प्रत्येक दावत और उत्सव में बुलाये जाते थे और मेज के

कोने पर प्रधान की हैसियत से बिठाये जाते थे। शराब से ही इन दोनों की मृत्यु हुई। उनकी मां उनसे हमेशा कहा करती थी— शराब मत पिया करो। पर वे दोनों मर गये। शांगेरी सब से छोटा भाई था। वह स्वयं एक घूसें में किसी बैल को बेहोश कर सकता था। उसकी शक्ति आश्चर्यजनक थी। उससे कोई भी काम लिया जा सकता था। उससे कह भर दो और वह नरक से भी चिराग उठा लायेगा। पर उसने जीवन भर क्या किया? उसका डेढ़ सौ बरस जीना किस काम का रहा? ओफ!

बुड्ढा शांगेरी चिल्ला उठा, "आह गूदल! बेकार! बेकार!"

गूदल चौंक गया, "क्या हुआ शांगेरी?"

शांगेरी बोला, "गूदल, मेरी जिंदगी बिल्कुल बेकार बीत गई। मेरा हृदय बैठा जा रहा है। मुझे ईर्ष्या हो रही है। मैं क्यों कोई अच्छा काम नहीं कर सका? पर...... पर तुम नहीं समझ सकते। मैं यहीं पैदा हुआ था, यहीं जीवन बिताया, यहीं पर सुखमय जीवन व्यतीत करने के सपने देखे थे, पर सुख का क्षणिक स्वाद भी नहीं ले पाया। और अब जब मेरे जीवन का अन्त समय आ गया है, मुझे सुख की हलकी झलक दिखाई देने लगी है। परन्तु अब मुझमें उस सुख को सह सकने की क्षमता जो नहीं रही। ओफ! मेरी बाहें कमजोर हो चुकी हैं। वे सुख को आलिंगनपाश में बांधने के लायक नहीं रहे........।"

वह बुड्ढा लम्बी सांसें भरता हुआ उठा और खड़ा हो गया। उसने वापस जाने के लिये गूदल से आज्ञा मांगी और अपने पोते के कन्धों का सहारा लेकर लाठी टेकता हुआ चल दिया।

सड़क पर उसकी भेंट केसो से हुई।

केसो ने प्रश्न किया, "कहिये, गूद्ल के यहां कुछ अच्छा लगा ?"

शांगेरी ने आंखें मलते हुये कहा, "ओह, तुम हो, करामन के पोते ? बिल्कुल अपने बाबा की शक्ल पाई है.........।" वह इतना कह कर जाने लगा।

केसो बड़ी मुश्किलों से उसे रोक कर कह सका, "एक सेकंड के लिये रुकिये, क्या आप हमारे साथ अन्दर नहीं आ सकेंगे ?"

शांगेरी ने उत्तर दिया, "नहीं, मुझे जाना है, मुझे बहुत सी बातों पर विचार करना है.........। कुछ समझे ? गूद्ल का बाबा भी अजीब व्यक्ति था .....। उसके पोते भीवैसे ही हैं। क्यों ठीक है न ?"

केसो उत्तर देने की जगह फौरन पूछ बैठा, "मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि क्या आप उस भूरी पहाड़ी के बारे में कुछ जानते हैं ?"

शांगेरी, "कौन पहाड़ी ?"

केसो, "वही जो अडामुर की जमीन पर है...... वह जमीन जो पहिले कभी अडामुर की थी।"

शांगेरी, "यह अडामुर कौन है, किसका बेटा है ?"

उस बुड्ढे की भृकुटी तन गईं और आंखें सिकुड़ गईं। वह इतनी जोर जोर से सांस लेने लगा जैसे लुहार की धौंकनी चल रही हो। उसने बिगड़ कर कहा, "दर्जनों पहाडियों को जानता हूँ।......क्या तुम यह चाहते हो कि मैं तुमको बारूद बनाने का तरीका बतलाऊँ ? कितनी ही बार मैंने यह काम किया है। पहाड़ की काली, चट्टानें......मुर्गी की विष्टा और कोयले की मदद से ...... कितनी ही बार......खुदा भला करें।"

शांगेरी बोलते बोलते सांस लेने के लिये रुक गया। इस अवसर से लाभ उठा कर केसो ने प्रश्न किया, "साकेन में सब से अच्छी फसल में कितना गल्ला पैदा हुआ है ?"

शांगेरी ने उत्तर दिया, "सौ पूड......बस सौ पूड।"

केसो ने प्रश्न किया, "तो आपने उस पहाड़ी के बारे में कुछ नहीं सुना ?"

शांगेरी ने कुछ देर याद करने का प्रयत्न करते हुये कहा, "हाँ, कुछ याद पड़ता है। गूदल का बाबा उसके बारे में कुछ अजीब बातें करता था।......वह एक अफसर के साथ बहुधा घूमा करता था। वे कहते थे कि वे पहाड़ी पर कुछ करने वाले हैं।.. पर यह सब केवल कहानी है।.... तुम आओ, मैं तुम्हें बारूद बनाना सिखला दूंगा। मैं स्वयं बारूद बनाया करता था।" बातें समाप्त करते हुये उसने केसो से हाथ मिलाया और कहा, "आओ बेटे, मेरे साथ आओ।"

केसो शांगेरी के आंखों से ओझल होने तक उसे घूर घूर कर देखता रहा। उसे ऐसा मालूम हो रहा था जैसे साकेन के इतिहास के पृष्ठ एक के बाद दूसरे उसकी आँखों के सामने आ रहे हों। कितने दुख की बात थी कि सभी चीजें अतीत के गर्भ में समा गई थीं।

(१८)

साकेन निवासियों की यह एक मत से राय थी कि इस बार बसंत का आरम्भ बड़े शुभ मुहूर्त में हुआ था। आप स्वयं सोचिये कि मौसम शीघ्र ही गर्म हो गया था, पहाड़ी के बारे में चर्चा, गूदल के घर में बिजली की रोशनी, ये सभी बातें क्या साधारण थी ? सारा गांव आशामय हो गया था। लोग यह समझने लगे थे कि प्रतिदिन कोई न कोई नई घटना अवश्य घटेगी।

परन्तु साकेन में एक ऐसा भी व्यक्ति था जो सर्वसाधारण के उत्साह और हर्ष के प्रति उदासीन था और वह अडामुर की दूकान में स्वयं भी कई बार कह चुका था कि उसे साकेन में होने वाली घटनाओं से तनिक भी अचम्भा नहीं होता। दरअसल उसके अन्दर साकेनियन हृदय था ही नहीं। उदाहरण के लिये गूदल के घर में बिजली की रोशनी के प्रति उसकी प्रतिक्रिया यह

थी कि उसने ऐसी चीजें न मालूम कितनी देख डाली हैं। यह व्यक्ति, आप समझ ही गये होंगे, राशित था।

गांव के प्रति इसी घृणा के कारण कई लोग उसके कान पकड़ कर हिला चुके थे। लेकिन राशित में एक अजीब गुण था, वह लोगों को इतनी जल्दी मोहित कर लेता था कि लोग उसे क्षमा भी कर देते थे। फिर जूते बनाने में उसकी कारीगरी ने तो साकेन की सभी स्त्रियों को लुभा लिया था। उससे कारीगरी की आलोचना या शिकायत करना मुश्किल काम था। वह औरतों के जूते और टाप बूट दोनों बनाता था और ये सब इतने फिट बैठते थे जैसे सिल्क के मोजे हों।

पर वह बेहया भी बहुत था। वह अपने घोड़े पर चढ़ कर किसी घर के पिछवाड़े जा कर सेब तोड़ने या दोस्तों के साथ बैठ कर शराब पीने के अलावा कुछ और जानता ही नहीं था। यही कारण था कि उम्र में कुछ बड़े लोग बहुधा कहा करते थे कि यदि उसे थोड़ी और छूट मिल जाय तो वह स्वयं अपने को फांसी पर लटका लेगा! लेकिन राशित इन बातों को सुन कर केवल हँस देता था, और लड़कियों को मुँह चिढ़ा देता था।

उस समय तो वह बहुत आहिस्ते कदम रखते हुये, बेंत की चहारदीवारे के सहारे कुयें के पास से जा रहा था। वह कोई गाना गुनगुना रहा था। करीब पचास कदम आगे ही दरवाजा था।

लगभग पाँच मिनट तक वह रुका रहा, इतने ही में एक स्त्री बाल्टी लिये हुये अन्दर से निकली। कुत्तों को डांटती हुई वह कुयें की ओर बढ़ गई। रस्सी के नीचे जाने की आवाज़ आई नहीं कि उसने किसी को शान्त स्निग्ध स्वर में कहते सुना, 'कामा।'

रस्सी की आवाज़ रुक गई।

कामा ने पूछा, "कौन है ?"

चहारदिवारी की दूसरी ओर से उत्तर मिला, "मैं हूँ, राशित।" अपने को राशित ही साबित करने के लिये वह चहारदिवारी डांक कर उसकी ओर जाने लगा।

कामा ने दौड़ कर उसे रोकते हुये कहा, "ऐसा न करो।"

उसके इन शब्दों का राशित पर अच्छा प्रभाव पड़ा। कम से कम राशित को इतना तो संतोष हो गया कि उसे डांट-फटकार नहीं सुननी पड़ी। वह आगे बढ़ने से रुक गया। फौरन कूद कर वह अपनी पुरानी जगह पर जा पहुँचा।

राशित ने कहा, "कामा, क्या हाल चाल है ?"

अपने स्वाभाविक लापरवाह ढंग से कामा ने बातचीत शुरू कर दी। (साकेन की स्त्रियाँ इस प्रकार बातें करने में बड़ी चतुर हैं और उनके इस स्वभाव को दूसरी जगहों की स्त्रियाँ भी बुरा नहीं समझतीं।)

कामा ने कहा, "आज बड़ी कृपा की है। अँधेरे में डर नहीं लगा ?"

राशित ने उत्तर दिया, "कामा, क्या तुम्हें यह नहीं मालूम कि रोज रात में मैं तुम्हारे घर के करीब इन्तजार किया करता हूँ ?"

कामा, "नहीं, मैं तो नहीं जानती थी।"

राशित ने कुछ उत्साहित होकर कहा, "मैं इस जगह पर घंटों खड़ा रहता हूँ।"

कामा, "तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिये। किस लिये खड़े रहते हो ? लोग देखेंगे तो क्या कहेंगे ?"

"मुझे लोगों की क्या फिक्र ?"

"ऐसी बात है तो फिर, नमस्कार।" उसने मुड़ कर रस्सी कुँयें में डाल दी। बाल्टी में पानी भर गया।

राशित बोला, "कामा, एक मिनट के लिये रुको। यदि तुम नहीं रुकोगी तो मैं कूद पड़ूँगा। तुम सुनती हो?"

धमकी का उचित प्रभाव पड़ा। कामा चहारदिवारी के पास लौट आई।

राशित ने स्वर धीमा कर कहा, "मैं यह नहीं कहना चाहता था। मुझ पर नाराज न हो, मुझे डांटो नहीं। मैं तुम्हें प्यार करता हूँ।"

कामा नाराज होकर बोली "राशित.....!"

राशित ने कहा, "हाँ, हाँ, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ।"

कामा ने उसे उत्तर देना अपना कर्त्तव्य समझा। उसने उत्तर दिया, "मैं समझती हूँ, पर इससे लाभ?"

राशित, "कामा, कामा, क्या मामला है?"

क्या वास्तव में राशित कामा को उतना प्यार करता था जितना वह कह रहा था? या इसके कोई दूसरे कारण थे? क्या कामा के गम्भीर स्वभाव के कारण वह उसके प्रति उद्वेलित हो गया था? अभी इस प्रश्न का उत्तर यों ही रहने दिया जाय। इसका कारण कुछ भी हो सकता है। हाँ, साकेन में होने वाली घटनाओं में यह एक सच घटना थी।

कामा ने कहा, "पहिले तो·····(पर वह एकाएक रुक गई और दूसरा कारण बताने लगी) फिर अभी से इन बातों को सोचने की कौन-सी जल्दी है?······मैं अभी अध्ययन करना चाहती हूँ।"

राशित आश्चर्यान्वित होकर चिल्ला उठा, "पढ़ना चाहती हो? पर क्या तुम स्कूल नहीं जा चुकी हो?"

कामा ने उत्तर दिया, "राशित, केवल सात दर्जे, केवल सात दर्जे ! क्या तुमने कभी कृषि-विद्यालय की बातें नहीं सोची ?"

राशित ने स्वीकार किया, "नहीं, कभी नहीं ।"

कामा ने कहा, "लेकिन मैंने तो इसके बारे में बहुत सोचा है । अध्ययन प्रकाश है और अज्ञान अन्धकार है ?"

राशित ठट्ठा मार कर हँसने लगा । उसकी बातें उसे बहाने जैसी लगीं । उसने कहा, "बड़ा लम्बा जाल बिछा रही हो ।" फिर उसने सोचा कि वह अपना मूल्य बहुत ऊँचा कर देना चाहती है ।

राशित बोल उठा, "और भी कुछ कारण हैं । अध्ययन को इससे अधिक मतलब नहीं है । वह तो केवल बहाना है । मैं जानता हूँ कि इसका कारण वह अधकचरा वैज्ञानिक केसो है । बताओ तो, क्या उसी सिरफिरे ने तुम्हारा दिमाग नहीं खराब कर रक्खा है ?"

कामा ने सब कुछ सुनकर वैसे ही कहा, "और कुछ ?"

राशित ने कहा, "हां ।"

पर कामा ने मुड़कर जाते हुये कहा, "मैं अब जाती हूँ, नमस्कार ।"

(१६)

दूसरे दिन सबेरे अन्य दिनों की अपेक्षा अधिक सर्दी थी। पानी बरस रहा था। पानी बरसते में ही सबेरे सबेरे ही येकप के घर मेहमान आया। दरवाजे पर ही येकप ने अडामुर की अभ्यर्थना की और अपने कपड़े सुखा लेने के लिये कहा।

अडामुर ने बैठते हुये पूछा, "केसो कहां है?"

रसोई घर से बाहर निकलते हुये केसो ने पूछा, "क्या है?"

अडामुर ने कहा, "जाड़ा फिर वापस आ गया। स्वास्थ्य के लिये यह बुरा होगा। गरमी के बाद ठंढक होना......"

येकप ने जीने की ओर मुड़कर कहा, "बेटी, गिलास लाओ। ऐसे मौसम में ठंढ की सब से अक्सीर दवा 'वोडका' है। मुझे तो बड़ी बेरी की वोडका पसन्द है।"

अडामुर ने कहा, "हां येकप, बड़ी बेरी की वोडका ही तेज़ होती है। यह तो गठिया तक को अच्छा कर देती है और खून में गर्मी ले आती है।"

अडामुर को वोडका की तेज़ी और उसके रोगनाशक तत्वों का अनुभव करने का अवसर मिला। साथ के लिये उन्होंने पनीर का इस्तेमाल किया।

वास्तव में, केसो पीने के मूड में नहीं था। लेकिन साकेन में अतिथि-सत्कार के रीतिरिवाजों ने उसे मजबूर कर दिया था। घरेलू परेशानियों के होते हुये भी, अतिथि के साथ लापरवाही से बैठ कर उसका सत्कार करना ही, साकेन का रीतिरिवाज था। अतिथि का सत्कार ही अकेला काम होता था।

अडामुर एकाएक कहा, "केसो, तुम्हारी योजना का क्या हो रहा है?"

केसो ने पूछा, "कौन सी योजना?"

अडामुर ने उत्तर दिया, "मैंने सुन रक्खा है कि तुम उस पहाड़ी की मदद से खेतों के लिये कोई दवा तैयार करने जा रहे हो।"

उत्तर देने के तौर पर केसो कुछ भुनभुनाया। उसने आग में और लकड़ी डाली। आग से लपकें उठने लगीं और चिनगारियाँ उड़ने लगीं, धुआँ छत को काला करने लग गया।

अडामुर बोला, "क्यों नहीं? क्यों नहीं? कितना अच्छा विचार है। यह बहुत उत्तम पहाड़ी है, सोने की खान है। हम इसकी रक्षा अपनी आँखों के समान करते थे। मुझे याद है, मेरे पिता कहा करते थे कि इसकी फिक्र रक्खा करो, यह पहाड़ी खजाना है। तुमको मालूम है यह मेरी जमीन में स्थित है?"

पहाडी के स्वामित्व के बारे में इन विचारों से येकप परिवार चौंक पड़ा।

अडामुर बोला, "मुझे मालूम है येकप कि तुम कितना मुनाफ़ा उठाओगे!"

केसो ने कहा, "मुनाफा···कैसा मुनाफा?···और हमी को क्यों?"

अडामुर बोला, "तुम्हे नहीं तो और किसे? ये तो तुम्हारे ही विचार थे। इसलिये लाभ भी तुम्हें ही होगा। यदि तुम उसे किलोग्राम या पूड के हिसाब से बेंचोगे तो लाखों कमा लोगे। मेहनत भी कुछ नहीं पड़ेगी। कितना आसान काम है? बस फावड़े की मदद से चट्टानें तोड़ कर, उन्हें तौल कर बेंच दो। यदि तुम ऐसा न भी करो, तब भी तुन्हें गांव में अच्छा इनाम मिलेगा।"

येकप ध्यान से सुनता रहा, पर उसकी समझ में कुछ ज्यादा नहीं आया। कैसे मुनाफें? कैसे टुकड़े? अडामुर भी ध्यान-मग्न था। वह सोच रहा था उसे कितने रूबल, कितने कोपेक मिल जायेंगे? अपना हिसाब-किताब ठीक कर, केसो और येकप की तन्द्रा को उसने भंग करना चाहा।

येकप और केसो दोनों ही बोल पड़े, "धन्यवाद, भाई, धन्यवाद।"

वास्तव में केसो को इन बातों से कोई प्रसन्नता नहीं हुई थी। उसने अपने को और ज्यादा व्यावहारिक बना कर कहा, "तुम मुझ से चाहते क्या हो?"

इस बात से अडामुर और प्रसन्न हो गया। व्यापारी होने के कारण वह ऐसी ही बातें अधिक पसन्द करता था।

उसने कहा, "दोस्तो, तुम जानते हो, मैं इस परिवार के लिये नया नहीं हूं। हम करीब करीब एक ही खून के हैं। न मैं अजनबी हूँ और न तुम्हीं लोग अजनबी हो। मुझे विश्वास है कि तुम लोग मेरी सम्पति को, मेरे मुंह की रोटी को, यों ही नहीं छीन लोगे। मैं कसम खा कर कहता हूं कि जो मैं खाता हूँ वही तुम्हारे

लिए भी आशा करता हूँ। पेड़ अपनी जड़ से ताकत पाता है और मनुष्य अपने मित्रों से।.....तुम जानते हो कि वह सारी जमीन मेरी है..... मेरी थी ...बहुत दिन पहिले......यही सत्य है। मैंने बहुत कुछ खो दिया, पर मेरे दोस्त इससे क्या होता है? बुड्ढे और बुजुर्ग अभी भी यहाँ हैं। उन्हें अवश्य याद होगा कि किसका क्या था। यह तो न्यायसंगत ही है कि पहाड़ी से होने वाला लाभ मुझे ही मिलना चाहिये। यह सच है कि मैं बहुत बुद्धिमान नहीं हूँ लेकिन मुझसे भी अधिक चतुर व्यक्ति भी यही कहते हैं।...... मैं तुम पर विश्वास करता हूँ। हमको उचित बंटवारा करना चाहिये।"

सब तरफ सन्नाटा छा गया था। बुड्ढे येकप ने आग को खोद कर तेज़ कर दिया। केसो कुछ क्रोधित हो चला था। घृणा से उसका गला फंस रहा था, आवाज़ नहीं निकल रही थी।

पर केसो ज्यादा देर सब्र न कर सका। वह चिल्ला उठा, "तुम बड़े लालची हो, अडामुर। ऐसे अवसर पर और इस उम्र में तुम ऐसा प्रस्ताव कैसे कर सके, समझ में नहीं आता। मैं तुम्हारी बातें समझने से, मानने से, इन्कार करता हूँ। यदि मेरी प्रस्तावित योजना कार्यान्वित हो गई तो पूरे गांव को लाभ होगा। हमारे परिवार और खून के रिश्ते को इससे क्या करना है? तुम इतने दिनों तक सोते रहे हो या और कोई बात है? ऐसी बातें तो वही कर सकता है जो कम से कम पिछले तीस साल से सोता रहा हो। अडामुर, समय बदल गया है, आदमी भी बदल गये हैं। और साकेन भी अब पहिले वाला साकेन नहीं रह गया है।"

नीना दौड़ती हुई, रसोईघर से आई और पूछा, "केसो क्या तुम लड़ते रहे हो?"

केसो ने उत्तर दिया, "अडामुर उस पहाड़ी के लिये दाम मांग रहा हैं।"

नीना, "वह लालची है ! कैसा दाम ?"

केसो, "उससे पूछो तो। उसने हमारी योजना के बारे में सुना होगा और सोचा होगा कि एक सीधी गाय की तरह दुह लें। बेवकूफ को पिछले दिन याद आ रहे हैं।"

केसो ने अपना कोट पहिन लिया और बहिन से यह कह कर कि, वह सोवियत जा रहा है, लम्बे लम्बे डग भरते हुये जाने लगा। वह रास्ते भर अडामुर पर भुनभुनाता रहा।

सोवियत में कोई नहीं था। केसो ने बगल के कमरे का दरवाजा खोला और वाचनालय में बैठ गया। वहां उसने कान्सटैन्टिन और हेडमास्टर मुशग को बैठे देखा।

कान्सटैन्टिन ने केसो से कहा, "यहां आओ, तुमसे कुछ काम है। एक मिनट के ही लिये बैठो।" फिर वह हेडमास्टर से बातें करने लगा, "मेरा ख्याल है मुशग, कि एक अच्छा भाषण और बच्चों के नाच गाने का प्रोग्राम ठीक रहेगा।"

मुशग ने कहा, "मैं सहमत हूँ।"

केसो ने पूछा, "यह बातें किस बारे में हो रही हैं ?"

कान्सटैन्टिन बड़ा चिन्तित था। वह बोला, "तुम नहीं जानते, गांव वाले अजीब हैं। वे कहते हैं कि अब पानी रुकेगा ही नहीं, हम बो न सकेंगे। कोई फसल नहीं होगी, कुछ पैदा नहीं हो पायेगा। कुछ बुड्ढे बुजुर्ग तो ईश्वर के आने तक की बातें करने लग गये हैं। हमें उन्हें समझाना है कि बरसात प्राकृतिक क्रिया है, उससे ईश्वर का कोई सम्बन्ध नहीं है।"

"मुशग ने इतवार को एक अच्छी सभा आयोजित करने का

वादा किया। वह स्वयं भाषण देगा और उसके बाद स्कूल के बच्चों का समवेत गान होगा।"

केसो ने पूछा, 'मुशग, तुम्हारा रेडियो कहाँ है ?"

मुशग, "वह काम नहीं कर रहा है। बैटरी बहुत पहिले ही खतम हो गई थी।"

केसो, "क्यों, गूद्ल के बिजलीघर को इस्तेमाल कर तुम बैटरी को फिर काम लायक बना सकते हो।"

मुशग ने प्रसन्न होकर कहा, "हाँ हाँ, क्यों नहीं ? मैंने तो यह कभी सोचा ही नहीं था। वह तो विद्युत की सीधी धारा है और इससे काम चल जायेगा।"

केसो, "तो फिर मुशग, तुम्हारे लिये एक काम है। रोज मौसम की खबरें सुनने के बाद उसे लिख कर स्कूल के दरवाजे पर टांग दिया करो। मौसम की खबरों में विस्तार से लिख दिया करना कि यह सब क्यों और कैसे होता है ? गांव की सोवियत में एक रेडियो सेट होना चाहिये।"

मुशग ने अपने रेडियो सेट की मरम्मत कराने का वादा किया। उसने केसो से पूछा, "और केसो, तुम्हारे क्या हाल चाल हैं ?"

केसो ने उत्तर दिया, "कान्सटैन्टिन, कुछ कहने लायक बात नहीं है। अभी तो बरसात का भी अन्दाज लेना है। हमने थोड़ी जमीन जोत ली है। मैं शहर जाना चाहता हूं। तुम क्या कहते हो ?"

कान्सटैन्टिन उत्तर दिया, "भले आदमी, मैं तो यह कहने ही जा रहा था। असल बात तो यह है कि हम लोग यहीं बैठे रहते हैं, बाहर निकलते ही नहीं, इसलिये कुछ जान भी नहीं पाते।

उस पहाड़ी की चट्टान का एक टुकड़ा ले जाओ, वहां उसका विश्लेषण करवा कर जांच कराओ। इसको पार्टी का दिया हुआ काम समझो। यही ठीक है। तुम कब तक लौटोगे? जब तुम लौटो तो एक मीटिंग में रिपोर्ट दो। यदि आवश्यक हो तो हम सब सहायता करेंगे। हम तुम्हें यों ही नहीं छोड़ देंगे।"

कान्सटैन्टिन की बातों में कुछ बुजुर्गीपन की झलक थी। लेकिन उसकी आवाज़ में विश्वास भी झलकता था। उस समय केसो इस प्रकार की कोई भी धृष्टता माफ़ करने को तैयार था।

केसो ने अपने जूते के फीते कस लिये और कहा, "अच्छा, अब मैं शहर जाऊंगा।"

कान्सटैन्टिन ने कहा, "जब शहर जाओ तो अखबार और पार्टी की खबरें भी ले आना।"

वे सब बरामदे में गये। पानी अब भी बरस रहा था। हल्की हल्की बूंदें पड़ रही थीं। साकेन के प्रवाहित होने और उसकी लहरों में बहने वाले पत्थरों की आवाज़ आ रही थी। एकाएक बिजली चमकी और बादलों की जोरदार गड़गड़ाहट हुई। वह गड़गड़ाहट चारों ओर पहाड़ों से घिरी हुई घाटी में फैल गई।

कान्सटैन्टिन ने कहा, "इस गड़गड़ाहट को सुनो। इसका मतलब है मौसम ऐसा ही नहीं रहेगा।"

(२०)

रविवार को दिन सुन्दर था। पर पिछली शाम को बादल छाये हुये थे और चारों ओर भयंकर नीरवता का एकछत्र साम्राज्य था। प्रकृति के पास साकेन में बरसाने के लिये जितना पानी था वह कदाचित् समाप्त हो गया था और इसीलिये सूर्य को चमकना पड़ा।

बड़े सबेरे मौसम की खबरें गांव की सोवियत और स्कूल की दीवार पर लगा दी गई थीं। साकेन निवासियों को उससे पता लग गया कि अब जल्दी पानी नहीं बरसेगा। अब तो आर्केमोल और क्रेस्नोयार्स्क में भी सूर्य गर्म होने लग गया था। किन्हीं कारणों से केवल ताशकन्द में पानी अब भी बरस रहा था। लोगों ने मौसम की खबरें पढ़ीं और खुशी मनाने की खबरें पाकर साकेनियन बड़े प्रसन्न हो गये।

मौसम को बदलते देख कर केसो भी बड़ा प्रसन्न हुआ और

अपनी शहर-यात्रा की तैयारियां करने लगा। उसने अपने गरम कपड़े पहन लिये, हथियार बांधे और परिवार वालों से बिदा माँगी। पर पहाड़ियाँ पार करने के स्थान पर पहिले वह झरने की ओर गया। वहां कामा उसकी राह देख रही थी।

बड़ी देर तक दोनों में प्रेमालाप होता रहा। दो युवा हृदय बिछुड़ रहे थे। एक दूसरे से विदाई लेने देने में दोनों को काफी समय लग गया। अन्त में कामा बोली, "मेरे प्यारे, तुम्हें सफलता प्राप्त हो।"

केसो ने भी उत्तर दिया, "अलविदा।"

इन शब्दों को सुनते ही इस लड़की की आँखों से आँसू बह चले।

उसने पूछा, "क्यों, विदा क्यों?"

केसो ने उत्तर दिया, "कुछ समय के लिये।"

"पर तुमने अलविदा क्यों कहा?"

"मेरा यह कहने का इरादा नहीं था। यों ही मुंह से निकल गया। अलविदा कहने का कोई विशेष कारण तो नहीं था।"

"फिर भी, तुमने अलविदा क्यों कहा? ओफ!"

"इसे भूल जाओ ....। मुझे क्षमा करो। मैं सदैव तुम्हारी ही बातें सोचता हूँ, तुम्हारे ही सपने देखता हूँ।"

"शहर में भी?"

"हां, शहर में भी।"

वे अलग हो गये। वह कदम जमा जमा कर चलने लगा। कामा बड़ी मुश्किल से अपने आँसू रोक सकी।

(२१)

दूकान के बगलवाले कमरे में अडामुर अपने दोस्तों, राशित, ऐन्टन और येनिक, की खातिर कर रहा था। साकेन में येनिक का आगमन किसी असाधारण घटना के घटित होने की सूचना हुआ करती थी। इस बात को कोई भी व्यक्ति ध्यान देकर देखने से तत्काल जान सकता था। वह ग्राम्बा नाम के बंगले में रहता था। वह जगह पानी से भी अधिक शान्त और घास से भी अधिक अनजान थी। कभी कभी उसे कुछ ऐसे काम करने की प्रेरणा मिलने लगती थी जिसे वह वीरतापूर्ण कहता था। ऐसे अवसरों पर वह झोपड़ी से निकल कर और कहीं चला जाता था।

राशित चुपचाप बैठा शराब पी रहा था। वह धीरे धीरे चुस्कियां लेरहा था, जैसे उसकी प्यास बुझ ही न पा रही हो।

ऐन्टन एक लकड़ी के बक्स पर बैठा अपनी बारी आने का इन्तजार कर रहा था। उसके सामने ही अडामुर बैठा था। उसने दूकान को अन्दर से बन्द कर रक्खा था, ताकि उनके काम में कोई ग्राहक खलल न डाल सके।

आपस की दोस्ती को दृढ़ करने के नाम पर एक दौर चल चुका था। अडामुर ने गिलासों को फिर भरा और अपनी जीभ को इस प्रकार चटखाया जैसे, एक दौर फिर चलने ही वाला हो। उसने कहा, "प्यारे दोस्तो, हमारे बीच आज एक बड़ा भला आदमी है। वह अपने मित्रों के लिये अपनी जान की भी परवाह नहीं करता। वह अपने मित्रों को प्यार करता है और उसके दोस्त भी उसकी फिक्र रखते हैं ...। इस व्यक्ति ने एक वास्तविक योजना बनाई है। हम, उसके मित्र, उसकी दीर्घ आयु के लिये प्रार्थना करते हैं।"

इतना कह कर उसने राशित को चूम लिया।

ऐन्टन ने व्यावहारिक शब्दों में कहा, "राशित, साकेन तुम्हें हमेशा याद रक्खेगा।"

अडामुर बोला, "कम से कम एक व्यक्ति तो साकेन में ऐसा ही है।"

ऐन्टन एकाएक गुस्सा हो गया। उसने मेज पर हाथ जोरों से पटका और सभी तश्तरियां खड़खड़ा उठीं।

वह बोला, "मैं काफी शान्त प्रकृति का व्यक्ति हूँ। पर मेरा एक नियम है। डींगें नहीं मारता हूँ। केसो को शहर जाने दो। जब वह लौटेगा तो लड़कियो से उसे अच्छी अच्छी खबरें सुनने को मिलेंगी।"

उन शराबियों की मंडली में सन्नाटा छा गया। ऐन्टन ने

अपना भाषण जारी रक्खा, "केसो को वह सब प्राप्त हो जायेगा जिसकी उसे आशा है। कामा उसके जैसे फक्कियों के लिये नहीं है। लोगों का कहना है.......केसो अपने साथ शहर के लिये एक थैला ले गया है।"

येनिक ने चौकन्ना होकर पूछा, "कैसा थैला ?"

ऐन्टन, "बहुमूल्य वस्तुओं से भरा हुआ एक थैला।"

येनिक, "लेकिन उसमें है क्या ?"

अडामुर (हंस कर), "मिट्टी, और क्या ?"

येनिक, "कैसी मिट्टी ?"

राशित और ऐन्टन ने उस नवागन्तुक को समझाया कि वे उस पहाड़ी की मिट्टी के बारे में बातें कर रहे थे।

येनिक ने प्रश्न किया, 'वह उसे लाद कर सौ किलोमीटर ले जायेगा ?"

ऐन्टन ने उत्तर दिया, "हां।"

येनिक, "क्या वह लालची है ?"

ऐन्टन, "दूसरों को शिक्षा देने की उसकी आदत है।"

येनिक, "क्या वह मिट्टी को शहर में बेचेगा ? वह उसका क्या करेगा ?"

ऐन्टन, "लोगों का कहना है कि वह पूरी पहाड़ी बेंच देना चाहता है।"

येनिक, 'वह इतना ज्यादा झक्की और हिम्मतवर तो नहीं है।"

उसके बाद उसकी योजना पर गम्भीर बहस छिड़ गई। येनिक ने अपनी योजना उनके सम्मुख रक्खी। घर लौटते समय वह लड़की आम तौर से मार्टेन की खाईं के पास से गुजरती है। एक आदमी घोड़ा लिए हुये उसका वहाँ इन्तजार करे। कुछ ही

क्षणों में उसे कपड़ों में बांधा जा सकता है। और फिर उसे घोड़े पर लाद कर ले जाया जाय। वह चाहे या न चाहे शाम तक उसे राशित की पत्नी बनना पड़ेगा !

अडामुर ने पूछा, "क्या वह झगड़ा नहीं करेगी, विरोध नहीं करेगी ?" उत्तर में उसने केवल राशित की भुनभुनाहट सुनी। इससे दूकानदार कुछ रुष्ट हो गया।

वह बोला, "क्या ? उसमें ऐसे लड़के का मुकाबला करने की हिम्मत है ?"

ऐन्डन बीच में टोक कर बोला, "तुम बुद्धू हो। यदि यह उसकी इच्छा के विरुद्ध भी हो तो क्या हुआ ? एक क्षण के लिये सोचो, एक बार यदि उसे अपहृत कर दिया जाय तो उसकी ओर कोई देखेगा भी नहीं। लोग क्या और क्यों के बारे में परेशान नहीं होंगे। अपहरण हो जाय और सब काम समाप्त ....! मेरे दोस्तो वह जाल में फँस जायेगी। चूहे इसी तरह से पकड़े जाते हैं। ऐसा हमेशा से होता आया है।"

अडामुर ने समर्थन किया, "ठीक है, ठीक है। पर मेरा ख्याल है, मामला इतना बढ़ेगा नहीं। क्या ख्याल है, राशित ?"

राशित ने कोई उत्तर नहीं दिया। सबों ने योजना पर फिर से बहस करनी शुरू कर दी और वे उसके नतीजों के बारे में भी सोचने लगे।

जब वह मित्र मंडली अपनी मांद में से निकली और उसे साकेन की निर्मल वायु में सांस लेने का अवसर मिला, वे अत्यंत प्रसन्न हो उठे। कहीं जाना तो था नहीं उन्हें, अतः उनके पैर जिधर के लिये उठे वे भी उसी तरफ चल दिये।

(२२)

केसो मीरबा को रास्ते में कितनी तकलीफें उठानी पड़ी, इसका वर्णन करने में बड़ा समय लग जायेगा। उससे तो एक पूरा उपन्यास तैयार हो जायेगा। प्रकृति के उपासक को, जो सुन्दर दृश्यों को देखने की इच्छा रखता हो, केसो की यात्रा बड़ी महत्वपूर्ण मालूम देगी। वह तो स्वयं ही ऐसी यात्रा करने के लिये तैयार हो जायेगा। पर एक बात और है। जो जुलाई-अगस्त में साकेन से बाहर जाता है उसे लगभग आधे इत्सवों और समारोहों में शामिल होने से हाथ धोना पड़ता है। याद रहे, केसो अप्रेल के शुरू में बाहर गया था और पहाड़ों में यह गर्मियों का महीना नहीं समझा जाता है। आठों पहाड़ और नौ दर्रे यात्री को दिखा देंगे कि वे किस योग्य हैं। यदि कुछ लोग साथ यात्रा करें तो गिरने पड़ने के बाद बच कर वापस आने वाले अपने साथियों के गिरने-पड़ने की याद कर हंसे बगैर नहीं रह सकेंगे।

यह भी कहा जा सकता है कि सृष्टि की रचना के समय साकेन पर ब्रम्हा का कोप था। यदि भूगर्भ-शास्त्रियों की बातें मान ली जायं कि जहाँ आज पहाड़ हैं वहाँ किसी समय समुद्र थे तो यह कहना पड़ेगा कि साकेन के पास प्रकृति की कोई भयंकर घटना अवश्य घटी होगी, जिसके फलस्वरूप साकेनियनों के रहने का स्थान ऐसा बन गया।

साकेन के यात्री सड़क का वर्णन लगभग इस प्रकार करते हैं, "मेरे दोस्तों, यदि तुम मेरा विश्वास करो तो मैं कहूँगा कि सड़कें परियों के देश जैसी ही हैं। पहिले एक बहुत संकरे रास्ते से हो कर जाना पड़ता है। बाईं तरफ खड्ड पड़ता है और दाहिनी ओर ऊँची पहाड़ी। तब उस्तरे की धार कैसे पतले रास्ते पर लगभग एक मील चलना पड़ता है। उसे भेड़िये का जबड़ा कहते हैं। तब आप को रस्सी के सहारे चलने वाले की तरह चलना पड़ता है। इसे भालू की राह कहते हैं। लगभग एक दर्जन ऐसेही जंगली जानवरों से मिलने के बाद आप ऐसे स्थान पर पहुँचते है, जिसका नाम शैतान की खोह है। यह लगभग आधी मील गहरी घाटी है और यदि इसमें नीचे आग जला करे तो भी यह बिल्कुल नर्क बनी रह जाय! खरगोश के मैदान और गिलहरी-छलांग पार करने के बाद यदि ईश्वर आप के प्रति दयालु है तो आप जंगली भैंसों के जंगल में पहुँचेगे। शैतान का पुल पार करने के लिये तो बन्दर ही बनना पड़ता है। और उसके बाद.........।'

इन यात्रियों की यात्रा का वर्णन हृदय को आतंकित कर खून को जमा देता है।

अब यदि आप इन सब भयावनी बातों को सोचें तो आपको अपनी कल्पित यात्रा के अन्त में एक सोते के समीप

केसो मीरवा मिलेगा। यह सोता कभी नहीं सूखता। आस पास के गांव वालों को यह सोता आँखों में कंकड़ी के समान था पर केसो इसे देख कर बड़ा प्रसन्न हो उठा। यदि यह न मिलता तो केसो अपने जूते कैसे साफ़ करता? उसका रबर का बरसाती कोट भी लाल मिट्टी के कीचड़ से लाल हो गया था। उसका थैला भी गंदा हो गया था और उसे भी अपने स्वामी से कम सफ़ाई की आवश्यकता न थी।

वसन्त की तेज धूप, आश्चर्यजनक सुनहले दिन, नये मैदानों की निर्मल वायु, हंसती हुई युवतियां और युवकों को देख कर केसो प्रफुल्लित हो उठा। केसो गाना गाते हुये आगे बढ़ रहा था।

गांव वाले उसके पास से गुजरते थे। सब हंसते ही दिखाई देते थे। शायद वे जान गये थे कि यह तरुण पहाड़ी क्या खबरें लाया है। केसो ने मन ही मन एक भाषण दे डाला। वह तेज कदम उठा कर चलने लगा। उसके बूट पहिले से भी अधिक तेज आवाजें देने लग गये। ऐसा मालूम देता था जैसे सारा साकेन ही आ गया हो।

केसो पुरानी परिचित सड़कों से हो कर जा रहा था, पर उन्हें पहिचान नहीं पा रहा था। इस शहर को छोड़ कर गये हुये उसे आज पांच वर्ष से अधिक हो रहा था।

पांच साल में उसे दुनिया बदली हुई दिखाई देती थी। पहिले तो विश्वास नहीं होता था कि युद्ध जर्जरित गांव कभी भी उठ पायेंगे क्या सेब के बागों में फिर कभी सेब पैदा हो सकेंगे? शहर की चिमनियों से क्या फिर धुंआ निकलेगा?

लेकिन जब सिपाही-केसो के मित्र अपने गांवों को लौटे तो

और भी चकित हुये। क्योंकि उन्होंने देखा कि पेड़ फिर फल-फूल रहे थे। चिमनियों से धुआं भी निकल रहा था, नये नये गांव भी बस रहे थे।

लड़ाई के पांच वर्षों में लोग शहरों के विकृत हो जाने की बात सोंचते थे। पर लोगों के सोचने के लिये और भी चीजें थीं। पर केसो अलकतरे की सड़कों पर कदम उठा कर बढ़ता चला जा रहा था। दोनों तरफ हरे हरे पेड़ और फूलों की क्यारियां थीं। कहीं कहीं पर नई इमारतें भी थीं। सड़क बनाने के इंजन किनारों पर इस तरह खड़े थे जैसे बैल धूप ले रहे हों। यह एक नगर था जो अब पहिले से भी अधिक जवान दिखाई पड़ता था।

जूतों में पालिश करने वाला एक लड़का किनारे पर बैठा था। केसो ने भी सोचा कि जूतों में पालिश करवा ले। नजदीक में ही नाई की दूकान थी। उसने हजामत भी बनवा डालने की बात सोची। नाई ने इस पहाड़ी के चेहरे पर साबुन लगाया और बड़ी मेहनत से फेन निकाला।

नाई ने उससे पूछा, "मेरा ख्याल है कि यह पनीर है ?"

केसो ने उत्तर दिया, "नहीं, मिट्टी है।"

नाई ने बाल बनाते बनाते चौंक कर उसकी ओर देखा और कहा, "मिट्टी ?"

केसो ने वैसे ही उत्तर दिया, "हां, मिट्टी। विश्वास नहीं होता ?"

नाई के चेहरे पर आश्चर्य की जो रेखायें खिंच गई थीं अब लुप्त हो गईं। वह संतुष्ट हो गया।

उसने पूछा, "बहुमूल्य अवश्य होगी ?"

केसो ने उत्तर दिया, "बहुत ! इससे फसल अच्छी होती है।"

नाई थैले को खोल कर उसे देखने की चाह को दबा नहीं सका। उसने झांक कर देखा, वास्तव में मिट्टी ही थी।

(२३)

कृषि-विभाग के फाटक के समीप पहुँच कर केसो गिरते गिरते संभल गया। विभाग के एक कर्मचारी, ने जो चश्मा लगाये था और जिसकी बगल में फाइलों का पहाड़ लगा था, उसे धक्का दिया था और माफी मांगे बगैर ही वह अन्दर चला गया था।

एक लम्बे बरामदे में लोग इधर उधर जा रहे थे। दरवाजे खुलते थे और बन्द हो जाते थे। टाइपराइटरों की खटखट और हिसाब लगाने वाली मशीन की टिक टिक से पता लग रहा था कि अन्दर कर्मचारी काम में व्यस्त हैं।

केसो ने एक व्यक्ति से पूछा, "मैं प्रधान जी से कहां मिल सकता हूँ?"

केसो ने अपने स्वर को अधिकाधिक सभ्य और शिष्ट बनाने का प्रयत्न किया था। उसकी आंखों में आतुरता और भय की झलक थी। थैले को नीचे रखने की उसकी हिम्मत नहीं हो

रही थी। संकोच के लिये कारण पर्याप्त थे। उसके सामने बैठी महिला सेक्रेटरी अत्यन्त व्यस्त थी। कभी वह टेलीफोन उठाती थी, कभी ब्लाटर, कभी रबर की मोहरें। उसे प्रार्थनाओं, धमकियों आदि को कोई चिन्ता नहीं थी। कभी कभी वह उठ कर बगल के कमरे में जाकर किसी से कुछ कहती थी और फिर कन्धे हिलाती हुई वापस आ जाती थी। वह टेलीफोन की घंटी जैसी तेज़ी से बात करती थी और केसो की ओर ध्यान नहीं दे रही थी। करीब करीब आधे घन्टे तक केसो के खड़े रहने के बाद उसने केसो की ओर देखा और उसे बैठ जाने के लिये कहा।

केसो ने धन्यवाद देते हुये कहा, "लेकिन मैं जल्दी में हूँ, मैं प्रधान कृषि-विशेषज्ञ से मिलना चाहता हूं।"

उसने उत्तर दिया, "पर वे व्यस्त हैं और आज किसी से भी नहीं मिल रहे हैं।"

केसो ने अत्यन्त विनीत हो कर कहा, "क्षमा कीजियेगा। उनसे मिलना अति आवश्यक है।"

सेक्रेटरी की भृकुटी तन गई और तेज़ निगाहों से उसने केसो को देखा। इतने ही में टेलीफोन की घन्टी बजी और वह आगन्तुक को लगभग भूल-सी गई।

उसने टेलीफोन में कहा, "बुलेटिन आज प्रकाशित किया जा रहा है और मैं तुम्हारी शिकायतें नहीं सुनना चाहती, समझ में आया।" उसने टेलीफोन का चोंगा रख दिया।

केसो ने सारी शिष्टता को बेकार समझ कर उससे फिर पूछा, "मैं आप से प्रधान कृषि-विशेषज्ञ के बारे में पूछ रहा हूँ।"

सेक्रेटरी ने एक लम्बी सांस ली जैसे अभी ही तैर कर निकली हो। उसने कहा, "आपने इतना बुरा दिन चुना है, काम-

रेड। क्या तुम नहीं जानते कि आज बुलेटिन के प्रकाशित होने का दिन है ।"

केसो ने कहा, "तो इससे क्या ?"

सेक्रेटरी ने दुहराया, "तो इससे क्या ? जानते नहीं आज हम सब अत्यन्त व्यस्त हैं।"

उसने फिर टेलीफोन उठाया। केसो की इच्छा हुई कि कुछ देर उससे फौजी तरीके से बातें करे। पर फिर कुछ सोच कर स्वयं ही बरामदे में कृषि-विशेषज्ञ को ढूँढ़ने निकल गया। दाहिनी ओर का दूसरा दरवाजा उसके दफ्तर के लिये था। केसो दरवाजा खोल कर अन्दर चला गया।

विशेषज्ञ महोदय एक बड़े ओक टेबिल के किनारे पर बैठे हुये थे। उनके सामने कई टुकड़ों से जुड़कर बना हुआ एक बड़ा-सा कागज पड़ा हुआ था। कागज के किनारे टेबिल के नीचे लटके हुये थे जैसे मेजपोश हो। विशेषज्ञ एक जोड़ने वाली मशीन चला रहे थे और कागज पर अलग अलग खानों में अँक लिख रहे थे।

उन्होंने कहा, "आज बुलेटिन के प्रकाशन का दिन है। आज के दिन मैं किसी से नहीं मिलता।"

केसो ने समझा वह किसी और से बातें कर रहे हैं। कम से कम मुझसे तो बातें कर नहीं रहे हैं।

अतः केसो ने कुछ प्रसन्न होकर कहा, "पहिले तो अभिवादन स्वीकार कीजिये।"

विशेषज्ञ ने एक लम्बी साँस ली और अपने मुँह में ही कुछ कह गया। उसके कुछ कहने का इन्तजार किये बगैर ही वह भी मेज के किनारे बैठ गया। उसने अपना भारी थैला जमीन पर रख दिया।

केसो ने यह सोच कर, कि इतने अजीब आगन्तुक के आने पर विशेषज्ञ खुश हो जायेगा कहना शुरू किया, "मैं साकेन से आ रहा हूँ।"

विशेषज्ञ ने कहा, "हाँ हाँ, मैं वैसे ही उत्सुक हूँ।"

केसो उसके सामने रक्खे हुये कागज पर लिखे अंकों को देखने लगा। विशेषज्ञ शायद इस पर कई दिनों से काम कर रहा था। केसो अँकों को देखकर ऊँघने-सा लगा। उसने अपना अधजला सिगरेट खिड़की के बाहर फेंक दिया।

टेलीफोन की घन्टी बजी।

विशेषज्ञ कुछ क्रोधित हो चला था। टेलीफोन की घन्टी ने आग में घी का काम किया। उसने कहा, "हाँ, हाँ, कल आओ या अच्छा हो यदि सोमवार को आओ। आज मैं किसी से नहीं मिल सकता।"

केसो ने थैला अपनी पीठ पर रख लिया और बाहर चला गया। जाते समय दरवाजे इतने जोरों से बन्द किया कि शीशे तक हिल गये।

वह कुछ रुष्ट हो कर सड़क पर चलने लगा। थैला उसे पहिले से तिगुना भारी मालूम देने लगा। सूरज अभी तक काफी गरम नहीं हुआ था। वास्तव में उसकी आशाओं पर तुषारपात हो गया था।

(२४)

पार्टी की जिला कमेटी का दफ्तर समुद्र के किनार पर ही था। समुद्र और आकाश के नीचे पृष्ठभूमि में दफ्तर की सफेद दीवारें जहाज के पाल जैसी दिखाई दे रही थीं।

केसो दूसरी मंजिल पर चढ़ गया। कमरे का दरवाजा उसने धीरे से खोला। एक काले कपड़े पर लिखा हुआ था—प्रतीक्षागृह, प्रथम सेक्रेटरी।

कमरे में कई व्यक्ति बैठे हुये धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। दाहिनी ओर दरवाजे के करीब एक दुबली-पतली पीली-सी लड़की बैठी हुई थी। वह आई हुई डाक देख रही थी और कागजों पर अलग अलग फाइलों में समेट रही थी।

केसो ने अपने थैले को एक कोने में रख दिया और उस लड़की के पास तक गया। उसने अपने जूतों से आवाज़ न होने देने का भरसक प्रयत्न किया।

केसो ने प्रश्न किया, "क्या मैं सेक्रेटरी से मिल सकता हूँ ?"

"बैठ जाइये कामरेड, आप अलेक्जेन्डर इवानोविच से मिलना चाहते हैं ?"

"हाँ, प्रथम सेक्रेटरी से।"

"बैठ जाइये।"

केसो एक कुर्सी को टेबिल के समीप ले आया और बैठ गया। लड़की ने उसकी ओर घूर कर देखा। वह अनिच्छित रूप से हंस दिया। लड़की के चेहरे पर का कठोर व्यावहारिक भाव उसकी अवस्था के उपयुक्त नहीं था।

उसने पूछा, "आपको क्या काम है ?"

उसका स्वर सुनकर उसे साकेन निवासियों की याद हो आई। केसो एकाएक शान्त और प्रसन्न हो गया जैसे वह किसी मित्र से मिलने आया रहा हो। वह हँस दिया। लडकी कुछ परेशान हो गई और पूँछा, "क्यों हँस रहे हो ?"

केसो ने उत्तर दिया, "मुझे दुख है। आपको देखकर मुझे एक दूसरी लड़की की याद आ गई थी।"

सेक्रेटरी ने एक पत्र पर लाल पेंसिल से निशान लगाते हुये पूछा, "अच्छी या बुरी ?"

केसो ने उत्तर दिया, "नहीं नहीं, बुरी नहीं। आपको देखकर बुरी की याद कैसे आ सकती है ?"

लड़की ने चेहरे पर अफसरियत के भाव लाते हुये कहा, "नहीं, इतने जोर से मत बोलो। मुझे अपना काम बताओ। तुम किस संगठन का प्रतिनिधित्व करते हो ?"

"मैं अभी ही शहर में आया हूँ।"

"कहाँ से ?"

"साकेन से।"

"ओह, साकेन से। कितने असाधारण आगन्तुक आप हैं।"

"आप देखिये, मुझे आना ही पड़ा।"

"आप के लिये बहुत से कागज हैं। ढेर की ढेर मैं अभी दफ्तर में जा कर आप के आने की खुशखबरी सुनाती हूँ।"

सेक्रेटरी मेजपर करीब करीब उछल पड़ी और दरवाजे से होकर अन्दर चली गई। छत में कहीं पर घंटी बजी। कुछ देर रुक कर घंटी दूसरी बार बजी। इस बार काफी देर तक बजती रही। केसो उठकर सेक्रेटरी को खोजने लगा।

उसने कहा, "आपको कोई बुला रहा है।"

लड़की टेबिल के पास आकर अपनी नोटबुक देखने लगी।

उसने कहा, "मैं सेक्रेटरी से आप के आने के बारे में कहने जा रही हूँ। हाँ, आप का नाम क्या बताऊँगी?"

केसो ने उत्तर दिया, "केसो मीरवा।"

"साकेन से!" इतना कह कर वह फिर दरवाजे से अन्दर चली गई। कुछ ही देर बाद वह वापस लौट आई और बोली, "कामरेड मीरवा!"

"क्या है? मैं यहाँ हूँ।"

"अलेक्जेन्डर इवानेविच एक क्षण में आपसे मिलेंगे।"

"धन्यवाद।"

उसके अन्दर लड़की को चूम लेने की इच्छा जागृत हो गई, बहिन के समान। एक बार फिर उसका शान्त प्रसन्न मूड वापस हो आया वह खिड़की के पास जा कर खड़ा हो गया।

यूकीलिप्टस और लारेल की महक खिड़की से हो कर आ रही थी। सड़क पर मोटरें जा रही थीं और उनके टायर के फिसलने

की आवाज साफ सुनाई दे रही थी। दूर, समुद्र के किनारे पर औरतें और बच्चे घूम रहे थे, मछुये अपने जाल की मरम्मत कर रहे थे और एक लड़का बाइसिकिल पर चढ़ा चक्कर काट रहा था।

केसो एक गाना गाने लगा। बहुत धीरे धीरे, जिससे कि कोई दूसरा न सुन सके।

लड़की ने प्रश्न किया, "ऊब गये हो ?"

उसने ईमानदारी से उत्तर दिया, "नहीं।"

यह वास्तव में सच था। वह उस कमरे में बिना ऊबे हुये घंटों गुजार सकता था। इतनी सुन्दर और मोहक लड़की को देखते रहना कम आनन्ददायक नहीं था। उसने लड़की को विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया। पर वह लड़की उससे भी अधिक चतुर थी। केसो को आने वाले क्षणों में अधिक दिलचस्पी थी।

लड़की ने उससे प्रश्न किया, "क्या साकेन में सभी व्यक्ति बड़े चतुर हैं ?"

"ठीक ऐसा तो नहीं है।"

दोनों ही हँस पड़े। केसो जोर से और खुलकर और वह लड़की धीरे धीरे। वह ऐसे सिर हिला रही थी जैसे कह रही हो कि अन्दर बैठे लोग सुनेंगे तो क्या कहेंगे ?

लड़की ने कहा, "मेरा ख्याल है कि आप किसी विशेष आवश्यक कार्य से आये हुये हैं।"

केसो ने कहा, "मैं........मैं क्या कहूँ ? एक सीधे साधे किसान के पास आवश्यक कार्य ही क्या हो सकता है ?"

लड़की, "आप बहुत ही शर्मीले हैं।"

केसो प्रसन्न हो उठा। खिल-सा उठा।

उसी समय प्राइवेट दफ्तर का दरवाजा खुला और दो व्यक्ति बाहर आये। वे किसी की तरफ देखे बगैर और बिना अभिवादन किये ही जल्दी जल्दी बाहर चले गये।

"ठीक ही हुआ। अन्दर जाइये, कामरेड।"

केसो ने उसे याद दिलाया, "मीरबा।"

भीतर उसने अपने को एक बड़े और साफ कमरे में पाया। दीवारों से मिलाकर कुर्सियां रक्खी हुई थीं। बाईं ओर एक लिखने-पढ़ने का मेज रक्खा हुआ था। उसी से मिला हुआ एक बड़ा मेज भी रक्खा हुआ था। टेबिल पर बहुत-सी पुस्तकें रक्खी हुई थीं। अखबार भी रक्खे हुये थे। दाहिनी ओर कई टेलीफोन लगे हुये थे।

तरुण पहाड़ी से मिलने के लिए एक आदमी उठ खड़ा हुआ। वह साधारण ऊँचाई का था, काला सूट, सफेद कमीज और नीली टाई पहिने था। चेहरा उसका चौड़ा और गालों की हड्डियां उठी हुईं थीं। मस्तक उसका ऊँचा था और बाल घुँघराले थे।

केसो को यह सब देखने में एक क्षण से अधिक नहीं लगा होगा।

दफ्तर में बैठ हुआ व्यक्ति बोला, "महाशय, अन्दर आइये। एक असाधारण आगन्तुक, आइये! आइये!"

दोनों ने हाथ मिलाया।

इवानोविच ने पूछा, "आपका नाम......मीरबा है?"

केसो ने फौजी ढंग से उत्तर दिया, "कामरेड मीरबा।"

इवानोविच, "फौजी ढंग से क्यों ? हम तो सिविलियन हैं। क्या आप पुराने फौजी सिपाही हैं ?"

"हाँ।"

"बताइये मुझे, आप कब कब कहाँ रहे हैं ? आप क्या करते रहे हैं ?"

केसो कुछ परेशान हो गया। उसे यह आशा नहीं थी कि कोई उससे यह सब प्रश्न पूछेगा। वह अपनी जेब से गाँव की सामूहिक कृषि से सम्बन्धित कागज निकाल चुका था। अब उसने उस कागज को फिर जेब में डाल दिया। एकाएक वह कुछ शर्मिन्दा महसूस करने लगा। शायद यह व्यक्ति ऐसा समझे कि वह कोई भाषण तैयार करके लाया था।

केसो बोला "मुझे युद्ध का प्रथम ज्ञान रोस्टोव में हुआ था। मैं घायल हो गया था। कीव के उद्धार में सहायता की थी। वहाँ फिर घायल हुआ। पोलैंड भी गया था।"

इवानोविच 'क्या बर्लिन नहीं जा पाये थे ?"

केसो, "नहीं, मैं पिछड़ गया था। नौ मई आ गई थी।"

इवानोविच, 'कोई बात नहीं। यदि तुम नहीं जा सके थे तो भी और लोग तो पहुँच ही गये थे। पार्टी सदस्य हो ?"

"१६४३ से।"

टेलीफोन की घंटी बजी, इवानोविच ने थोड़े में उत्तर दे दिया और फिर केसो से प्रश्न किया, "मेरा ख्याल है कि आपने काफी अर्से से हमारा शहर नहीं देखा है।"

"पाँच साल से, उस एक दिन को छोड़कर, जब मैं मोर्चे से घर वापस जाते हुये यहीं से गुजरा था।"

"मुझे यह जानने में बड़ी प्रसन्नता होगी कि आपको इस बार यह शहर कैसा लगा ?"

"अब यह पहिले से अधिक—युद्ध के पहिले से अधिक—सुन्दर है ।"

इवानोविच ने नवागन्तुक को बाँह पकड़ कर उठाया और दीवार पर टंगे नक्शे के पास ले गया ।

नक्शों पर बनी हुई जगहों को दिखाते हुए इवानोविच ने कहा, "मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि अब हालत क्या है। दस सड़कें ठीक कर दी गई हैं। इस साल हम इन सड़कों को ठीक करवाने जा रहे हैं। इस जगह पर जनसाधारण के लिए स्नानगृह बनवायेंगे और यदि प्रबन्ध हो सका तो एक सिनेमा भी। कुल खर्च लगभग......।"

इवानोविच अपने ही विचारों में डूबने-उतराने लगा। बाह्य रूप से तो उसने ऐसी कोई बात नहीं कही थी जो विशेष महत्व की हो या अविश्वसनीय हो। खर्च का तखमीना बताते ही उसे किसी बात का ध्यान आ गया और उसने टेलीफोन का चोंगा उठाया। शहर की सोवियत का नम्बर मिला कर वह इस वर्ष के खर्च के बारे में बातें करने लगा। फिर उसने केसो से कहा, "कामरेड मरिबा, जितना अन्दाज मैंने दिया है उसमें यदि एक लाख और जोड़ दो तो हमारे शहर के पुनःनिर्माण और अचल सम्पति पर होने वाले खर्च का पता लग जायेगा।"

इवानोविच इतने विस्तार से पूरी योजना केसो को समझा रहा था जैसे वह केसो से कुछ धन सहायता के लिये मांगने वाला हो! केसो यह नहीं समझ सका कि जिला कमेटी का सेक्रेटरी इतने विस्तारपूर्वक सारी योजना क्यों समझा रहा है। ऐसा

लगता था जैसे वह केसो की खूब चापलूसी कर रहा हो। लेकिन इतनी बातों का आखिर मतलब क्या था? साकेन में तो लोग अपनी योजनाओं को छिपाते थे।

इवानोविच नक्शे पर उंगलिया रख बताते हुये कहता ही रहा, "यहाँ पर दलदल है। इसको सुखाया जाता है।……… आप लोगों के यहाँ स्कूल खोलने में कितनी देरी लगेगी? इसकी इमारतें अच्छी बनवाई जायेंगी।"

फिर वह केसो से सभी चीजों के बारें में विस्तार से पूछने लगा। सामूहिक खेतों, स्कूल, पार्टी संगठन के कामों, गाँव की सोवियत, साकेन निवासियों आदि सबों के बारें में प्रश्न कर डाले। केसो ने सभी प्रश्नों का उत्तर दिया, पर वह यह भी देख रहा था कि कामरेड सेक्रेटरी उसके उत्तर से पूरी तौर से संतुष्ट नहीं हैं। ऐसे मौकों पर केसो अपना माथा मलने लगता था, जैसे कोई मक्खी बैठ गई हो!

केसो ने कहा, "साकेन निवासी साधारण जीव हैं। अच्छे भी हैं, बुरे भी हैं।"

इवानोविच ने प्रश्न किया, "अच्छा तुम कैसे हो? अच्छे या बुरे?"

केसो ने कहा, "मैं ………मैं ……मैं क्या कहूँ?"

इवानोविच मुस्कराते हुये टेबिल पर बैठ गया।

इवानोविच ने कहा, "देखो, तुम अभी तक अपने बारे में ठीक से नहीं जानते हो। अपने बारे में कुछ और बताओ।"

केसो ने अपने गांव के बहुत से व्यक्तियों का नाम ले ले कर उनके बारें में बताया।

इवानोविच ने पेन्सिल खटखटाकर कर उसे बीच में टोकते

हुये कहा, "मेरे ख्याल में अभी गांव में और ज्यादा भले लोग हैं। बहुग से और......लेकिन उनके बारे में फिर बातें करेंगे। अच्छा अब बताओ, तुम लाये क्या हो ?"

सेक्रेटरी ने उसकी ओर ऐसे देखा जैसे वह जानता हो कि केसो क्या लाया है। उसकी आँखें भी वैसी ही थीं, जैसी बहुत से साकेन-निवासियों की होती हैं।

केसो ने कहना शुरू किया, "यह एक महत्वपूर्ण विषय है। मेरे मस्तिष्क में एक नया विचार पैदा हुआ है। यह अपने गांव की पैदावार बढ़ाने से सम्बन्धित है।"

"कामरेड मीरवा, विचार तो आप का अवश्य ही बड़ा उत्तम है। बहुत ही बढ़िया। आप ने सोवियत का एलान पढ़ा है ?"

"कैसा एलान !"

इवानोविच ने एक छपा हुआ कागज उसके आगे निकाल कर रख दिया। उसने कहा "इसे पढ़ो, इसे पढ़ो। यह फसल के बारे में ही है। हमारी सरकार ज्यादा अच्छी फसलें पैदा करने वालों को इनाम देने वाली है और उन्हें 'सोशलिस्त लेबर हीरो' की उपाधि भी देगी। तुम क्या सोचते हो ?"

केसो उस एलान को पढ़ने लगा। वह मक्के के सम्बन्ध में लिखी हुई पंक्तियों पर नजर गड़ा कर देखने लगा।

वह बोला, "आश्चर्यजनक।" उत्तेजित हो कर उसने अपने हाथ मेज पर पटके। उसने इवानोविच से क्षमा मांगी।

इवानोविच केसो की ओर ध्यानपूर्वक देखता रहा। उसे उस व्यक्ति का भोला चेहरा, उसके मजबूत हाथ आदि बहुत ही अधिक लुभावने लगे।

केसो ने कहा, "कामरेड इवानोविच मैं इस एलान के बारे में कुछ भी नहीं जानता। एक हेक्टर में सौ पूड ही साकेन में आश्चर्यजनक समझा जाता है। पर यह अच्छा नहीं है।"

"मैं पूरी तौर से आपका समर्थन करता हूँ, कामरेड मीरवा।"

"इसीलिये हम लोगों ने इस समस्या का कोई हल निकालने को सोचा है।"

"सो कैसे?" यह कह कर वह आराम से कुर्सी पर बैठ गया और केसो की बातें ध्यानपूर्वक सुनने के लिये तैयार हो गया।

केसो ने कहना शुरू किया, "पहिले तो जमीन को ज्यादा गहरी जोतो। दो बार जोता जाय और निराई भी ठीक तरह की जाय।"

इवानोविच ने समर्थन करते हुये कहा, "हां.....हां। यह ठीक है। ठीक खेती का तात्पर्य है तिगुनी फसलें।"

केसो कुछ उत्साहित हो गया। उसकी हिम्मत और बढ़ गई। उसने कहा—"खेती का तो मतलब ही यह है। लेकिन इतना ही काफी नहीं है। अभी और भी बाकी है। हमारे गांव में एक पहाड़ी है। और इस पहाड़ी में कामरेड सेक्रेटरी, मेरा ख्याल है अच्छी किस्म की खाद—फासफोराइट—निकल सकती है।"

इवानोविच स्तब्ध हो गया और पूछा, "क्या, फासफोराइट?"

"हां, फासफोराइट.....। यदि हम उसे खाद की तरह इस्तेमाल करें तो अवश्य हम लोगों का बड़ा लाभ हो। एक ही बार में उपज दुगनी हो जाय। (फिर कुछ सहम कर) मैंने भी कृषि-शास्त्र का थोड़ा अध्ययन किया है। अच्छा एक क्षण रुकिये"

वह दौड़ कर बाहर गया और अपना बहुमूल्य थैला ले आया। उसने उसे खोलकर एक कुर्सी पर रख दिया और उसमें से थोड़ी सी मिट्टी निकाली। फिर कहा,

"देखिये यह रही। मैं इसे हथौड़ी से चूर कर के यहां इसका विश्लेषण कराने के लिए लाया हूँ।"

केसो ने अपनी योजना उसके सामने रख दी। वह ध्यान-पूर्वक सेक्रेटरी के मुंह पर आने वाले भावों को देखता रहा। इवानोविच बिना रोके सुनता रहा। उसने थोड़ी-सी मिट्टी उठाई और उसे सूंघा फिर फौरन ही उठ कर टेलीफोन का चोंगा उठाया। नम्बर मिलाने के पहिले उसने केसो से पूछा, "क्या यह कोई बड़ी पहाड़ी है ?"

केसो ने उत्तर दिया, "बहुत ज्यादा..... गाड़ियों।"

"क्या तुम्हें मालूम है कि हम लोग फासफोराइट प्राप्त करने के लिये कितने परेशान रहे हैं। हम लोग हजारों मील दूर से फासफोराइट मंगाते हैं। यदि हमें पास ही में कहीं फासफोराइट मिल जाय तो फिर क्या कहना है ? फासफोराइट.... यह फासफोराइट ही तो है।। गुण के बारे में मालूम नहीं।" इवानोविच ने केसो की ओर ध्यान से देखा।

' उसके गुणों के बारे में मैं नहीं जानता कामरेड इवानोविच।"

"बहुत बुरा है। पर यदि यह वास्तव में फासफोराइट है तो तुम वास्तव में भाग्यवान हो.....। हां, इसको उस तरह नहीं तोड़ा जा सकता है जैसे तुमने तोड़ा है। तुमको चट्टान तोड़ने वाली मशीनों और मोटरों की जरूरत होगी ... । पर कोई बात नहीं है, तुम्हें ज्यादा परेशानी नहीं होगी।"

इवानोविच ने एकाएक टेलीफोन का चोंगा उठा लिया।

उसने कहा, " हैलो ! मुझे जिला कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष और कृषि-विभाग का नम्बर दे दो। और फिर......। बस इस समय इतने से ही काम चल जायेगा........। हां, हां,

हैल्लो......क्या आप यहां फौरन आ सकते हैं। एक आवश्यक काम आ पड़ा है। बहुत अच्छा......हां... हैल्लो ...इस लाइन को कौन लिये है ....? सुनिये यहां साकेन से एक साथी आया है जो आप से मिलना चाहता है। मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ।......क्या आप आ सकेंगे? मैं पांच मिनट में आप के आने की आशा करूंगा।"

उसने एक बटन दबाया और एक लड़की अन्दर आई। उसने लड़की से कहा, "सेक्रेटरियों से कहो कि यहां आयें।"

अलेक्जेन्डर इवानोविच विचारमग्न होकर कमरे में इधर उधर घूमने लगा।

उसने थैले की ओर इशारा करते हुये केसो से पूंछा, "क्या इसी कारण तुम शहर आये हो?"

केसो ने उत्तर दिया, "हां।"

"और तुम्हारे गांव वाले इसके बारे में क्या सोंचते हैं।"

"उन्हें विश्वास नहीं होता है। वे मेरे काम को शक की निगाहों से देखते हैं।"

इवानोविच, "पर क्या साधारण ढंग से वे तुम्हारे साथ हैं?"

केसो (झूठ) बोला, "हां, सभी लोग।"

इवानोविच, "मुझे शक है। सब लोग इतने उत्सुक नहीं हो सकते। अपने साथ यह एलान जब तुम घर जाओ तो ले जाओ। एक दो और चीजें ले जाओ और उन्हें पढ़ने के लिये दो।"

एक एक करके सेक्रेटरी आने लगे और अभिवादन करके बैठ गये।

किसी ने प्रश्न किया, "आज क्या है, ब्यूरो मीटिंग?"

अलेक्जेन्डर इवानोविच ठट्ठा मार कर हंस पड़ा। फिर उसने

कहा, "करीब करीब। आप सब यहां, करीब आइये। इस थैले में देखिये क्या है? लेकिन पहिले मैं साकेन से आने वाले कामरेड मीरबा का परिचय तो करा दूं।"

"साकेन" शब्द सुन कर सब चौंक गये।

किसी व्यक्ति ने कहा, "ओ हो! इस बार आप जल्दी आ गये हैं।"

किसी दूसरे ने पूछा, "साकेन से! इतनी जल्दी कैसे आ सके?"

किसी और ने पूछा, "क्या सड़क खुल गई है?"

केसो ने उत्तर दिया, "मैं अपने पैरों पर चल कर आया हूँ।"

किसी ने पूछा, "कोई विशेष बात तो नहीं हुई?"

केसो ने उत्तर दिया, "नहीं, कोई नई बात नहीं हुई।"

एक घंटे बाद केसो ने इवानोविच से विदा मांगी।

इवानोविच ने उसके जाते समय कहा, "कामरेड मीरबा, हम आपकी योजना का समर्थन करते हैं। ऐसा मालूम होता है कि साकेन के भाग जग उठे हैं। कल या परसों तक विश्लेषण का पता लग जायेगा। लेकिन मेरे ख्याल से तुम अकेले अपने अन्वेषण ही पर निर्भर हो। बिल्कुल ठीक।......पहाड़ी का भी अपना समय आयेगा।......यदि विश्लेषण तुम्हारे पक्ष में रहा तो तुम्हें एक मिल, एंजिन और कोयले की आवश्यकता होगी। यह आसान काम नहीं है। पर अभी तो गांव वालों का काम है अच्छी जुताई करना। पार्टी संगठन से सम्पर्क बराबर कायम रक्खो, सब काम बन जायेगा। हम बोलशेविक एक दूसरे की बड़ाई कर चापलूसी नहीं करते। लेकिन फिर भी तुम वास्तव में बहुत भले आदमी हो।......कुछ लोग यह समझ सकते हैं कि वहां रह कर आप

दुनिया से दूर रहते हैं। वे गलत समझेंगे। सारा देश तुम्हारे साथ है। तुम अकेले नहीं हो। बोल्शेविक भाव तो सभी जगह व्याप्त हैं। इधर देखो, (एक नकशे की ओर इशारा करते हुये) यह सोवियत यूनियन है। एक बहुत बड़ी विश्व शक्ति है। तुम इसके एक भाग हो। यहां रहते हुये तुम वैसे ही काम करो जैसे मास्को में हो, जैसे स्तालिन के समीप हो, समझे?"

इवानोविच धीरे धीरे बोल रहा था। इससे वह कुछ शुष्क दीख रहा था। लेकिन यदि उसके हावभाव में मोहकता नहीं थी तो उसके स्वर इतने नपे तुले और वजनी थे कि केसो आकर्षित हुये बगैर रह नहीं सकता था। उसकी बातें सुन कर केसो को ऐसा लग रहा था जैसे वह हवा में उड़ रहा हो।

उसने कहा, "कामरेड मीरबा याद रक्खो, फसल ही सब कुछ है। इसके लिये कोई कोर कसर मत उठा रक्खो। याद रक्खो कि मास्को तुम्हारे गल्ले पर भी निर्भर है।......हां, हां तुमको कोई भूल नहीं सकता। इन्हीं गर्मियों में हम साकेन तक हवाई जहाज का रास्ता भी खोल रहे हैं।..... युद्ध के पहिले तो शायद कोई वहां तक उड़ कर गया भी था।"

केसो ने कहा, "हां, एक बार।"

इवानोविच, "हवाई जहाज बड़ी अच्छी चीज है। तुम्हारे यहां तक 'यू-टू' जाया करेगा। शुरू में हफ्ते में केवल एक बार। पर थोड़े दिनों में ही सब ठीक हो जायेगा और नियमित रूप से हवाई जहाज का रास्ता बन जायेगा। तुम क्या कहते हो!"

केसो चौंक गया, "सचमुच में हवाई जहाज का रास्ता बनेगा! वाह!"

इवानोविच, "अच्छा कामरेड मीरबा, कल या परसों तक

विश्लेषण का फल मालूम हो जायेगा और तब मुझसे मिलो।... हां, हम तुम्हें जहाज से वापस भेजेंगे। इसमें पांच-छ दिन लग जायेगा।"

"लेकिन मुझे जल्दी है। बुवाई का वक्त करीब आ गया है।"

"फिर भी, आना अवश्य। उसी समय देखेंगे।"

केसो उस समय ऐसा महसूस कर रहा था जैसे किसी बढ़िया दावत को खाकर निकला हो। उसका सिर चक्कर खा रहा था पर वह शराब नहीं पिये था। उसके चारों ओर की चीजें घूम रही हों पर इसके पैर स्थिर हों। सारा संसार रंगीन हो गया हो। यह सब कोरी कल्पना नहीं, केसो के लिये वास्तविकता थी। हाँ, सौ फीसदी वास्तविकता!

(२५)

साकेन में जीवन मन्द गति से आगे बढ़ता रहा।

केसो की टोली ने येकप के निरीक्षण में अपने खेतों की जुताई पूरी कर डाली। येकप अपने पुत्र की वापसी के लिये अधीर हो रहा था। साधारण तौर से 'प्राइवेट सामूहिक खेत' में पिछले वर्ष के मुकाबले में इस साल काम अच्छा हो रहा था।

परन्तु दिक्कतों की भी कमी नहीं थी।

बाढ़ के कारण गूदल के घर का बिजलीघर का बांध बह गया था। बिजली की रोशनी कुछ समय के लिये अब नहीं रही थी।

बुड्ढा शांगेरी बहुत बीमार हो गया था। डाक्टर को उसके बचने की आशा नहीं थी। वह शांगेरी को देखने के लिये प्रति दिन शाम को आया करता था।

निकोला शिकार में व्यस्त था। एक दिन शिकार पर जंगलों में निकल जाने के बाद कई दिन तक घर वापस नहीं लौटता था।

उसने कान्स्टैन्टिन पर दबाव डाल कर शिकारियों की एक टोली संगठित करवा डाली थी। उसने कान्सटैन्टिन को समझाया था, "मुनाफें तो सामूहिक कृषि संघ को ही मिलेंगे। हाँ, एक बार काम चल निकलने पर उसे आगे बढ़ाया भी जा सकता है।"

पहिली मई का महोत्सव समीप आ रहा था। कान्सेटेन्टिन और मुशाग इस महोत्सव को मनाने के लिये योजनायें बना रहे थे। एक जगह मई दिवस का उपहार तैयार हो रहा था—योजना में अनुमानित संख्या से ५०,००० अधिक पौधे। कामा और नीना, जिन्होंने सब से अच्छा काम किया था, बोनस पाने वाली थीं।

अडासुर का व्यापार भी अच्छा चल रहा था। बुरे मौसम में भी दूकान ठीक ही चल रही थी। पर राशित ......उसे छुट्टियों से कोई मतलब नहीं था। उसे अपने काम की कमी न थी।

पुरुषों की इज्जत का प्रश्न, सदियों से चला आने वाला क्रम उसे बदला लेने के लिये उकसा रहा था। राशित ने तय किया कि बातों की जगह कुछ काम कर दिखाना चाहिये। वह नहीं चाहता था कि उसके दोस्त उसकी हंसी उड़ायें।

इस प्रकार उसकी योजना पूरी करने के लिये समय निश्चित हो गया।

षड्यंत्रकारी मार्टेन की मांद में इकट्ठा होने वाले थे। साकेनियनों की परम्परा के अनुसार यह स्थान ऐसे कामों के लिये अत्यन्त उपयुक्त था। एक पेड़ के ठूंठ पर बैठा हुआ ऐन्टन धूम्रपान करते हुये अपने साथियों के आने का इन्तज़ार कर रहा था। गोधूलि बेला की उस झिलमिलाहट में वह प्रेतात्मा-सा दिखाई पड़ रहा था।

वह बोला, "तो तुम आ गये! मुझे ऐसा लग रहा था जैसे तुमने अपनी योजना बदल डाली हो।"

येनिक और ऐन्टन झाड़ी में घुस गये और राशित ऐन्टन के स्थान पर बैठ गया। यह जगह पगडन्डी के बहुत पास थी। वह एक नई गरम कमीज़ पहिने था। चमड़े का पैंट और भेड़ की खाल का कोट भी पहिन रक्खा था। उसके बूट बहुत बड़े थे और सिर पर एक अस्त्राखान हैट रक्खे था जिसे वह अडामुर से मांग कर लाया था। वह पेड़ के ठूंठ पर बैठा था, उसके विचार दौड़ कर खेत की क्यारियों का चक्कर लगा रहे थे। थोड़ी ही देर में उसने कामा को जाते देखा। पगडन्डी की मोड़ पर उसने नीना से विदा मांगी और फिर अपने घर की ओर आगे बढ़ने लगी।

वह लड़की चौंकने न पाये, इस ख़्याल से एक गाना गाते हुये राशित उससे मिलने के लिए आगे आया।

राशित को देख कर कामा को अचम्भा नहीं हुआ। उसने उसे अभिवादन किया और फिर अपने रास्ते पर आगे बढ़ने लगी। परन्तु वह उसके रास्ते को रोक कर खड़ा हो गया और बोला, "मैं यहां तुम्हारे आने का इन्तज़ार ही कर रहा था जिससे घर पहुँचा आऊँ।"

कामा बोली, "धन्यवाद।"

राशित ने अपना बोलना जारी रक्खा, "कामा क्या तुम जानती नहीं कि तुमने मुझे कितना परेशान कर रक्खा है?...... हां, हां! कामा, मेरा ख़्याल है कि मेरा प्यार यहां तक आ पहुँचा है......ओफ़! हंसो नहीं, हर चीज़ की एक सीमा होती है।"

उसने मुस्करा कर जवाब दिया, पर इस समय राशित मजाक की मनः स्थिति में नहीं था।

दोनों की बातचीत की दिशा ने एक अजीब रूप ले लिया। राशित के स्वर में धमकी और गुस्सा का मिश्रण था। यद्यपि वह लड़की डर रही थी पर वह चुप रही और उसने पहिले की ही तरह बातचीत जारी रक्खा।

राशित का धैर्य समाप्त हो चला। वह बिगड़ कर बोला, "तुम्हें मुझ से शादी करनी होगी.. ...बस और कुछ नहीं।"

"ऐसा कभी नहीं होगा।

उसने सीटी बजाई और उसे पकड़ लिया। ऐन्टन और येनिक झाड़ी से निकल आये और आंखें झपते ही एक कपड़े से कामा को ढँक दिया और एक घोड़े पर बैठा कर चल दिये। बस कामा का अपहरण हो गया !

इस अपहरण में वास्तविक प्यार का लेशमात्र मिश्रण न था। न तो कामा ही प्रसन्न थी और न घुड़ सवार के हृदय में ही कोमल भाव उदय हुये थे। घोड़ा भी उतनी तेज़ी से नहीं भाग रहा था, जितनी तेज़ी से उसे भागना चाहिये था। वह बस चल रहा था, जैसे उस पर साधारण ढंग से कोई सामान ढोया जा रहा हो।

अपहरण करने वाला भी अपहृत से कम तकलीफ़ नहीं पा रहा था। उसके हाथ सीधे पड़ गये थे, पैर ठंडे हो गये थे और गर्दन करीब करीब मुड़ गई थी। राशित को ऐसा कुछ भी नहीं अनुभव हो रहा था जिससे मालूम हो कि वह किसी रोमांस का नायक है। सफल अपहरणकर्ता को जो प्रसन्नता होती है उसका एक टुकड़ा भी उसे प्राप्त नहीं था।

दो घंटे बाद कामा ने अपने को किसी अजनबी घर में एक बेंच पर बैठी पाया। कमरे में सन्नाटा छाया था, लेकिन दूसरे

कमरे में पुरुषों की आवाज़ सुनी जा सकती थी। कामा मुश्किल से अपनी गर्दन ऊंची कर पा रही थी। उसके शरीर में दर्द हो रहा था जैसे किसी ने उसे बहुत मारा हो। लेकिन फिर भी वह किसी भी व्यक्ति की आंखें निकाल लेने को तैयार थी, जो उसके नज़दीक आने की हिम्मत करता।

दरवाजा खुला और एक वृद्धा स्त्री खाना लिये अन्दर आई।

वृद्धा प्यार भरे स्वर में बोली, "बेटी, दुखी न हो। भवितव्यता के आगे गर्दन झुका दो। भाग्य में जो लिखा है, वह हो कर ही रहेगा।...हम, स्त्रियों की यही हालत है। कोई हमारा अपहरण करता ही है। (बाहर वाले कमरे की ओर इशारा करते हुये) पहिले वे और फिर मृत्यु।"

कामा उठ खड़ी हुई। उसके पैरों में ताकत नहीं थी। फिर भी वह वृद्धा डर कर पीछे हट गई।

कामा बोली, "तुम्हें ऐसा कहते शर्म नहीं आती? ऐसे नीच काम में तुमने हिस्सा ले रक्खा है। ऐसे बदमाशों की तुम सहायता करती हो। क्या तुमने मुझसे पूछा कि मैं उससे शादी करना भी चाहती हूँ या नहीं?"

वृद्धा ने अपने हाथ फैला दिये और बोली, "क्यों, मेरी बेटी...........उसने तो मुझे बताया था कि वह अपनी पत्नी के साथ आ रहा है। मैं कैसे जान सकती थी? .. हम सब आदमी ही हैं। ......मैं तुम्हारा स्वागत करती हूँ।"

कामा आग के नज़दीक बैठ गई और बोली, "बड़ी ठंडक है। आग को तेज़ करने की आवश्यकता है।"

वृद्धा बोली, "मेरी बेटी......मैं आ रही हूँ......।"

"नहीं, मैं ठीक कर लूंगी। बुड्ढी दादी, मैं तुम्हें कष्ट नहीं देना चाहती। तुम मुझे कुछ खाने को दो ......मुझे भूख लगी है। .. पर हां, वे बदमाश कहां हैं?"

"रसोई में।"

कामा ने एक पुराना अस्त्र दीवार से उतारते हुये पूछा, "एक मिनट रुको। क्या यह काम देता है?"

"नहीं बेटी, नहीं। यह करीब आधी शताब्दी से यों ही रक्खा है।"

"कोई हर्ज नहीं। इससे डन्डे का काम तो लिया ही जा सकता है। इसे मुझे दे दो और उन्हें बता दो कि इसमें गोली भरी हुई है।"

वृद्धा ने सिर हिला कर स्वीकृति दे दी और दरवाजे से सट कर खड़ी हो गई।

"बदमाश अपहरणकर्ता को मेरे पास भेजो तो।"

वह अत्यन्त क्रोधित थी। ईश्वर ही बचाये जब साकेन की स्त्रियों क्रोधित हों........ओफ! कामा ने उस बन्दूक को पैर पर रख कर उसकी परीक्षा की। उस हथियार को देख कर उसकी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा। उसने बन्दूक को उठा कर निशाना साधा।

उसी क्षण दरवाजा खुला और राशित सामने दिखाई दिया वह परेशान और उत्तेजित था। लड़की के हाथ में बन्दूक देख कर वह घबड़ा कर पीछे हट गया।

"अरे.... यह तुम क्या कर रही हो?"

"कुछ नहीं। इस बन्दूक को देख रही हूँ। अच्छी बन्दूक है। लेकिन मालकिन कहां हैं? मैं भूखी हूँ।"

राशित ने सोचा कि "या तो यह पागल है, या जो इसके पल्ले पड़ा है, उससे पूरा फायदा उठाना चाहती है।"

वह दौड़ कर घर की मालकिन के पास गया और खाना लाने के लिये कहा। फिर जल्दी ही वापस लौट कर एक कोने में बैठ गया।

कामा ने पूछा, "और तुम्हारा साथी कहां है?"

"रसोई घर में।"

"वह यहां क्यों नहीं आता है? मैं उसे देखना चाहती हूँ।"

राशित (नज़दीक आते हुये), "उसकी चिंता छोड़ो।"

"एक कदम भी आगे मत बढ़ना। समझे . !"

राशित आगे नहीं बढ़ा।

एक क्षण बाद उसने कहा, "मेरा ख्याल है कि तुम मेरे भावों को समझ रही हो। मैं......मेरा प्यार . ...मैंने अपनी सारी शान्ति खो दी है।"

कामा ने उसकी ओर देखा। फिर बोली, "मैं जानना चाहती हूँ कि हम किस युग में हैं? यह १९४७ है? भालू की मांद जैसे साकेन में भी सब चीजे सरकस जैसी दिखाई पड़ रही हैं।"

"मैंने साकेन की परम्परा में बट्टा नहीं लगने दिया है।"

"आह ... ..पुरानी परम्पराओं ने तुममें बट्टा लगा दिया है।"

राशित कमरे में टहलने लगा और उसकी ओर बढ़ कर आया।

"बस दूर रहो।" यह कह कर कामा ने अपनी बन्दूक तान ली।

राशित मुस्करा कर बोला, "पर यह काम लायक नहीं है।"

"पर इसका कुन्दा तो काम लायक है।"

"पर तुम पागल हो। तो हम लोग कुत्ते-बिल्ली का खेल सुबह से शाम तक खेलते रहेंगे। पर इससे लाभ क्या होगा ?"

"तुम समझ जाओगे, जब मैं तुमसे सुबह होते ही एक घोड़ा लाकर घर ले चलने के लिये कहूँगी।"

राशित स्तब्ध हो गया। उसी समय वह बुड्ढी औरत अन्दर आई। उसके हाथ में रकाबियाँ थीं। उसने कामा को बात करते सुना।

उसने आश्चर्यचकित हो कर पूछा, "क्या तुम अकेले जाओगी ?"

कामा उसकी बुजुर्गी का ख्याल कर उठ खड़ी हुई और कहा, "हाँ, अकेली ही, यदि उसमें इतनी जिम्मेदारी का भाव नहीं है।"

राशित, "तुम अपने घर वापस जाओगी ?"

कामा, ' फिर और कहाँ ?"

"सोचो तो कामा। तुम तो अब मेरी पत्नी हो।"

"तुम यह कैसे समझे ?"

मैंने कहा न, एक तरह से। चूँकि तुमने एक रात्रि एक साथ मेरे कमरे में ही व्यतीत की है मेरा ख्याल है कि साकेन में इतना ही काफी है।"

"यह मैं नहीं जानती। पर तुम कितने बड़े बेइमान हो।"

"मैं कसम खाकर कहता हूँ ·······सब से पहिले तो केसो ही तुमसे घृणा करेगा।"

"केसो !"

"आह. मेरी बच्ची। तुम नहीं जानती, पुरुष क्या होते हैं। कौन आदमी दूसरे का जूठा पसन्द करता है ?"

कामा शान से उठ खड़ी हुई। बूढ़ी स्त्री ने अनिच्छा होते

हुये भी उसकी तारीफ की । उसकी आँखों के डोरे लाल हो गये ।

उसने कहा, ' यदि केसो भी तुम्हारी ही तरह निकला तो उससे पहिले मैं ही घृणा करने लगूँगी । मैं उसके बग़ैर भी काम चला लूँगी ।"

बूढ़ी स्त्री कामा के समीप गई और उसकी कमर में हाथ डाल कर उसे चूम लिया । कामा को ऐसा लगा जैसे किसी पत्थर से वह छू गई हो ।

राशित हैट पहिन कर यह कहता हुआ चला गया, "ठीक है । देखूँगा कि सबेरे तक क्या हाल होता है ।"

उसकी इस बात से बूढ़ी स्त्री भी रुष्ट हो गई और बोली, "क्या बातें करते हो ? राशित मुझे घर में मेहमानों का दुर्व्यहार इतना बुरा नहीं लगता । तुम जाओ रसोईघर में सो रहो । हम लोग यहीं सोयेंगे । अच्छा होता यदि तुमने यह काम न किया होता ।"

बिस्तर पर पड़े पड़े राशित अब भी सोच रहा था कि शायद कामा का हृदय परिवर्तित हो जाय ।

जब सुबह हुई और राशित ने कामा के कमरे में झाँक कर देखा तो उसने कामा को मालकिन से घुल मिल कर बातें करते हुये पाया ।

(२६)

अप्रैल के एक लुभावने दिन में जब कि सारी दुनिया बसन्त के सूर्य की किरणों के आलिंगन से प्रफुल्लित हो रही थी साकेन में एक महत्वपूर्ण घटना हुई।

आकाश में एक काला विन्दु दिखाई पड़ा। धीरे धीरे उसका आकार बड़ा होता गया और थोड़ी ही देर में लोगों ने देखा, वह हवाई जहाज़ था। उसने गाँव का एक-दो चक्कर लगाया और फिर वैजर के मैदान पर ठहर गया। लोग दौड़े दौड़े वहाँ तक आये और इस प्रकार से घेर कर खड़े हो गये जैसे हवाई जहाज़ उनका सम्मानित मेहमान हो!

सिर से पैर तक चमड़े के कपड़े पहिने हुये एक तरुण व्यक्ति नीचे उतरा। गाँव वालों ने उससे गले मिलना शुरू कर दिया। उसने अपने चश्मे उतार कर पूछा, "यही साकेन है?"

एक ने उत्तर दिया, "हाँ, यही साकेन है।"

वायुयान-चालक ने प्रश्न किया, ' मेरा ख्याल है कि मैं ही प्रथम उड़ाका हूँ जो यहाँ उतरा हूँ ?"

गाँव वालों में से एक बोला, "नहीं, आप देर में आये हैं। आप जैसे यात्री युद्ध के पहिले भी आये थे।

अलन भाई, डाड और डामे कुछ असंतुष्ट से दिखाई दिये।

डाड बोला, "सात वर्ष पहिले ऐसी ही मशीन पर एक और व्यक्ति भी आया था। हाँ...... बिल्कुल ऐसे ही केनवैस के पंखे, साईउड ... तभी मैंने सोचा था, युद्ध के बाद इससे अच्छी चिड़ियाँ देखने को मिलेंगी।'

वायुयान-चालक कुछ उदासीन दिख रहा था। वह बोला, "हां, ठीक ही है। यह सब से नया माडल तो नहीं है, फिर भी वायुयान तो है ही। कभी टूटने का डर नहीं रहता इसमें, खास तौर से पहाड़ियों पर थोड़े ही दिनों में यहाँ दूसरे हवाई जहाज भी आयेंगे। तेज मशीनें, बड़े बड़े और आरामदेह होंगे।"

वायुयान चालक ने उतरते समय के अपने भावों को उनके आगे प्रकट किया। ऊपर से तो यही दिखाई देता था कि यहां केवल बर्फ ही बर्फ है, बादल रूई जैसे दिख रहे थे और पहाड़ तो जुते हुये खेत की मेंड़ जैसे लग रहे थे। उसने कहा, "यहां तक का हवाई जहाज का रास्ता बड़ा ही खराब है।" उसने जेब से एक पत्र निकाला और पता पढ़ते हुये पूछा, "केसो मीरवा कहां है ?"

उनमें से एक व्यक्ति ने उत्तर दिया, "वह शहर गया है।"

वायुयान चालक बोला, "नहीं, पांच दिन हुआ, वह वहां से चल दिया था।"

एक व्यक्ति, "तब तो वह यहां किसी क्षण भी आ सकता है।"

सभी व्यक्ति हवाई जहाज के चारों ओर भीड़ लगाये खड़े

रहे। शांगेरी ने उसके चारों ओर चक्कर लगाया। गूदुल ने उसे कुछ बतलाने को सोचा। वह शांगेरी को उसकी मशीन के पास तक ले गया और कहा, "यह एंजिन है। इसी से यह चलता है। यह यू-टू वायुयान है।"

शांगेरी, "देख रहा हूँ, बेटा। बड़ी अच्छी चीज है।"

गूदुल, "खराब नहीं है। पंखों को देखो। दो जोड़े हैं। चील को भी एक ही जोड़े होते हैं।"

उसने मशीन के बारे में इस तरह से बताया जैसे मेले में खिलौना बेच रहा हो। उस बुड्ढे व्यक्ति को कभी हवाई जहाज का सिरा, कभी पुछल्ला दिखाता। उसके पीछे पीछे करीब एक दर्जन व्यक्ति चल रहे थे। हर एक दूसरे को धक्का देकर, आगे आकर गूदुल की बातें सुनने का प्रयत्न कर रहा था। और गूदुल ऐसा विस्तृत विवरण दे रहा था जैसे उसी ने ही मशीन बनायी हो।

गूदुल के बातें समाप्त करते ही शांगेरी ने कहा, "तो ऐसे यह उड़ता है।"

गूदुल को लगा कि उसकी वक्तृता बेकार ही रही। ऐसा मालूम होता था कि उसे फिर से सब बातें बतानी पड़ेगी। गूदुल ने गला खराब होने की शिकायत की।

किसी ने कहा, "साइमन को बुलाया जाय।"

दूसरे बोल उठे, "हाँ, यही ठीक है। साइमन भी फौज में रह चुका है। उसे सब मालूम होगा।"

साइमन आगे आया। वह भी एक टोली का मुखिया था। वह अच्छा तरुण था। युद्ध में उसके बायें हाथ की तीन उँगलियाँ जाती रही थीं। यदि वह कुछ कम फुर्तीला रहा होता तो उसका

सिर न बचा होता। उसने गाँव वालों से पूछा कि वे उससे क्या चाहते हैं?

गाँववालों में से एक ने कहा, "हम इसके बारे में सब कुछ जानना चाहते हैं।"

साइमन, "इसमें जानने को क्या है? इसे कौन नहीं जानता?'

एक व्यक्ति ने प्रश्न किया, "साइमन तुम्हें याद है, हम लोग कैसे अपनी हैटें उड़ा उड़ा कर फेंका करते थे। वे उन दिनों कितने नीचे उड़ा करते थे!"

साइमन मशीन की तरफ झुक कर बोला, "साईडड......इधर पुछल्ले की ओर कैनवेस है।......या तो फाइटर है, या डाइव बाम्बर है। इसमें जमकर बैठना पड़ता है, नहीं तो सिर के उड़ जाने का खतरा रहता है।"

साइमन वायुयान चालक के प्रति बड़ा उदासीन हो रहा था। इससे शांगेरी कुछ रुष्ट हो गया। उसके बारे में कोई कुछ भी सोचे, पर था तो वह मेहमान ही।

उसने कहा, "मेरे, बेटे क्या तुम यह नहीं समझते कि तुम्हारे शब्द किसी को रुष्ट भी कर सकते हैं। यह अच्छा नहीं है, बेटा! तुम अभी युवक हो।"

शांगेरी समझ नहीं पा रहा था कि आखिर साकेन में रहने वाले युवक इतने अशिष्ट क्यों हो रहे हैं। शहर में रोशनी का होना, गाँव पर हवाई जहाज आदि का उड़ना उनके लिये साधारण बातें थीं। उस बूढ़े व्यक्ति के उच्चतम भावों को ठेस लगी थी। वह तो इस दिन को बड़ा भला समझता था।

उसने सोचा, "हां, आदमी अब बदल गये हैं.......। तुमको मेहमान के बारे में ऐसा नहीं कहना चाहिये। यह सभ्यता के विरुद्ध है।"

वह रुष्ट हो कर चला गया। और थोड़ी दूर पर जाकर बैठ गया। वहां से वह उस मशीन को देखता रहा।

नवयुवकों ने उसका मजाक उड़ाने का प्रयत्न किया परन्तु मुशाग ने उसी का पक्ष लिया। उसने कहा, "तुम लोगों को उस बूढ़े व्यक्ति को रुष्ट नहीं करना चाहिये। यह सच है कि मैं खुद कभी मोर्चे पर नहीं गया हूँ, लेकिन मैं अखबारों को हमेशा ध्यान से पढ़ता रहा हूँ। यह यू-टू कोई विशेष अच्छी मशीन नहीं है पर काम यह बड़ा अच्छा करती है। जब यह शत्रु पक्ष पर हमला करती थी तो इसकी सानी कोई नहीं रखता था।"

साकेनियनों को यह देखकर कम प्रसन्नता नहीं हुई कि उन तक इतना उपयोगी हवाई जहाज भेजा गया है.....। इतनी बढ़िया उपयोगी मशीन......जो दिन रात उड़ सकती थी.. ...बमबारी भी कर सकती थी और गुरिल्ला लड़ाकों को मदद भी कर सकती थी।

गांव वाले हवाई जहाज में इतने व्यस्त हो गये थे कि केसो के आगमन का उन्हें पता भी नहीं लगा। यात्रा से थका हुआ, दाढ़ी बढ़ी हुई, वह आया और गांव वालों को अभिवादन किया। वायुयान चालक को उपस्थित देखकर उसे तनिक भी अचम्भा नहीं हुआ।

उसने प्रश्न किया, "क्या आप मशीन ले आये हैं"

वायुयान चालक ने हवाई जहाज से उतारे गये कुछ बंडलों की ओर इशारा किया।

केसो ने कहा, "बहुत सुन्दर" अभी और भी ले आना होगा। मुझे यात्रा में पांच दिन लग गये। पर शायद इस हवाई जहाज को एक-दो घंटा ही लगा होगा।"

(२७)

अप्रैल के असाधारण गर्मी के दिनों में भी पहाड़ों में शाम ठण्डी हुआ करती है। यदि आप का मकान किसी ऊंची पहाड़ी पर है तो शाम को निकलते समय आप को चोटियों पर बर्फ दिखाई देगी। इन चोटियों से आने वाली हवा बर्फीली होती है और इसी कारण सब तरफ ठंढक छा जाती है।

रात को चाँद की रोशनी में पहाड़ियों पर बर्फ देख कर ही ठंढक लगने लगती है। सदैव बर्फ से ढंकी रहने वाली ये चोटियां अपनी गर्दन उठाये, सफेद टोपी लगाये हमेशा खड़ी रहती हैं। और उनके नीचे सर्वत्र अन्धकार और शान्त वातावरण का एकछत्र राज्य बना रहता है। मन के हजार विरोध करते रहने पर भी आप मजबूर हो जाते हैं कि जाकर चूल्हे में जलती आग की शरण लें।

येकप के घर में उसकी मित्र मंडली उपस्थित थी। सब लोग चूल्हे को घेरे हुये बैठे थे। येकप एक किनारे पर बैठा था और

केसो उससे थोड़ी दूर हट कर। नीना एक कोने में बैठी आंटा चाल रही थी। कान्सटैन्टिन केसो की कहानी सुन रहा था और रह रह कर आग जला देता था। ऐन्टन गूद्ल की छाया में बैठा था। केसो रह रह कर उसको देखने की कोशिशें करता था।

केसो विस्तारपूर्वक अपनी यात्रा का विवरण दे रहा था। बड़े भावपूर्ण ढंग से वह बता रहा था कि सेक्रेटरी ने कैसे उसका स्वागत किया था और उसे कितनी मदद करने का वादा किया था।

कान्सटैन्टिन ने पूछा, "तो उन्होंने तुम्हारा बहुत स्वागत किया था।"

केसो तो एक क्षण चुप रहा और फिर बोला, "हां, उसने मेरा खूब स्वागत किया बस यही कहा जा सकता है। इवानोविच ने एक मीटिंग बुलायी थी। पूरी समस्या पर बहस किया था और परीक्षा की थी। वे हमारी पहाड़ी के बारे में बड़े उत्सुक हैं। उन्होंने हम लोगों को राय दी कि क्या किया जाय और कैसे किया जाय। ये हिदायतें मास्को से, क्रेमलिन, से प्राप्त हुई हैं।"

उसने अपनी जेब से एक कागज़ निकाल कर आगे फैलाया, और पढ़कर सुनाया, "यह पार्टी की केन्द्रीय समिति के फैसले हैं।"

कान्सटैन्टिन ने कहा, "लाओ हम सब इसे पढ़ें।"

गूद्ल भी अपनी कुर्सी खींच कर केसो के पास बैठ गया और झुक कर कागज को देखने लगा। वह बोला, "यह प्लान है?"

सब तरफ शान्ति छा गई। केवल पत्तियों की सरसराहट और डालियों की खड़खड़ाहट की आवाज आ रही थी।

येकप अपनी छड़ी पर झुक गया। आग की लपटों से उसका

चेहरा चमकने लगा। उसके चेहरे पर से उसका हैट खिसक गया था।

गूदल ध्यानपूर्वक उसे पढ़ने लगा—जैसे कोई बच्चा परी की कहानी की किताब पढ़ रहा हो।

कान्सटैन्टिन पैर फैलाये बैठा था। नीना आटा चालना बन्द कर बेंच के एक किनारे पर बैठ गई।

डाड, अलन और डामे कंधे से कंधा मिलाये बैठें हाथ सेंक रहे थे। वे मस्ती से झूम रहे थे।

टोली के मुखिया की आवाज़ रसोंई घर में साफ आ रही थी। हर एक ओंठ दाबे सुनने का प्रयत्न कर रहा था। दुख यही था कि कोई फोटोग्राफर उस दृश्य का फोटो लेने के लिये उपस्थित नहीं था।

साकेन के इतिहास में ये क्षण सदैव अंकित रहने वाले थे। ऐसे क्षण, जो लाखों को उत्पादन में वृद्धि करने के लिये प्रेरित करें, कभी भूले नहीं जा सकते थे।

येकप चिल्ला उठा, "यह बहुत बड़ी चीज़ है। मेरे दोस्तों ······ यह एक महान उपहार है।"

केसो ने उस एलान को पढ़ कर अलग रख दिया।

उसने कहा, "हां, आश्चर्यजनक बातें हैं। नीचे मैदानों पर वे एक एकड़ में हज़ारों पूड गल्ला पैदा करते हैं। ······यदि हम उसका आधा पैदा कर सकें।"

गूदल बोला, "लालची·······।"

कान्सटैन्टिन ने कहा, "केसो, हम इस बार तकदीर आजमाने जा रहें हैं।"

गूदल बोला, "अवश्य ······ अवश्य।"

कान्सटैन्टिन, "तो अब इसके बारे में विस्तारपूर्वक बताओ। हम सबों को इसमें विशेष दिलचस्पी है।"

केसो ने सिगरेट जलाते हुये कहा, "बहुत अच्छा ......हमारी टोली की योजना यह है। हम तीन हेक्टर अपने जिम्मे ले रहे हैं। और उसमें हम ५०० पूड पैदा करने का फैसला करते हैं।"

अलन भाइयों ने लम्बी सांस ली। ऐन्टन ने खाँस कर गला साफ किया। गूदल खुश हो कर आग जलाने लग गया। चूल्हे से सुनहली चिनगारियां निकलने लगीं।

आग की ओर देखते हुये केसो ने कहा, "साथियों, मुख्य बात यहाँ है... ...मेरे ऊपर अलेक्जेन्डर इवानोविच का बड़ा प्रभाव पड़ा है। मुख्य चीज़ है......जोतना, बोना और निराना। हर चीज़ समय पर नियमानुसार होनी चाहिये। और जहां तक उस पहाड़ी का प्रश्न है, वह हमारी है। वही तो वास्तविक सम्पति है। इसे फास-फ़ोराइट कहते हैं। लोग इसके अच्छे दाम देकर विदेशों से मंगाते हैं। हम एक इंजन, एक दरने की मशीन और ईंधन मंगवा रहे हैं। इसको पीस कर खेतों में बिखेर दो और फिर देखो क्या होता है?......जब मैंने विशेषज्ञ की रिपोर्ट देखी, तो मुझे ऐसा लगा जैसे सिर से पहाड़ उतार कर रख दिया गया हो। मैंने इवानोविच से कहा कि यदि मेरा अनुमान सत्य न हुआ होता तो मैं कहीं का न रहा होता। लेकिन वह हँस दिया। उसने कहा था कि अब साकेन-निवासियों को पहिले जैसा नहीं रहना पड़ेगा, वह पहाड़ी हो या न हो। तुम्हारे यहां युद्ध के पहिले भी तो इतनी खराब हालत नहीं थी।"

गूदल ने समर्थन किया, "ठीक ही तो कहा था।"

केसो कहता रहा, "लेकिन सब ठीक ही साबित हुआ। हम

लोग फ़ासफ़ोराइट का इस्तेमाल करेंगे।……हम लोगों को वह बहुत सस्ती पड़ेगी। यहाँ पर अच्छी सड़क भी बनवाई जायेगी। तब हम लोग दूसरे गांव वालों की भी मदद कर सकेंगे। क्यों नहीं? ……लेकिन अभी तो हमी लोगों को सहायता की आवश्यकता है। क्यों कान्सटैन्टिन ठीक कह रहा हूँ न?"

कान्सटैन्टिन बोला, "हम लोग इस प्रश्न पर अपनी मीटिंग में बातें करेंगे। यही पहिला काम होगा। हम लोग सामूहिक कृषि बोर्ड की बैठक में भी इस पर विचार करेंगे। यह प्रश्न तो सबों से सम्बन्धित है।

केसो ने फिर बोलना शुरू किया, "लेकिन कान्सटैन्टिन, इस पर तो हम बाद में भी सोच सकते हैं।……निकोला के बारे में…… शहर में तो लोग उसे बड़ा उपयुक्त समझते हैं और उसके बारे में ऊँची राय रखते हैं।"

कान्सटैन्टिन ने खांसते हुये कहा, "मैं समझ रहा हूँ, केसो।"

केसो ने भी इशारों से ही निकोला की अपेक्षा अधिक चतुर व्यक्ति के अध्यक्ष बनाये जाने के बारे में राय दी।

केसो पहिले ही जैसे भाव में बोलता रहा, "पहाड़ी को चूरा बना देना होगा। और तब उस चूरे की मदद से हम जमीन को उपजाऊ बनायेंगे। विज्ञान अच्छी फसल के पैदा होने की गारंटी करता है।"

डामे ने अपनी मूछों पर ताव दिया और खांस कर बोला, "बड़ी अच्छी योजना है। हम लोग मेहनत करने से कुछ उठा नहीं रक्खेंगे। यह तो बारूद के आविष्कार के समान है। हम लोगों को शहर वालों को इतनी मदद के लिये धन्यवाद देना चाहिये।"

येकप अपनी मचिया पर से उछल पड़ा। वह बोला, "हम बूढ़े देखेंगे कि तुम नौजवान क्या क्या कर सकते हो। ..... हम लोग तो अब बुड्ढे हो गये।"

ऐन्टन बोला, "नहीं ऐसा नहीं है। हम लोगों को भी काम करना होगा। हम लोग बैठे नहीं रह सकते।"

केसो ने उसकी ओर देखा। उसकी दृष्टि बड़ी तेज थी। ऐन्टन घबड़ा गया। उसने सोचा, "यह सब कुछ जानता है। राशित को वह मन ही मन कोसने लगा।"

कान्सटैन्टिन बोला, 'केसो, कल पार्टी की मीटिंग में हम तुम्हारी रिपोर्ट पर विचार करेंगे। हम उस एलान और फैसलों को पढ़ेंगे। पहाड़ी अत्यन्त उपयोगी है, यह तो अब साफ़ ही हो गया। हम लोग आदमियों को काम में लगा देंगे और गाड़ियों का भी प्रबन्ध करेंगे। गांव की सोवियत भी हमें मदद देगी।... .."

कान्सटैन्टिन उठ खड़ा हुआ।

येकप ने आश्चर्य चकित हो कर पूछा, "कहाँ चले जा रहे हो? (लड़की की ओर घूम कर) आओ बेटी दस्तरखान बिछायें।

जब घर का स्वामी स्त्रियों से इस प्रकार बोलता है तो मेहमान अपने स्थान पर फिर से बैठ जाते हैं। वे आपस में बातें करने लगते हैं। थोड़ा समय व्यतीत होता है और मेज पर खाना लग जाता है। उस समय स्वामी का यह कर्तव्य होता है कि मेहमानों की खातिर करे। येकप भी बार बार नये विषय के बारे में सोचते हुये हाँ, हाँ, कहता जाता था।

इसी क्षण वोडका के गिलास आ गये और सबों ने मदिरापान किया।

सभी मेहमान काफ़ी देर तक बैठे रहे। जब वे जाने के लिये

बाहर निकले तो चाँद आकाश में मुस्करा रहा था। उस समय की छटा से किसका हृदय न खिल उठता ? झाड़ियों में एक चिड़िया गा उठी। बड़ी अजीब हालत थी ......इतनी बड़ी दुनिया और इतनी छोटी आवाज, फिर भी इतनी स्पष्ट !

केसो बोला, "वह गा रही है।"

मेहमान और घर वाले सभी चिड़िये का गाना सुनने लगे और चाँद सारी दुनिया को अपनी चाँदनी में डुबोने लगा।

यात्रा और बातचीत से थका हुआ केसो बिस्तर पर जाने की तैयारी करने लगा।

कमरे के दरवाजे पर ही उसे अपनी बहिन दिखाई पड़ी। वह कुछ परेशान दिख रही थी। उसने उसे कंधे पर प्यार से थपथपाया।

उसने प्रश्न किया, "क्या मामला है ?"

वह बोली, "उसको दोष नहीं दिया जा सकता। मैं उसके बारे में सब कुछ जानती हूँ।"

केसो बिस्तर पर बैठ गया और अपनी टांगें फैला लीं। उसने कहा, "तुम क्या जानती हो ? लड़कियों का अपहरण उनकी इच्छा के बगैर नहीं हो सकता। फिर भी तुम इस के बारे में क्या कहती हो ? उसने अपने को अपहृत क्यों होने दिया ? किसने उसका अपहरण किया ?"

नीना सीधी खड़ी हो गयी और उसका इरादा केसो के आगे झुकने का नहीं था।

नीना ने भाई को घूरते हुये कहा, "वह चिल्ला रही थी, रो रही थी। वह अब भी चिल्ला रही है। हँसो नहीं.......वह भली लड़की है। यह सब राशित की बदमाशी है।"

"अच्छा, मैं क्या करूं ?"

"मैं चाहता हूँ कि तुम उससे बातें करो।"

"खुशी के साथ।"

"मजाक मत करो। मैं गम्भीरतापूर्वक कह रही हूँ।"

"तो क्या मैं गम्भीर नहीं हूँ ?"

"और तुम अपने को आदमी कहते हो ? तुम दूसरों को पिछड़ा हुआ कहते हो, और स्वयं इतने पिछड़ेपन की बातें करते हो ?"

बहिन इतना डांटे-फटकारेगी, इसकी उसे आशा नहीं थी। उसे वह हमेशा बच्ची ही समझता रहा है।

उसने कहा, "अच्छा, बोलती रहो।"

"मैं कोई दूसरी बात नहीं कह रही हूँ। क्या तुम समझते हो कि कामा अपना रास्ता ढूँढ़ कर नहीं आ सकती ? सोचो तुम्हारे बगैर वह क्या करेगी ? मैं जानती हूँ, यदि तुम उसे छोड़ दोगे तो वह वापस नहीं लौटेगी। अब समय बदल गया है।"

"मैं समझता हूँ।"

"यदि एक बेइमान ने एक लड़की की बेइज्जती की है, तो तुम्हारा ख्याल है दूसरे को भी ऐसा ही करना चाहिये ?"

"एक और बदमाश ?"

"नहीं, दूसरा नहीं, यदि उसमें बुद्धिमानी थोड़ी भी शेष रही हो।"

"मैं नहीं जानता............अच्छा ऐसी बात है मेरी बहिन ?"

केसो मन ही मन बहिन की तारीफ़ कर रहा था और उसके क्रोधित चेहरे को देख रहा था।

नीना दूसरे कमरे में चली गई। वह फिर वापस आई और बोली, "हम अब पहिले जैसे नहीं रहे। अब हम मुर्गियों जैसी नहीं हैं कि जब जी चाहे गर्दन मरोड़ दो।" इतना कह कर वह दरवाजा बन्द करती हुई चली गई।

केसो यह सोचते हुये कि जिस काम के लिये वह शहर गया था पूरा हो गया, संतुष्ट होकर सो गया। फिर भी किसी कारण-वश वह चिन्तित था और खुशी का पूरा मजा नहीं पा रहा था।

वह दांत कटकटाते हुये बोला, "गोली मारो राशित को।" इतना कह कर उसने कम्बल खींच कर ओढ़ लिया।

(२८)

एक महीने पहिले मौसम जितना अच्छा था, वैसा ही आज कल भी था। मौसम पहिले से अधिक गरम था। जल का शीशे जैसा रंग बड़ा ही आकर्षक था। थोड़े ही दिन में वह झरना सबों का प्रिय स्थान बन जायेगा। जून की चांदनी रात में, उस पहाड़ी में न मालूम कितने युगल प्रेमी अपना प्रेम प्रदर्शन कर रहे थे।

आज इतवार था। केसो और कामा पत्थर पर एक दूसरे की ओर मुंह किये बैठे थे। वह सफेद सिल्क का फ्राक पहिने थी उसके सिर पर एक नीला रूमाल बंधा हुआ था। वह हमेशा अपना सब से बढ़िया जूता और मोजा पहिनती थी। इस वेष में वह बहुत ही सुन्दर दिख रही थी।

कामा अपने अपहरण के बारे में बता रही थी। उस दिन उसने दिखा दिया था कि साकेन की लड़कियां कैसी होती हैं।

केसो बालू में अंगुलियों से रेखायें खींच रहा था।

उसने पूछा, "बस इतनी ही है ?"

कामा ने उत्तर दिया, "बस, इतनी ही ।"

फिर सन्नाटा छा गया । तब उसने भरे स्वर में कहा, "मैं जा रही हूँ । बहुत जल्दी........।"

वह उसकी ओर तेज़ी से मुड़ा । उसने कामा की दुखी आंखों को देखा । उसके अन्दर का प्रथम भाव था कि वह उसे पुचकारे, उसे सांत्वना दे और उसे लिपटा ले । उसे समझना चाहिये कि मैं राशित नहीं हूं । नहीं कामा अच्छी लड़की है, बहुत भली लड़की है । लेकिन वह जानना चाहता था कि उसे और क्या कहना है ?

उसने पूछा, "कामा, तुम कहां जाना चाहती हो ?"

कामा ने उत्तर दिया, "शहर को ।"

वह उसे घूर घूर कर देखने लगा ।

कामा ने कहा, "क्या मैं नहीं जा सकती ? क्या तुम समझते हो कि तुम्ही अकेले जा सकते हो और कोई नहीं ? मैं वहां जा कर पढ़ूंगी ।"

इस विचार से वह अत्यन्त प्रसन्न हो गई । साकेन की नीली घाटी को देखते हुये वह बोली, "मैं जाऊंगी और पढ़ूंगी । वहां बहुत से स्कूल हैं । लोग मेरी मदद करेंगे । मुझे किसी चीज़ का डर नहीं है । हां, मैं तीन वर्ष बाद, एक बार तुम लोगों को देखने अवश्य आऊंगी ।" रोती हुई वह चल पड़ी । वह टेढ़े मेढ़े रास्तों से हो कर जाने लगी । अब वह चोटी पर थी । दूसरे ही क्षण वह झाड़ियों में ही खो जाने वाली थी ।

केसो उठ खड़ा हुआ ।

लेकिन अब वह उसके पहुँच के बाहर थी । उसका सफ़ेद फ्राक दूर हवा में उड़ रहा था ।

केसो वहां अकेला रह गया था।........अकेला अपने विचारों में ... . अकेला, इस बड़ी दुनिया में। वह उसी चट्टान पर उसी झरने के किनारे बैठा था, जिस पर वह एक महीने पहिले बैठा था। उसके ऊपर बसन्त का मनोरम आकाश था। गौगा और क्लिच की पहाड़ियां धुन्ध में छिप गई थीं। ऐसा लगता था जैसे किसी ने उन चोटियों पर गीली लकड़ियां सुलगा कर रख दी हों। नीचे साकेन नदी हरहराती हुई बह रही थी। दाहिनी ओर 'सिलवर मीडो' था और बांई ओर नट गली और आम्बा। साकेन की करीब करीब हर झोपड़ी धुन्ध से ढँक गई थी। और यदि बर्फ से ढंके हुये पहाड़ हिल सकते और नाच सकते तो नीले आकाश की पृष्ठभूमि में वह दृश्य बहुत सुन्दर दिखाई देता।

केसो उठ खड़ा हुआ और टेढ़े मेढ़े रास्तों पर चल दिया।

अप्रैल खत्म हो रहा था। गर्म दिन आ गये थे। सड़कों पर धूल उड़ने लग गई थी। हवा में एक अजीब मादकता थी। चिड़ियां चहचहाने लगी थीं। गायें घास के मैदान में चरा करती थीं और सुबह होते ही मुर्गे बांग देने लगते थे।

गांव वाले बड़े तड़के खेतों पर काम करने चले जाते थे। गांव की सड़कों पर गाड़ियां खड़ खड़ाते हुये चलने लगतीं थी। उनकी आवाज़ दूर घाटियों तक में गूंजा करती थी।

हां, मैं वसन्त के साकेन को प्यार करता हूँ। मैं इसे विशेष रूप से प्यार करता हूँ—शायद बसन्त में वह अत्यन्त सुन्दर हो जाता था। ऐसे समय में जब थोड़ी धूप निकली हुई हो गांव की सड़कों पर घूमना तो अत्यन्त आनन्द प्रद होता है और यदि नदी के किनारे चला जाय तो और भी अधिक आनन्द आता है।

मैं साकेन के किनारे बैठा था। इस स्थान पर साकेन नदी वक्र हंस की गर्दन के समान थी। साकेन के किनारे नीचे और ढालू थे। पत्थर के बड़े बड़े टुकड़े थे। पैरों को हिलाने के साथ साथ मिट्टी खिसक खिसक कर गिरने लगती थी।

नीचे, पानी भंवरें काट काट कर बहता था और किनारों को भी काटता चलता था। दूसरे किनारे पर पूर्ण शान्ति थी। वह किनारा और भी नीचा और बलुआ था। नदी के किनारे के बाद ही पाइन के पेड़ लगे थे। पाइन के जंगलों के बाद ही ऊँची पहाड़ियां शुरू हो जाती थीं। बीस कदम दूर पर ही एक शान्त झरना है। एक छोटा लड़का मछलियां फंसा रहा था। वह शान्त और दत्तचित्त, कांटा लिये बैठा था। कभी कभी वह फुर्ती से कांटा निकालता था, पर बहुधा वह खाली ही होता था। लड़का फिर कांटे को पानी में डाल चुप हो कर बैठ जाता था।

उसके बगल में ही शांगेरी कान्बा बैठा था। वह शायद सो गया था। लेकिन नहीं मैं गलती कर रहा हूँ। वह मेरा तस्वीर बनाना देख रहा था क्यों कि चुपके से वह मेरे पीछे आकर खड़ा हो गया था।

मैं रंग देने के लिये आखिरी कूंचियां फेर रहा था। तस्वीर में टेढ़ी मेढ़ी साकेन नदी को चित्रित किया गया था। उसमें साकेन के सोवियत और स्कूल की इमारतों को भी दिखाया गया था। दूर के पहाड़ और बादल भी बनाये गये थे। मैंने शांगेरी की सांसों का अनुभव किया और देखा, वह बहुत ध्यानपूर्वक चित्र को देख रहा था। उसकी आखों में उत्सुकता भरी थी।

शांगेरी बोला, "मेरे बेटे! तुम्हारी हैट बड़ी सुन्दर है। लोगों का कहना है कि तुम्हारे पास बड़ा अच्छा हुड भी है।"

मैं बोला, "हां, मेरे पास है तो।"

"क्यों अलेक्जेन्डर, तुम्हारे पास पहाड़ियों का लबादा भी है?"

"हां मेरे पास कथर्डानियन कोट भी है। वह मेरा अपना है। मैंने ही खरीदा था।"

"लाओ, देखूं तो।"

उसने उसे हाथों में लेकर देखा। उलट पलट कर देखते हुये उसने कहा, 'यह सिल्क है ... .. शुद्ध सिल्क?"

"हां, यह सिल्क है।"

अपने पाइप को सुलगाते हुये उसने कहा, "अच्छे लड़के, ... मुझे तुम्हारी हैट बहुत पसन्द है। लोग कहते हैं कि इसे पढ़े लिखे विद्वान व्यक्ति पहिनते हैं। . तो अब हमारे साकेन के एक युवक ने भी इसे पहिन रक्खा है।"

मेरी तस्वीर से उसे संतोष नहीं होता है। इसी कारण वह उसके बारे में ज्यादा नहीं कहता। वह बोला, "बहुत सुन्दर लेकिन इसमें आदमी क्यों नहीं बनाये गये हैं? तुम आदमियों के बिना कैसे काम चला सकते हो? .... यहां देखो, बाग़ है। गांव वालों ने ही इसे लगाया था। वहां स्कूल है। गांव वालों ही ने उसे बनाया था। क्या तुम्हें जन साधारण पसन्द नहीं हैं?"

"शांगेरी, कौन कहता है कि मुझे साधारण व्यक्ति पसन्द नहीं हैं?"

"तो फिर यहां पर बनाते क्यों नहीं?" नदी के किनारों को छूता हुआ वह बोला।

"मैं बनाऊँगा, मैं वादा करता हूँ।"

वह वापस चला गया। उसका पोता मछलियां पकड़ने में

सफल हो गया था। बुड्ढा शांगेरी अपनी छड़ी टेकते हुये उस संकरे रास्ते पर आगे बढ़ने लगा।

अप्रैल की आखिरी तारीख को सूर्य आकाश में सब से ऊँचा था। आकाश नीला था, नीचे साकेन भी निरन्तर बह रही थी। दोनों किनारों पर हरे भरे खेत थे। नदी चांदी के फीते की भांति बह रही थी। मैं तस्वीर बनाना छोड़ कर नदी की ओर देखने लगा। मैं अपने साकेनियन मित्रों के बारे में सोचने लगा।

केसो और कामा से हम करीब एक महीने पहिले मिले थे। बसन्त शुरू हो रहा था। एक महीना अधिक नहीं होता। लेकिन थोड़ा भी नहीं होता। साकेन के लिये अप्रैल का महीना साधारण नहीं था।

मैंने तस्वीर को उठाया और साकेन के सुन्दर दृश्यों में मुझे केसो दिखलाई दिया। वह पहाड़ियों के सामने खड़ा था और शायद अपनी ताकत आज़मा रहा था। उस युवक को कोई परास्त नहीं कर सकता, उसकी हिम्मत कोई नहीं तोड़ सकता। शायद वह युवक डींगें ही मारता था जब वह एक हजार पूड की बातें करता था। लेकिन यदि यह कम कुछ भी होता तब भी आश्चर्य-जनक होता। मैं धीरे धीरे चलने वाले कान्सटैन्टिन को भी देख रहा था।...... और गूदूल ? वह किसी से पिछड़ नहीं सकता। और स्मेल ? उसे मैं शहर तक जाता देख रहा हूँ। वहाँ एक इमारत है.......जिस पर एक साइन बोर्ड लगा था जिसमें लिखा था, "इलेक्ट्रिकल एंजीनियरिंग इन्सटीच्यूट।" और कामा....... कामा का क्या हुआ ? क्या आप मुझ पर विश्वास करेंगे यदि मैं यह कहूँ कि भाग्य ने दोनों को अलग कर दिया था ? नहीं, नहीं ! यह सच नहीं है।.....मुझे यह भी विश्वास है कि नीना

बहुत आगे बढ़ेगी क्यों कि वह बहुत मेहनती है। और राशिद... ...उसकी क्या बात करें ? वह स्वयं ही लौट आयेगा !

अप्रैल के महीने का इतना प्रभाव पड़ने का शायद एक कारण यह भी है कि मैं स्वयं साकेनियन हूँ। पर शायद यही प्रेरणा कि मैं साकेन के बारे में कुछ लिखूं, मैंने कलम और स्याही का प्रयोग किया था। ....और अब नदी की ओर देखते हुये मुझे यह इच्छा होती है कि मैं साकेन में नए बसन्त की कहानी लिख डालूं।.....विशेष तौर से उन घटनाओं की जिन्हें मैंने स्वयं अपनी आखों से देखा था।

तो अब फिर वसन्त आ रहा है और साकेन फल फूल रहा है।

